सोनिया गाँधी

विचार दृष्टि

किरण बेदी

वर्ष : 6 अंक : 20 जुलाई-सितम्बर 2004 15 रुपए

सोमनाथ चटर्जी

डॉ मनमोहन सिंह

ई.के. नयनार

नई सरकार की प्राथमिकताएँ

सरकार सांसदों को भ्रष्ट न करे

सूचना प्रौद्योगिकी से साहित्य को कोई खतरा नहीं

महिलाएं भी देश का उद्धार कर सकती हैं

अंतरात्मा की आवाज़

डॉ मोहन सिंह

Solutions Point

SOLUTIONS IN:

- Computer Assembling
- Maintenance
- Laptop Repair
- AMC
- Netowrking
- Web & Graphics Designing
- Software Development

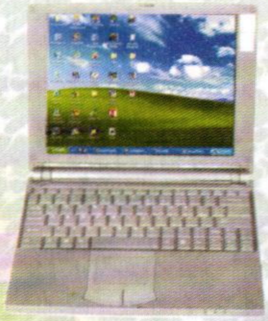

SOLUTIONS POINT
Making IT easy

SAMSUNG DIGITall
Everyone's Invited™

intel®
TDK®
TOSHIBA
COMPAQ
IBM
Canon®
hp HEWLETT PACKARD
mantra Online
SONY®
PIONEER®
intel inside pentium® 4 PROCESSOR

Franchise enquiry solicited from all over India

Contact: Mr Sudhir Ranjan

Head Office : U-207, Shakarpur, Vikas Marg, Delhi-92
Tel/Fax : 011-22059410, 22530652
Mobile : 9811281443, 9899237803
E-mail : Solutionspoint@hotmail.com

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। संपादक-सिद्धेश्वर

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष-6 जुलाई-सितंबर, 2004 अंक-20

संपादक व प्रकाशक:

सिद्धेश्वर

संपादकीय सलाहकार:गिरीशचंद्र श्रीवास्तव

प्रबंध संपादक : सुधीर रंजन

सहा.संपादक : मनोज कुमार

संपादन सहायक : अंजलि

साज-सज्जा: दिलीप सिन्हा एवं सुधांशु

शब्द संयोजन : सोलूसंस प्वायंट

(अमित बहल, अनुज कुमार)

प्रकाशकीय कार्यालय:

'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू०-207

शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

दूरभाष: (011) 22530652, 22059410

मोबाईल : 9811281443,9899238703

फैक्स: (011)22530652

E-mail: vichardrishti@hotmail.com

पटना कार्यालय:

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

दूरभाष: 0612-2228519

ब्यूरो प्रमुख:

मुम्बई: वीरेन्द्र याज्ञिक ☎ 28897962

कोलकाता: जितेन्द्र धीर ☎ 24692624

चेन्नई: डॉ० मधु धवन ☎26262778

तिरूवनंतपुरम:डॉ०रति सक्सेना ☎2446243

बैंगलूर:पी०एस०चन्द्रशेखर ☎26568867

हैदराबाद: डॉ० ऋषभदेव शर्मा☎27036929

जयपुर: डॉ० सत्येंद्र चतुर्वेदी☎ 2225676

अहमदाबाद: वीरेंद्र सिंह ठाकुर☎22870167

भोपाल: श्रीमती निर्मला जोशी☎2465509

प्रतिनिधि:

लखनऊ: प्रो. पारसनाथ श्रीवास्तव,

ग्वालियर: डॉ. महेन्द्र भटनागर

सतना: डॉ. राम सिया सिंह पटेल

मुद्रक: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड

एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फेज-2, नई दिल्ली-20

मूल्य: एक प्रति 15 रुपये

द्विवार्षिक: 100 रुपये

आजीवन सदस्य: 1000रुपये

विदेश में:

एक प्रति:US $3, द्विवार्षिक:US $20,

आजीवन: US $250

(पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं)

रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना /2

संपादकीय /4

विचार प्रवाह :

सूचना प्रौद्योगिकी को साहित्य से कोई खतरा नहीं-डॉ अमर सिंह वधान /6

दृष्टि :

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर /9
डॉ. परमानंद दोषी

साहित्य :

जोगी दादा-कहानी-गिरीशचंद्र श्रीवास्तव /11

साहित्य समाचार :

राष्ट्रभाषा हिंदी: दशा और दिशा /16
डॉ. डी. आर. ब्रह्मचारी

काव्य कुंज: /18

श्रीकांत व्यास, परमानंद झा प्रभाकर, रीतेश कुमार, आनंद तिवारी पौराणिक, डॉ. जसवंत सिंह, डॉ. रामलखन राय, राजेश्वर सिंह,

साहित्य समाचार :

हिंदी कार्यशाला का आयोजन, 'समय के सामने' 'पुस्तक एवं हिंदी गज़ल की वर्तमान दशा और दिशा' पर संगोष्ठियाँ /20

दक्षिण दृष्टि:

हैदराबाद की चिट्ठी /21

आधी आबादी :

मूल्य संकट और स्त्री की भूमिका
कविता वाचक्नवी /23

महिलाएं भी देश का उद्धार कर सकती है-डॉ० श्याम सुंदर घोष /25

व्यंग्य :

जमाना है फ़िदा जल्व-शू-पर /27

डॉ. राजनारायण राय

जमुना दास की कुर्सी /29
डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव

बिहार :

बिहार में भ्रष्टाचार और चापलूसी का राज कब तक?-अखिलेश /33

राजनीतिक नजरिया

स्वतंत्र भारत के तत्कालीन नेतृत्व की सबसे भयानक भूल -डॉ. जगपाल सिंह, संजीव मलिक, दिनेश पुन्डीर/36

सरकार सांसद और विधायकों को भ्रष्ट न करे /37
डॉ० श्याम सुंदर घोष

अंतरात्मा की आवाज- सिद्धेश्वर /39

समीक्षा

हाइकु एवं सेन्र्यू संग्रह: एक दृष्टि /40
डॉ० मधु धवन

शख्सियत:

शब्द-शास्त्र के बृहस्पति:आचार्य सत्यव्रत शर्मा "सुजन"
डॉ. मेधाव्रत शर्मा /41

गतिविधियाँ:

'सुर नहीं सुरीले' का लोकार्पण /44

राष्ट्रीयता पर पुस्तकों का प्रकाशन /45

सम्मान: /49

सिडनी शांति पुरस्कार अरुंधती को

किरण बेदी संयुक्त राष्ट्र पदक से सम्मानित

संस्मरण: /51

सामाजिक सरोकारों से जुडे डॉ. मोहन सिंह-सिद्धेश्वर

श्रद्धांजलि: /54

डॉ मोहन सिंह का महाप्रयाण

साभार-स्वीकार: /55

केंद्रीय सरकार

अंतरात्मा की आवाज

सम्मान

संस्मरण

श्रद्धांजलि

पत्रिका-परामर्शी

❑ पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह'शशि'❑प्रो .रामबुझावन सिंह ❑श्री जियालाल आर्य ❑डॉ० बालशौरि रेड्डी ❑डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ❑श्री बाँकेनन्दन प्र. सिन्हा ❑प्रो० धर्मेन्द्र नाथ 'अमन'❑डॉ० एल. एन. शर्मा

रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

समीक्षा उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक

मेरा यह दुर्भाग्य है कि इतनी उत्कृष्ट पत्रिका का दर्शन मैं काफी विलंब से कर रहा हूँ। यह पत्रिका स्वयं में निश्चय ही परिपूर्ण है। इसका संपादकीय विचारोत्तेजक, सारगर्भित तथा चिंतन के नये आयाम लिए हुए है। अन्य सामग्रियाँ भी प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से डॉ. मणिशंकर प्रसाद का आलेख 'मुद्दों की तलाश: अयोध्या विवाद', श्री नासिर अली 'नदीम' की प्रस्तुति 'ग़ज़ल शिल्प ज्ञान', डॉ. चन्द्रिका ठाकुर की रचना 'निराला का क्रांतिकारी तेवर', श्री कृष्ण कुमार राय की कहानी 'दरार', डॉ. देवेन्द्र आर्य की कविता 'एक बार गाकर देखूंगा' तथा डॉ. भगवतशरण अग्रवाल की चिंतनपरक प्रस्तुति निश्चय ही उल्लेखनीय हैं। इसीलिए उन्हें बार-बार पढ़ने पर भी अतृप्ति बनी रहती है। पुस्तक समीक्षा उपयोगी तथा ज्ञानवर्धक है। डॉ. राष्ट्रबंधु के द्वारा श्री सत्यदेव नारायण का लिया गया साक्षात्कार भी उच्च कोटि का है। कुल मिलाकर प्रस्तुत अंक अपने में अनंत संभावनाएं संजोए हुए है। आप स्वयं स्थापित रचनाकार हैं। इसलिए हिंदी के शीर्षस्थ साहित्यकारों का सारस्वत सहयोग आपको अनायास ही उपलब्ध है। यह तथ्य स्वयं में इस बात का प्रमाण है कि 'विचार दृष्टि' का भविष्य नितांत उज्ज्वल है। आपकी संपादन कला को प्रणाम करते हुए मुझे अपूर्व गौरव का अनुभव हो रहा है।

-डॉ. गणेशदत्त सारस्वत, सीतापुर

रचनाओं पर आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत है, क्योंकि वे ही हमारे संबल हैं। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं। हमें इस पते पर लिखें--

पाठकीय पन्ना, 'विचार दृष्टि' यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

निष्पक्ष विचारों से ओत-प्रोत

आप पत्रिका सज-धज के साथ निकालते जा रहे हैं, यह अपने-आप में बहुत बड़े साहस का काम करने का अहसास कराता है। सचमुच, साहित्य का शौक जिसे है वह हर हाल में साहित्य सेवा करता ही रहेगा। आप तो राजनीति में भी खासी दिलचस्पी रखते हैं। आपकी यह सक्रियता आपको जिंदादिल बनाये रखेगी हमेशा-हमेशा के लिए। चुनाव विशेषांक होने के कारण राजनीति की गंध ज्यादा है पर साहित्य भी कम भागीदारी के साथ समाविष्ट नहीं है।

संपादकीय आपके निष्पक्ष विचारों से ओत-प्रोत है। डॉ. मणिशंकर प्रसाद का आलेख, 'मुद्दों की तलाश : अयोध्या विवाद' बेहद अच्छा लगा। कहानी 'पगली' भी मन पर विशेष प्रभाव डालती है। 'नया भारत नया सवेरा', 'राजनेता, चुनाव और मतदाता' अच्छा विचार प्रस्तुत करता है। डॉ. देवेंद्र आर्य की कविता ने मन को भीतर तक छूने की कोशिश की। सत्यदेव ना. सिंहा एवं लमगोड़ा पर श्रद्धांजलि संस्मरण देकर आपने साहित्यकारों के प्रति अपना कर्त्तव्यबोध दर्शाया है, जो उचित है।

-राजनारायण चौधरी, हाजीपुर

वैचारिक प्रतिबद्धता

''विचार दृष्टि'' अप्रैल-जून 2004 अंक प्राप्त हुआ। संपादकीय में भारतीय राजनीतिक परिदृश्य का बेबाक मूल्यांकन-विश्लेषण है। राजनीतिक दलों के गणित एवं राजनीतिज्ञों की ज्यामिति के निकष पर जिन अनछुए सापेक्ष तथ्यों को उजागर किया गया है, वे संपादक की निर्भीकता एवं वैचारिक पारदर्शिता के साक्ष्य हैं। डॉ. मणि शंकर प्रसाद, डॉ. रवीन्द्र कुमार वर्मा, सिद्धेश्वर, डॉ. देवेन्द्र आर्य, यू. सी. अग्रवाल, उदित राज व मस्तराम कपूर के लेखों में भारतीय राजनीति की मूल्यवत्ता, इसके बनते-बिगड़ते समीकरणों तथा मूल्यों के पुनर्मूल्यांकन को गहराई से रेखांकित किया गया है। 'ग़ज़ल शिल्प ज्ञान', 'निराला का क्रांतिकारी तेवर', 'सत्यदेव नारायण' और 'बाबूराम सिंह लमगोड़ा' रचनाओं में शोध दृष्टि, चिंतन तथा व्यक्तित्व-विश्लेषण का अद्भुत त्रिकोण बना है। ये लेख साबित करते हैं कि लेखकारों के पास आंतरिक ऊर्जा, साहित्य सरोकार धर्मिता और रचनात्मक प्रतिबद्धता का टिकाऊ समुच्चय है। 'दरार' और 'पगली' कहानियाँ सामाजिक तस्वीर की परिक्रमा करती हुई नया सकारात्मक माहौल तैयार करती हैं। कलेवर में नवीनता है तो अभिव्यक्ति में वैविध्यता है। इसीलिए ये कहानियाँ मन को बांधे रखती हैं। कविताओं में बुनावट है, लेकिन बनावटीपन नहीं। शिल्प का खुला समागम है, सामंजस्य है और इनमें है स्वाभाविक सहजता।

-डॉ. अमर सिंह वधान,चेन्नई

चर्चाएं प्रासंगिक

विभिन्न विधाओं की साहित्यिक सामग्रियों के साथ-साथ सामाजिक एवं राजनीतिक विषयों पर भी प्रासंगिक चर्चाएं 'विचार दृष्टि' की विशेषताएं हैं। पत्रिका में प्रकाशित संपादकीय-'मौजूदा चुनाव की चुनौतियां', 'मुद्दों की तलाश: अयोध्या विवाद', 'राजनेता, चुनाव और मतदाता', 'नया भारत: नया सबेरा', '14 वीं लोकसभा: किसे वोट दें' आदि उस विचार से विशेषत: पठनीय लेख हैं। संप्रति तिलक-दहेज का तांडव समाज की ज्वलंत समस्या है जिसके विरूद्ध 'विचार दृष्टि' का ध्यान आकृष्ट होना आवश्यक है। अच्छे कागज पर समुद्रित और सुसंपादित इस त्रैमासिकी के सुदीर्घ जीवन की शुभकामना है।

-डॉ. डोमन साहु 'समीर', टी. विलासी. देवघर, झारखंड-814117

हर स्तंभ स्तरीय

'विचार दृष्टि' का जन.-मार्च,04 अंक पठनीय सामग्री से समृद्ध होने के कारण अत्यंत उपयोगी है। पठनीय सामग्री का वैविध्य और बाल विकास पर केंद्रीयता ने इस अंक को अतिरिक्त विशेषता से अलंकृत कर दिया है। इस अंक का आवरण पृष्ठ नयनाभिराम एवं वात्सल्यपूर्ण है। 'समाज' स्तंभ के अंतर्गत संगीता

गोयल का आलेख भारत के भ्रष्ट माहौल में उम्मीद की किरण जगाता है? अब्राहम लिंकन का "ऐसे सिखाइए अपने बच्चे को" पत्र हर विद्यालय के सूचना-पट्ट पर रहना चाहिए। पत्र का हर वाक्य बच्चों के जीवन-निर्माण के लिए अत्यंत प्रेरक है। तसलीमा नसरीन की कविता "मृत्यु दंड" में 'राज्य कुंज' स्तंभ से गरिमा में वृद्धि कर दी है। इस अंक का हर स्तंभ स्तरीय सामग्री लेकर उपस्थित है और पाठकों के ज्ञान-क्षितिज को उद्‌भासित करता है। साहित्य-समाचार में हाल में पटना में संपन्न लघुकथा सम्मेलन के उल्लेख का अभाव खटकता है। और अंत में आपके संपादकीय में बचपन बचाने की चिंता सबकी चिंता है। ऐसी उत्तम प्रस्तुति के लिए धन्यवाद।

प्रो. लखन लाल सिंह "आरोही", खैरा

अंक ममस्तोसकर

समकालीन राजनीति एवं साहित्य की समानांतर स्थिति-परिस्थिति के जिज्ञासु पाठकों के लिए 'विचार-दृष्टि' का यह अंक ममस्तोसकर होगा, इसमें संदेह नहीं। राजनीति का हमकदम होकर चलनेवाला साहित्य ही आज का काम्य है। इस दृष्टि से 'विचार-दृष्टि' ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है और इस प्रकार के विज्ञ साहित्यकारों के सहयोग प्राप्त करने में भी यह पत्रिका सफल है। यदि यह अपनी अर्वाचीनता में प्राचीनता का अक्स भी कायम रख सके तो फिर तो अधिक पत्रिका की इयत्ता आयत्त करेगी, ऐसी आशा है।

डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव, पटना

अंक पठनीय

बाबूराम सिंह लमगोड़ा एवं सत्यदेव नारायण पर लिखे आलेख उपयोगी हैं। इन लेखों से इन दोनों वरिष्ठ साहित्यकारों के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। इनके अतिरिक्त डॉ. चंद्रिका ठाकुर का आलेख निराला का क्रांतिकारी तेवर, ग़ज़ल शिल्प ज्ञान (नासिर अलीनदीम), सुधा गुप्ता की कहानी 'पगली' तथा कृष्णकुमार राज की कहानी 'दरार' भी ध्यान खींचने में समर्थ है। कुल मिलाकर मैं यह कहने की स्थिति में हूँ कि यह अंक पठनीय है।

-डॉ. सतीशराज पुष्करणा, मेरठ

पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

सारगर्भित सामग्रियों व कुशल संपादन युक्त यह पत्रिका वास्तव में एक पूर्ण साहित्यिक पत्रिका है। स्वस्थ वैचारिक ऊर्जा समाज व देश को ससंस्कारित कर सकती है, इस दिशा में आपका प्रयास स्तुत्य है।

-आनन्द तिवारी पौराणिक, छत्तीसगढ़

प्रबुद्धजनों को पांचवा प्रहरी बनना होगा

'विचार दृष्टि' के 19वें अंक में संपादक बने अपनी बेबाक टिप्पणी से देश के प्रबुद्धजनों को लोकतंत्र के पांचवें प्रहरी बनने की सलाह देकर जिस प्रकार उन्हें सजग किया है और अपनी अहमियत पहचानने के लिए ललकारा है वह काबिले तारीफ है। क्योंकि देश की सिद्धांतहीन भ्रष्ट राजनीति एवं नौकरशाही तथा निहित स्वार्थों के बोझ तले कराहते हुए यहाँ के नागरिकों के आँसू पोछने वाला आज कोई नजर नहीं आ रहा है। कहीं पर कोई वैचारिक आंदोलन की प्रतिबद्धता नजर नहीं आती। संपादकीय परिवार को हार्दिक बधाई।

-हेमन्त कुमार सिंह उर्फ हेमन्त पटेल, गेट नं. 89, मकदुमपुर, दीघा पटना-11

जरा इनकी भी सुनें

वेस्टइंडीज के ब्रायन लारा का 400 रन का विश्व रिकार्ड बल्लेबाज वीरेन्द्र सहवाग तोड़ सकते हैं।

-विदेश मंत्री नटवर सिंह

राजग से अलग होकर कांग्रेस का साथ देनेवाले ही धर्मनिरपेक्ष नहीं।

- मुलायम सिंह यादव

न्यायपालिका तय करे कि आरोपी राजनीति करे कि नहीं।

-रेलमंत्री लालू प्रसाद

शांति और भाईचारे का पर्याय है ओलंपिक मशाल।

-सांसद सुनील दत्त

भारत-पाक सीमा से सेना की तत्काल वापसी नहीं

-रक्षामंत्री प्रणव मुखर्जी

मैंने अपनी जिंदगी में शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में कैरियर बनाने का मौका खो दिया है।

- लता मंगेशकर

नक्सलियों से शांति वार्ता के लिए झारखंड सरकार तैयार है।

-अर्जुन मुंडा, मुख्यमंत्री, झारखंड

मोनिका लेवेंस्की के साथ उनके शारीरिक संबंध अनैतिक और बेवकूफाना थे।

-अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन

नई सरकार की प्राथमिकताएँ

केंद्र में कांग्रेसनीत संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार बनने के बाद राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए सरकार की प्राथमिकताओं का उल्लेख किया है। यदि सरकार उन्हें अपने कार्यकाल में कार्यान्वित करे तो बहुत बात बन सकती है।

यह बात ठीक है कि राजग सरकार ने आर्थिक सुधार के तहत जिन नीतियों को अपनाया उनसे देश की अर्थव्यवस्था काफी मजबूत हुई, किंतु देश की 70 प्रतिशत जनता को यह मजबूत अर्थव्यवस्था किसी भी तरह का सुखद अहसास नहीं करा सकी। और तो और शहरों में जिस सुखद अहसास(फील गुड) की बातें की जा रही थीं वहां भी 'फील गुड' और 'भारत उदय' के नारे मंहगे पड़े, क्योंकि राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली की सात संसदीय सीटों में से छह पर भाजपा बुरी तरह पराजित हुई। यही नहीं इलाहाबाद में डॉ. मुरली मनोहर जोशी, पटना में डॉ. सी. पी. ठाकुर, हजारीबाग में यशवंत सिन्हा, रांची में रामटहल चौधरी मुंबई में राम नायक, बाढ़ में नीतीश कुमार आदि की हार ने फील गुड की हवा निकाल दी।

सच कहा जाए तो 'भारत उदय' तथा 'फील गुड' को आम आदमी ने मुंह चिढ़ाने जैसा समझा, क्योंकि यथार्थ में भारत के ग्रामोण क्षेत्रों में नाम मात्र को भी विकास नहीं हुआ। इन क्षेत्रों में न तो नागरिक सुविधाएं हैं, न ढंग के अस्पताल और न ही विद्यालय-महाविद्यालय। बिजली भी नाम मात्र की। सड़कों के नाम पर गड्ढे भरे रास्ते हैं जिनपर बैलगाड़ी को भी चलने में कठिनाई होती है। पिछले तीन दशक में ग्रामीण और कस्बों में निवास करनेवाली जनता की आय और शहरी आबादी की आमदनी के बीच का अंतर दुगने से बढ़कर आठ गुना से भी अधिक हो चुका है। इन सबके चलते ग्रामीण एवं कस्बे के लोग खुद को उपेक्षित महसूस करते हैं और एक तरह से कुंठा से वे ग्रस्त हैं।

विश्व बैंक के प्रमुख अर्थशास्त्री निकोलस एच. स्ट्रेन के अनुसार राष्ट्रीय विकास की गति गरीबी उन्मूलन और सामाजिक कल्याण के लक्ष्य को प्राप्त करना तब तक संभव नहीं होगा, जबतक कि पिछड़े राज्यों, क्षेत्रों और समुदायों को विशेष रूप से सहायता प्रदान नहीं की जाती है। अगर क्षेत्रीय विषमता और शहर एवं गांव के बीच बढ़ती दूरी के चलन को शीघ्र ही समाप्त करने की दिशा में सरकार के द्वारा प्रयास नहीं किया जाता है तो स्वाभाविक रूप से क्षेत्रवाद और सामाजिक कटूता बढ़ेगी।

इस दृष्टिकोण से केंद्र की नई संप्रग सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों के विकास को प्राथमिकता देनी होगी। खुशी इस बात की है कि संप्रग सरकार ने अपने न्यूनतम साझा कार्यक्रम में ग्रामीण क्षेत्रों की उन्नति के लिए अनेक दूरदर्शी योजनाओं का खुलासा किया है, किंतु इन योजनाओं से ग्रामीण क्षेत्रों में किसी तरह गुजर-बसर कर रही गरीब जनता और वहां के किसान-मजदूर की खुशहाली तभी आएगी जब राज्यों की वित्तीय स्थिति में सुधार आए। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि किसानों को जबतक सिंचाई के लिए पानी नहीं उपलब्ध होगा तबतक न तो उनकी स्थिति में सुधार होगा और न ही कृषि उत्पादन बढ़ेगा।

जनसंख्या नियंत्रण भी संप्रग सरकार की प्राथमिकता में रहना चाहिए था पर पता नहीं क्यों, राजग सरकार की तरह इसने भी इस मामले में हाथ खींच लिया। जनसंख्या नियंत्रण के अभाव में देश की अधिकतर जनता जिस नारकीय स्थिति में अपना जीवनयापन कर रही है उसमें कोई भी सरकार सुधार नहीं ला पाएगी।

जहां तक विदेश नीति का सवाल है कांग्रेस राज में गुटनिरपेक्षता की नीति ही अपनाई गई। नेहरू की विदेश नीति अमेरिका और सोवियत संघ के बीच चल रहे तत्कालीन शीतयुद्ध के दुष्प्रभावों से देश को बचाने की थी। मगर आज के वक्त पड़ोसी देशों खासकर चीन और पाकिस्तान के साथ संबंधों को वाजपेयी सरकार द्वारा एक नए सिरे से मजबूत करने की दिशा में बढ़ाए गए कदमों को गति देने की है। जे.एन. दीक्षित और नटवर सिंह की सत्ता प्रतिष्ठान

में वापसी नई सरकार की विदेश नीति के लिए एक शुभ संकेत है। ऐसी आशा की जाती है कि नई सरकार विदेश नीति में कोई आमूल-चूल परिवर्तन नहीं करेगी। वैसे भी विदेशनीति ऐसी कोई चीज नहीं जिसे जुराबों की तरह हर दिन बदला जाए। विदेशमंत्री नटवर सिंह ने भारत-पाक के बीच शांति प्रक्रिया के जारी रखने का संकेत देते हुए यह भी स्पष्ट कर दिया है कि दोनों देशों के बीच वार्ता शिमला समझौते के तहत ही होगी।

इसके अतिरिक्त आज जरूरत इस बात की है कि शिक्षा को केंद्रीय सरकार का विषय बनाकर संपूर्ण भारत की शिक्षा में समानता और एकरूपता लाई जाए। इसके बिना समता, एकता, भाईचारा, सामाजिक न्याय का मिलना मुश्किल है। शिक्षा के साथ ही काम यानी रोजगार पाने को मौलिक अधिकार भी बनाया जाए। आज देश में बेरोजगारों की संख्या में जिस प्रकार निरंतर वृद्धि हो रही है यदि समय रहते इस समस्या का निदान निकालने का कारगर उपाय नहीं किया गया तो इससे कई समस्याएं और पैदा होंगी। आज हिंसा, अपहरण, रंगदारी की घटनाओं को भी इसी बेरोजगारी से जोड़कर देखा जा सकता है। राष्ट्रपति ने संसद में कहा है कि नवयुवकों को रोजगार के नए अवसर, ग्रामीण क्षेत्रों में हथकरघा, बागवानी, कृषि आधारित उद्योगों को सरकार प्रोत्साहित करेगी।

विनिवेश के मुद्दे पर नयी सरकार का निजीकरण के प्रति दृष्टिकोण सैद्धांतिक न होकर शुद्ध रूप से व्यावहारिक होगा, ऐसी उम्मीद की जाती है, क्योंकि प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने साफ शब्दों में उल्लेख कर दिया है कि सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के मजबूत उद्यमों का निजीकरण नहीं करेगी और सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के बैकों में अपनी हिस्सा पूंजी 51 प्रतिशत से कम नहीं होने देगी। 'गेल' और ओएनसीसी जैसे सरकारी क्षेत्र के उद्यम सार्वजनिक क्षेत्र में ही रहेंगे। स्पष्ट है कि विनिवेश पर कांग्रेस नीत संप्रग सरकार की नीति राजग सरकार की नीति के बिल्कुल विरूद्ध होगी जिसने अधिक मुनाफा कमानेवाले सरकारी क्षेत्र के उद्यमों का आक्रामक रूप में विनिवेश किया। सच तो यह है कि संप्रग सरकार के लिए यह वांछनीय होगा कि विनिवेश तय करने के पूर्व साल-दर-साल घाटे में चल रहे प्रत्येक मामले की पृथक रूप से जांच कर घाटेवाली इकाइयों के प्रबंधकों एवं श्रमिकों को साफ-साफ बता दिया जाए कि यदि आगामी तीन वर्षों में वे अपने निष्पादन को बेहतर नहीं करते, तो उन्हें या तो बंद कर दिया जाएगा या उनका विनिवेश कर दिया जाएगा, क्योंकि उन्हें सरकारी खजाने पर बोझ बने रहने की इजाजत नहीं दी जा सकती। मसलन सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के विवेकहीन विनिवेश की नीति का परित्याग कर इनके विनिवेश को सुधारने के अन्य विकल्प तलाशे जाएं।

स्वराष्ट्र मंत्री शिवराज पाटिल को जहां कश्मीर में आतंकवाद से सख्ती के साथ निबटना होगा वहीं रक्षामंत्री प्रणव मुखर्जी की प्राथमिकता पारदर्शिता, सेना का आधुनिकीकरण एवं सशक्तीकरण के साथ कुछ रक्षा सौदों की जाँच भी होगी।

नई सरकार धर्मनिरपेक्ष ढाँचे को मजबूत करने की दिशा में प्रयास करने के साथ कानून सम्मत व्यवस्था के अंतर्गत समाज के सभी वर्गों विशेषकर अल्पसंख्यकों, कमजोर व पिछड़े वर्गों को न्याय दिलाने की दिशा में ठोस कार्य करेगी। महिलाओं को बराबरी का हक दिलाने के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई गई है तथा संसद व विधानसभाओं में एक तिहाई आरक्षण का आश्वासन सरकार की ओर से फिर दिया गया है। अनुसूचित जातियों व जनजातियों को निजी क्षेत्र में भी आरक्षण दिलाने के साथ सार्वजनिक क्षेत्र में भी उनके कोटे को शीघ्र भरने का भी आश्वासन नई सरकार ने दिया है।

संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार की सबसे बड़ी प्राथमिकता घटक दलों के बीच परस्पर सामंजस्य को बढ़ावा देकर स्थिर सरकार प्रदान करना है। हमें नई सरकार से यह अपेक्षा करनी चाहिए कि वह अपने छोटे-मोटे अंतर्विरोध को समझदारी से सुलझाते हुए संप्रग की सरकार अपना कार्यकाल पूरा करेगी।

सूचना प्रौद्योगिकी से साहित्य को कोई खतरा नहीं

डॉ० अमर सिंह वधान

यदि गौर से देखा जाए तो मनुष्य की मूल समस्या उसके अपने अस्तित्व से संबंधित है। अपनी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए उसने समय-समय पर अपने ही द्वारा किए गए आविष्कारों को मानवोपयोगी बनाने की कोशिश की है। कंप्यूटर भी उसी श्रृंखला की चीज है। थोड़ा गहराई से विचार करें तो कंप्यूटर अभी मानव विवेक एवं कल्पना का विकल्प नहीं बना है। उसका परिचालन अनेक विधियों से अंततः मनुष्य के कमांडों पर ही निर्भर है। मनुष्य का विवेक ही उसमें प्रतिगुंजित होता है। अब यदि बीमार मानसिकता के हाथ कंप्यूटर का संचालन है तो वह विवेकहीन दृष्टि से उसका उपयोग करेगा। कंप्यूटर वैज्ञानिक किन्हीं राष्ट्रीयताओं और राजनीतिक संकीर्ण दृष्टियों के साथ बंधक है। वे उसका मानव-विरोध प्रयोग कर सकते हैं। गौरतलब है कि मनुष्य को भयभीत करने का काम एक कंप्यूटर कर सकता है, लेकिन वह स्वयं किसी अपराध के लिए स्वायत्त हाथ का विकास नहीं करता।

इसमें संदेह नहीं कि इक्कीसवीं सदी में कंप्यूटर का प्रयोग बहुत व्यापक स्तर पर होगा। "फ्यूचर शौक" के लेखक आल्विन टाफलर ने अपनी "थर्ड वेव" नामक पुस्तक में जो अटकलें दी हैं, वे बताती हैं कि कंप्यूटर के सघन प्रयोग के दौर में आदमी सिर्फ अपनी कोठरी में ही बैठा मिलेगा। उसके व्यक्तिशः सामाजिक संपर्क कट जाएंगे। तब मनुष्य स्वयंसिद्ध स्थिति में पहुंचकर बेहद अकेला, उकसाया हुआ, थका हुआ और बेचैन होगा। आज भी तो अपनी संकीर्णताओं के पिंजरे में बंद लोग ऐसे ही हैं। उनका साहित्य से कोई रिश्ता नहीं है। ऐसे लोगों का तो समाज से संपर्क ही कट गया है। इस संदर्भ में इवान एलिम ने ठीक की कहा है कि यह नए आदिम युग की शुरूआत है। मार्शल मैकलूहान ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को इस परिवर्तन का केंद्रीय तत्व मानते हुए कहा है कि हमारे सबसे सामान्य तथा परंपरागत रवैये अचानक किसी एकरूपता या अलगाव की ओर मुड़ गए हैं। हजारों वर्षों पुरानी परिचित व्यवस्थाएं तथा संस्थाएं कभी-कभी भयानक और विद्वेषपूर्ण लगने लगती हैं। ये परिवर्तन तो किसी भी समाज में नए संचार साधनों के प्रचलन के सामान्य परिणाम हैं।

वैसे साहित्य बहुत बार मनुष्य के ऊपरी प्रयावों से अप्रभावित रहता है। वह बाहरी प्रभावों की बजाए उन हमलों से प्रभावित होता है, जो समय-असमय मनुष्य के विश्वासों पर होते हैं। जहां विज्ञान की प्रगति का एक पक्ष मनुष्य के विश्वासों को हताहत कर रहा है, वहीं इसका एक दूसरा पक्ष भी है, जो आदिम रूप से बेसहारा मनुष्य की आत्मा को उसके बेघर हो जाने के भाव को सुरक्षा देने की चेष्टा में लगा है। ऐसे विज्ञान से बहुत कम लोगों का सामना होता है। परन्तु विभ्रम से, हताशा के चरम अंतिम बिंदु से आदमी को अगर कोई आश्वस्त करता है तो वह साहित्य ही है, जो सीधे मर्म को छूता है। हो सकता है कि लोगों को यह तरफदारी लगे, लेकिन हर दौर में, जब-जब आदमी अंधेरे युगों में भटका है, तब-तब उसे संस्कृति के छूटे हुए सूत्रों से ही रोशनी मिली है।

भारत के संदर्भ में कंप्यूटर क्रांति अथवा कंप्यूटर युग की बातें करना बहुत कुछ बेमानी-सा लगता है। कंप्यूटर पर चंद सुविधाएं उपलब्ध कराने से कंप्यूटर युग नहीं आ जाता। साहित्य तो स्थितियों के बावजूद लिखा जाता है, स्थितियों के कारण नहीं। विश्व के जिन देशों में कंप्यूटर क्रांति शिखर पर है, साहित्य वहां भी लिखा गया, लिखा जा रहा है और लोगों में साहित्य के प्रति एक नई दृष्टि विकसित हो सकती है, लेकिन साहित्य का अस्तित्व बरकरार रहेगा। आधुनिक तकनीकों के जरिए अनुवाद में अवश्य गति आएगी।

दरअसल, हमारे देश के एक-दो प्रतिशत हिस्से में जो लघु विदेश या हांगकांग बसा है, उसी में आती है कंप्यूटर क्रांति और उसी में पढ़ा जाता है लोकप्रिय साहित्य, चाहे वह पुस्तकों में लिखा हो या टेलीविजन पर बांचा जाए। जहां तक मानवीय मूल्यों के ह्रास की बात है, उसके लिए जितनी उपभोक्ता संस्कृति जिम्मेदार है, उतनी ही महाजनी संस्कृति भी है। आश्चर्य तो इस पर है कि भारत में जो लिखा जाता है, वही पढ़ने के लिए जनता शिक्षित नहीं है और जो नहीं लिखा जा पाएगा, उसकी बात ही क्या करनी। माना कि कंप्यूटर अपनी कार्य प्रणाली में आदमी से भिन्न नहीं है, लेकिन एक तत्त्व जो कंप्यूटर में नहीं होता है, वह है मस्तिष्क में पाई जाने वाली कल्पना शक्ति और भावप्रणता। लेकिन इस नए युग की त्रासदी यह है कि मशीन एक स्तर पर मनुष्य को निरंतर हरा रही है और उसे अपनी तरह काम करने के लिए बाध्य करती है। फिर भी, साहित्य मनुष्य और पूरे वातावरण के आपसी संबंधों के उतार-चढ़ाव का बैरोमीटर है और आगे भी रहेगा। इसकी प्रभावोत्पादकता में भी कोई कमी नहीं आएगी। व्यक्ति के भावबोध, आवेग और संवेग संशोधित तो हो सकेंगे, लेकिन प्रभावित नहीं होंगे। मनुष्य की मौलिक प्रवृत्तियों में जो भी परिवर्तन होगा, वह बहुत कुछ ऊपरी ही होगा। कंप्यूटर युग में जो साहित्य रचा जाएगा, वह निश्चित रूप से अब तक की साहित्यिक परंपरा की ही अगली विकसित कड़ी होगी।

कंप्यूटर की सहायता से जो साहित्य रचा भी जाएगा, वह अपनी यांत्रिकता के कारण विशेष महत्व का नहीं होगा। मनुष्य की मौलिक सृजनशीलता को कोई यंत्र कभी पूर्णतः प्राप्त कर पाएगा, यह संभव नहीं दिखता। साहित्य सर्जक की निजी

प्रतिभा से प्रसूत साहित्य की विशिष्टता का महत्व जैसे आज है, वैसे ही भविष्य में भी रहेगा। यह भी संभव नहीं है कि कंप्यूटर युग का मनुष्य स्वयं एक निर्जीव यंत्र बन जाएगा। कंप्यूटर युग में भी उसके द्वारा रचा गया साहित्य उसके लिए प्रासंगिक रहेगा और उसकी नई जीवन-पद्धति के अनुकूल होने के कारण नए समाज के लिए संगत होगा। यदि अप्रासंगिक होते जानेवाले मूल्य नष्ट हो रहे हैं तो नए मूल्यों का निर्माण भी तो हो रहा है। ऐसा मानव-समाज कभी अस्तित्व में नहीं आएगा, जिसे मूल्यविहीन कहा जा सके।

इक्कीसवीं सदी में साहित्य का स्वरूप क्या होगा, यह निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। लेकिन कंप्यूटर क्रांति आदमी को उस युग में नहीं ले जाएगी, जब लिखित शब्द का अस्तित्व नहीं था। कंप्यूटर न तो कवि बन सकता है और न ही लेखक। शब्द और साहित्य भी कोई पुरातत्व की चीज नहीं बन जाएंगे। साहित्य अपने एक निश्चित उद्देश्य के साथ बना रहेगा। कंप्यूटर क्रांति कितनी भी तेज क्यों न हो मूल समस्याएं तो वही रहेंगी। ऊपरी तौर पर जो परिवर्तन आएंगे, वे अन्य किस्म की समस्याएं पैदा करेंगे। लेकिन साहित्य अपनी गति से समाज को अभिव्यक्त करता रहेगा।

एक अन्य कोण से देखा जाए तो विज्ञान या सूचना प्रौद्योगिकी अपने आप में कोई ऐसा घटक नहीं है, जो कि मानव मूल्यों के पतन के लिए पूरी तरह जिम्मेदार हो। विज्ञान की प्रगति मानव विकास का ही एक अंग है। इसलिए यदि मूल्यों का पतन हो रहा है तो इसके लिए अन्य कारणों की ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। मूल्यविहीन समाज में तो साहित्य की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। कंप्यूटर युग का महामानव साहित्य, संस्कृति और मानव मूल्यों को निगल नहीं सकता। अत: डरने की कोई बात नहीं है।

भारत में जो हमारा ठेठ देसी और बृहत्तर समाज है और जो अपने मूल चरित्र में ग्रामीण, कस्बाई और पारंपरिक है, इसी व्यापक समाज के जीवन अनुभवों, संकटों और स्थितियों को लेकर ही मूल्यवान महत्वपूर्ण साहित्य लिखा गया है। अत: दूरदर्शन के प्रसार, उद्योगों के कंप्यूटरीकरण और महानगरों के विकास से इस साहित्य की अस्मिता को कोई खतरा नहीं है। प्रेमचंद, रेणु, मुक्तिबोध एवं निराला के पाठक बाद में भी ऐसे ही साहित्य की खोज करेंगे। विज्ञान या कंप्यूटर इतना डरावना नहीं है। उसने बहुत विकसित और उदात्त मानव-मूल्य भी दिए हैं। समझ में नहीं आता कि कंप्यूटर क्रांति के प्रभाव से कांपने वाले लेखक यह क्यों भूल जाते है कि सूचना तंत्र के नए-नए माध्यमों ने सृजनशीलता एवं सौंदर्यशीलता की क्षमताओं के नए-नए आयाम उपलब्ध कराए हैं, लेखक को विषय, सामग्री, तथ्य आदि की दृष्टि से कच्चा माल अपेक्षाकृत अधिक सहजता से उपलब्ध कराया है और सृजित के संप्रेषण के भी अनेकानेक साधन उसकी झोली में डाले हैं।

यकीनन क्षमताओं की यह विविधता संश्लिष्टता में अत्यधिक वृद्धि करने वाली है। इसमें भी दो मत नहीं कि विविध-स्तरों पर सृजन इकहरी क्षमता द्वारा नहीं किया जा सकता। इसके लिए विभिन्न क्षमताओं की टकराहट जरूरी है। सर्जन द्वैत से अद्वैत की प्रक्रिया में से होता है, जहां अनुभूति उत्तरोत्तर संश्लिष्ट होती चली जाती है। जाहिर है कि सूचना प्रौद्योगिकी से सद्भाव अब वैकल्पिक नहीं रह गया है। प्रौद्योगिकी तो आज सृजनशीलता का अभिन्न अंग बन गई है। यह भी कि लेखन को बोधक एवं भेदक बनाने के लिए परिवेशगत यथार्थ से तनाव की स्थिति में आना जरूरी है और फिर यह तनाव चाहे सूचना प्रौद्योगिकी की वास्तविकता से ही पैदा क्यों न हो। उल्लेखनीय है कि 11 सितंबर, 2001 के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के ध्वंस से उसी शहर के बुरी तरह से घायल, बीमार और घर-परिवार से उजड़े एक हल्की उम्र के मेरी स्टैपनैक ने संवेदनात्मक ज्ञान के धरातल पर गहरे तनाव की स्थिति में उतरकर व्हील चेयर पर बैठी अपनी अपंग मां से कंप्यूटर पर जो कुछ लिखवाया, वह सृजनधर्मिता के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व घटना थी। आश्चर्य नहीं कि उसी बालक के नाम से उसका पहला काव्य संग्रह 'Heart Song' के नाम से प्रकाशित हुआ। अपनी इन रचनाओं की सफलता से उत्साहित होकर मेरी स्टैपनैक ने एक दूसरा काव्य संग्रह 'Journey Towards Heart Song' के शीर्षक से प्रकाशित करवाया, जिसकी लाखों प्रतियां हाथों-हाथ बिक गईं। वह बालक विस्फोट और विध्वंस से डरा नहीं, बल्कि साहसपूर्वक उसने परिवेशगत यथार्थ को वाणी दे दी। साफ है कि मेरी स्टैपनैक की कविताओं का कंप्यूटर में 'फीड' होना और ओपेरा पर उनका प्रदर्शन किया जाना, निस्संदेह, उसकी रचनाओं को पाठक, श्रोता और दर्शक की संश्लिष्टता से जोड़ता है।

कंप्यूटर क्रांति से भयभीत होनेवाले इधर के रचनाकारों के लिए अभिप्रेरणा एवं निर्भीकता की यह एक बेहतरीन मिसाल है। मत भूलिए कि वर्तमान की गूंज और भविष्य की अनुगूंज के लिए यह सब करना पड़ता है। प्रतिबद्ध साहित्यकार का भी यही धर्म, कर्म और मर्म है। एक बात और कि सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से किसी रचना के पाठ का समावेशी होना महज एक प्रौद्योगिकी अवधारणा नहीं है, अपितु सूचना, ज्ञान और रंजन के प्रसार का एक महत्वपूर्ण अनुतत्व है। हां, इतना अवश्य जोड़ा जा सकता है कि साहित्य की गरिमा-प्रतिष्ठा और मानवीय संवेदना को बनाए रखने के लिए साहित्यकार को अतिरिक्त सावधान होकर सृजनरत होने की महत्ती जरूरत है। आवश्यकता इस बात की भी है कि सूचना-तंत्र में रचना पाठ का हर शब्द परंपरा की गर्भनाल से जुड़ा रहे। आखिर सूचना-तंत्र के केंद्र में संप्रेषण माध्यम शब्द ही तो है।

एक अन्य दृष्टि से देखा जाए तो साहित्य मूलत: भाषा-ज्ञान है। मनुष्य की संकल्पना भाषा केंद्रित है, जबकि साहित्य मानव केंद्रित। ज्ञान भाषा में संरक्षित होकर तथा कोडीकृत होकर तब तक साहित्य में स्थान पा सकता है, जब तक वह मानव संवेदना से संपृक्त है। साहित्य की 'शक्ति' उसकी विश्व दृष्टि के आयोजन में है जो रचना के माध्यम से पाठक में अंतरित होती है। माना कि 'ज्ञान' आधुनिक संचार प्रणाली 'सूचना' का समकक्षीय 'उत्पाद' है, लेकिन बाजार व्यवस्था से अनुशासित तथा प्रभावित ज्ञान का यह

रूप भाषा में आबद्ध ज्ञान के मानव संवेदनशीलता को भाषित बोध से उत्पन्न करता है। यही वजह है कि सूचना प्रौद्योगिकी परिदृश्य के समानांतर साहित्य, विशेषकर आधुनिक साहित्य मानव सरोकारों से मुक्त होकर 'स्वत: चालित' की विशिष्ट स्थिति का यांत्रिक उत्पाद या प्रौद्योगिकी नहीं बन सकता है। साहित्य की प्रविधि तो मानव की चेतना और उसकी भाषिक उपलब्धि की गुणात्मक अभिव्यक्ति है, जिसे 'पाठक' की मानसिकता के बिना 'साहित्य' का गौरव मिल पाना कठिन है। साहित्य मूलत: और अंतत: पाठक की विश्वदृष्टि को, मानव और उसके परिवेश बोध को संस्कार देकर अपनी उपयोगिता का प्रमाण देता है।

गौर करने लायक है कि साहित्य की प्रौद्योगिकी यदि कभी तकनीकी संभावनाओं से विकसित होती है और व्यावसायिकता की अपेक्षाओं की तुष्टि करती है तो 'साहित्य' का स्वरूप विकृत होकर 'कमोडिटी' बन जाएगा। यांत्रिक उत्पाद में मानवीय संवेदनशीलता, स्मृति और अनुभूति, चेतना, अचेतन मन के छद्म और प्रच्छन्न व्यापारों का सन्निवेश संभव हो भी जाए, तब भी उसको साहित्य रूप में ग्रहण करने की क्षमता मानव कदाचित ही विकसित कर सकेगा। सृजन की सार्थकता तो रचना के भाष्य में है, उसकी समझ में है, जो स्वयं कंप्यूटर नहीं कर सकता है। साहित्य की रचना-प्रक्रिया में सबसे अनिवार्य आधारभूत घटक है मानव मन की संवेदना प्रक्रिया। कंप्यूटर अथवा संचार- प्रविधियों की क्षमता अभी इस मानव चेतना के स्तर पर पहुंच नहीं सकी है। भाषा में उत्पन्न होकर भाषा में ही बने रहने की क्षमता साहित्य की सबसे बड़ी शक्ति है। भाषा और साहित्य के संबंध को मानव मन ही परिभाषित कर सकता है। अत: साहित्य 'साहित्य' ही रहेगा। सूचना प्रौद्योगिकी की प्रयोगशाला इसे 'उत्पाद' नहीं बना पाएगी।

इसमें दो राय नहीं कि 1980 के बाद सूचना प्रौद्योगिकी के अंतरिक्ष व्यापी विकास ने सोच और चिंतन में स्पंदन पैदा किया है और कुछ हद तक साहित्य और कलाओं को भी प्रभावित किया है। इस परिवेश से घबराकर जार्ज कोनार्ड तो यहां तक कह देते हैं-यह एक खतरनाक समय है। शब्द की गरिमा नष्ट हो रही है। पात्र छिन्न-भिन्न हो रहे हैं, स्मृतियों अस्त-व्यस्त। कोई भी यह कहकर अपने को तसल्ली नहीं दे सकता कि स्थितियां बदलेंगी। लेकिन जार्ज कोनार्ड यह कैसे भूल जाते हैं कि उनके अपने ही देश के अतिविकसित प्रौद्योगिकी वातावरण में साहित्य सृजन का प्रवाह मंद नहीं पड़ा है। सूचना प्रौद्योगिकी से समुन्नत विश्व के अन्य देशों में भी सृजनात्मक लेखन की रफ्तार धीमी नहीं हुई है। आज भी साहित्य सृजन के लिए साहित्यकारों को नोबेल पुरस्कार मिल रहे हैं। सुखदानुभूति तो इस बात की है विकसित प्रौद्योगिकी से नए चिंतन, नए विचारों और नई सोच के द्वार खुले हैं। साथ ही साहित्य के नए आधारों और नए निष्कर्षों की खोज भी हुई है। ऐसा कोई युग नहीं रहा है, जिसमें साहित्यकारों ने संरचना के धरातल पर नई छटपटाहट महसूस न की हो तथा सृजनात्मक क्रियाएं प्रभावित न हुई हों। इन सभी सक्रियताओं के होते हुए भी साहित्य एक नई उमंग, नए बदलाव एवं उत्साह के साथ आगे बढ़ता रहा है।

कंप्यूटर क्रांति से कुछेक साहित्यकारों एवं बुद्धिजीवियों को जो भ्रम हुआ है, वह उनकी संकीर्ण दृष्टि एवं नकारात्मक सोच का परिचायक है। वे यह क्यों नहीं देखते-समझते कि सूचना प्रौद्योगिकी ने साहित्य को लाखों करोड़ों लोगों तक पहुँचा दिया है और यह महत्ती कार्य विश्व के सभी प्रकाशक, वितरक मिलकर भी नहीं कर सके। संतोष की बात यह है कि साहित्य एवं सूचना प्रौद्योगिकी में एक सह-संबंध स्थापित हो रहा है, साहित्य नए परिवर्तनों का वाहक बन रहा है, सीमाओं से बाहर निकलकर विस्तार कर रहा है और नए रूपों में खुद को गढ़ रहा है। साहित्यकारों एवं कलाकारों में एक नई रचनात्मक दुनिया को खड़ा करने की सामर्थ्य बढ़ी है। संप्रेषण का घेरा विस्तृत हुआ है तो सौंदर्य दृष्टि एवं कल्पना में भी नए आयाम जुड़े हैं। अत: यह एक शुभ लक्षण है, घबराने एवं भयभीत होने की कोई बात नहीं। साहित्य सभी हदें लांघकर विश्व मानवीयता की धड़कन बनकर समकालीन हो जाया करता है। साहित्य की रचना-प्रक्रिया एवं शाश्वत सूचना प्रौद्योगिकी की बाढ़ों एवं जलजलों में भी समान रूप से बनी रहेगी।

संपर्क: W-120, B-Sector, 5th street,
Anna Nagar (west-Extn.) 6
Chennai- 600101

प्रेस विज्ञप्ति

सुविख्यात ग़ज़लकार दीक्षित दनकौरी द्वारा संपादित ग़ज़ल-संकलन 'ग़ज़ल....दुष्यंत के बाद' की अपार लोकप्रियता को देखते हुए इसका दूसरा खंड भी प्रकाशित करने की योजना है जिसमें उन ग़ज़लकारों को शामिल किया जाएगा जो सूचना के अभाव अथवा हमारे द्वारा संपर्क न कर पाने के कारण पहले खंड में प्रकाशित नहीं हो पाए हैं। देश-विदेश के ग़ज़लकारों से निवेदन है कि वे अपनी पांच पसंदीदा ग़ज़लें, फोटो, परिचय (जन्मतिथि सहित) उचित मूल्य का टिकट लगा लिफाफा व एक पोस्टकार्ड तथा प्रेषित ग़ज़लें प्रकाशित करने की लिखित अनुमति यथाशीघ्र श्री दीक्षित दनकौरी के पते पर भेजने की कृपा करें। कृपया ध्यान दें कि प्रकाशनोपरान्त किसी भी प्रकार का मानदेय अथवा नि:शुल्क पुस्तक देने की व्यवस्था नहीं है। हां, शामिल ग़ज़लकार को लगभग लागत मूल्य पर अधिकतम पांच प्रतियां उपलब्ध (ऐच्छिक) होंगी।

भवदीय

अख़्तर अंसारी, निदेशक

श्री दीक्षित दनकौरी का पता
76, डी. डी. ए. फ्लैट्स, मोईन
मानसरोवर पार्क, दिल्ली-32

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर

✍ परमानंद दोषी

गुलामी के भंवर-जाल मे फंसी भारतीय अस्मिता रूपी किश्ती को निकाल बाहर करने, अज्ञान के निबिड़ अंधकार में भटकने-भरगने वाले भारत के विशाल जन-समूह के लिए रोशनी का भरपूर इंतजाम करने और निराशा हताशा के भरे दिशाहीन भारतीय युवकों के सही-समुचित और उपयुक्त अभियान के लिए प्रशस्त पथ का संधान करने की दिशा में भारत के बहुतेरे श्रेष्ठ जनों की सार्थक सक्रियता का श्रेष्ठ योगदान रहा है-मगर साहित्य के जरिए अपनी प्रेरक-उद्‌बोधक काव्य पंक्तियों की मार्फत अकेले राष्ट्रकवि दिनकर का इन सारी दिशाओं में जो योगदान रहा है-वह अप्रतिम रहा है। छंद, लय, मात्रा, तुक का हिसाब जोड़कर कविता की इमारत खड़ी करने वालों में हिसाबी-प्रयासी कवित वह नहीं थे, कवित्व के जन्मजात प्रातिम कौशल के साथ ही वह अवतरित हुए थे और उस पर अध्ययन-अनुशीलन, साधना-संधान और अनवरत अध्यवसाय के सहारे ज्ञान चढ़ाते रहकर उसकी धार निरंतर तेज करते रहे थे। भावुकता से भरे कोमल तंतुओं से उनकी काव्य-अट्टालिका निर्मित नहीं थी उसमें इस्पाती और फौलादी साजो-सामान लगे थे।

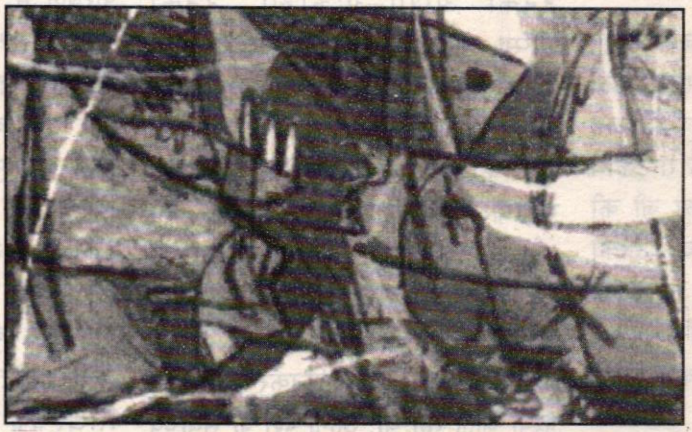

प्रलय-प्रलयंकर भूचाल-बबंडर, आंधी-तूफान, शोला-खैलाव चक्रवात जलजला इन सबके स्मरण उच्चारण से जो भाव हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं--दिनकर जी के व्यक्तित्व का वही प्रतिरूप था, मगर इन सारे तत्वों के तेवर मात्र ही उनके स्वभाव में सम्मिलित थे, उनके विध्वंसकारी स्वरूप की लेशमात्र भी गुंजाइश उनके स्वभाव और कार्य-व्यापार में नहीं थी।

दिनकर जी एक सुदूर ग्रामांचल में उत्पन्न हुए थे। जिस परिवार में उनका जन्म हुआ था, वह एक मामूली-सा कृषक-परिवार था। अपेक्षित साधनों से वह परिवार वंचित अवश्य था, संस्कारों में अगर जो श्रेष्ठ संपदा उसे सुलभ थी, उसकी शीतल और उत्प्रेरक छाया तले उनका शैशव व्यतीत हुआ था। पढ़ाई के लिए भारी बस्ते का बोझ पीठ या कंधे पर लादे हुए उन्हें पांव-पयादे गंगा-पार कर एक लंबी दूरी प्रत्येक दिन तय करनी पड़ती थी और उनको वही श्रमशीलता और भ्रमणशीलता उनके जीवन-निर्माण रूपी भवन की पुख्ती बुनियाद बनी और पढ़-लिख लेने के बाद वैवाहिक सूत्रों में बंधकर अपने पुष्ट स्कंधों पर गृहस्थी की गाड़ी के जुए को धारण कर जब वह बढ़ चलने को हुए, तो उनकी अभिज्ञान-यात्रा में पहले स्कूल की मास्टरी, उसके बाद सब-रजिस्ट्रारी और तत्पश्चात् सरकार के प्रचार विभाग में उप-निर्देशकी की वृतियां आती हैं, मगर इन मंजिलों के रास्ते तय करते हुए भी कवित्व की जो रचनात्मक ऊर्जा उष्मा उनके अंदर छिपी हुई थी-उसे भी अपनी काव्य-रचनाओं के रूप में उजागर करते रहे। अपनी रचनाओं के कारण उन्होंने अपनी निराली पहचान बनायी।

उनके समकालीन कवि जब सुंदरियों के रूप-सुधा का लोगों को पान कराने में लगे थे, प्राकृतिक छटाओं-छवियों के गुणगान में व्यस्त थे और जहाँ कुछ कवि शराब-शबाव, सुरा-साकी, हाला-मधुशाला के जिक्र वाली काव्य रचनाओं की घूटें सर्व-साधारण को पिला रहे थे, वहाँ दिनकर जी का अंतर्मन देश की दासता-जनित दुर्दशा से उद्वेलित-उद्विग्न हो रहा था-अतः जीवन को नकली सस्ती मस्ती-अलमस्ती की जगह वतन-परस्ती को उन्होंने तरजीह देना श्रेयस्कर समझा। हालांकि उनके पूर्ववर्ती और समवर्ती कई कवि देशभक्ति से भरी रचनाएं कर चुके थे, मगर जैसी प्रखरता और तेजस्विता लेकर दिनकर जी की राष्ट्रीय कविताएं आने लगीं, उन कविताओं के सम्मुख दिनकर के सिवा अन्य तथाकथित राष्ट्रकवियों की रचनाएं फीकी पड़ने लगीं।

युग लोरियों की थपकियां लगाकर राष्ट्र को निद्रा के हवाले करने का नहीं था, भैरवी को तेज-तर्रार तान छेड़ सोये

हुए राष्ट्र को झकझोर कर जगाने का था। दिनकर जी ने काव्य की अग्नि-वीणा के कसे तार पर सधी अंगुलियों के सहारे जो बत्ख रागिनी छेड़ी, उसकी कडुवी झनझनाहट से राष्ट्र की अलसाई आंखे खुल गई। सारे देश ने उन्हीं घड़ियों में एक स्वर से सर्वसम्मत और निर्विवाद रूप से स्वीकार कर लिया कि दिनकर के शब्दों के आयुध आक्रांताओं के असलहे से भी अधिक असरदार है।

जीविका का प्रश्न था, दिनकर जी अंग्रेजी सरकार की मातहती में जीवन के अच्छे दिन गुजारने पर मजबूर थे, मगर अपने छात्र-धर्म और कवि-कर्म की ज्योति उस मातहतों के नामाकूल माहौल में कभी मद्धिम नहीं होने दीं।

अंततोगत्वा हिंदुस्तान आजाद हुआ, मगर एक दिन के लिए भी गिरफ्तार होने या कैद किए न जाने के बावजूद भी उन्हें सारे देश ने अपने स्वतंत्र देश के राष्ट्रकवि के रूप में कबूल किया। दिनकर जी की कविताओं के एक-एक शब्द, उनकी रचनाओं की एक-एक पंक्ति कवि के जेल जाने की जहमतों-जिल्लतों, तल्खियों-परेशानियों से अपेक्षाकृत ज्यादा महत्व की समझी गई।

स्वतत्र भारत ने दिनकर जी की अप्रतिम देन का यथोचित मूल्यांकन किया। एक बड़े कॉलेज की प्रोफेसरी-प्रिंसपली का पद उनके हवाले किया गया, बी. ए. आनर्स की अपर्याप्त अधूरी डिग्री उनके प्राध्यापकीय पदों के पदस्थापन-मार्ग में आड़े नहीं आई, उन्हें डी. लिट् की मानद डिग्री से नवाजा गया, उन्हें एक विश्वविद्यालय के कुलपति होने का भी गौरव प्रदान किया गया और अंततः राज्यसभा की सदस्यता प्रदान कर उन्हें एम. पी. भी बनाया गया। कालांतर में राष्ट्रीय स्तर पर गठित विभिन्न आयोगों-समितियों की अध्यक्षता-सदस्यता देकर उन संस्थाओं के मान बढ़ाये गए। भारत का विदेशों में जाकर प्रतिनिधित्व करनेवाले अनेक सांस्कृतिक सद्भावना-दलों में उन्हें सम्मिलित किया जाता रहा। सम्मेलनों-अधिवेशनों में सदारत कराने के बेशुमार मौके उन्हें सुलभ कराए गए। उन्हें 'पदम् विभूषण' के विशिष्ट अलंकरण से भी अलंकृत किया गया।

ये सारे पद, ये सारी प्रतिष्ठाएँ उनकी साहित्यिक गरिमा, मानवीय मर्यादा के सर्वथा अनुरूप थी। परंतु भारत भर की जनता ने उन्हें अपने दिलों में जगह देकर उनका जो सम्मान किया, उसके सम्मुख पदों, पदवियों की शक्ल में दिए गए सारे सम्मान फीके लगते रहे। जनता के दिलों की धड़कन, उनकी आशा-आकांक्षा, उनकी भीप्सा-अपेक्षा का जितना करीबी अहसास दिनकर जी को था, वैसा अहसास अपेक्षाकृत अन्य भारतीय कवियों का नहीं रहा है। दूध की रट लगाते बच्चे, वांछनीय सुविधाओं के लिए शासन-सरकार की और टकटकी लगाते किसान क्षण भर की भी दिनकर की दृष्टि से ओझल नहीं हुए।

प्राकृतिक आपदाओं, देश पर विदेशी आक्रमणों से जितना दिनकर का दिल दरक जाता रहा था, उतना देश के सर्वोच्च सिंहासन पर आसीन लोगों को भी द्रवित होता नहीं देखा जाता। दिनकर इंसानियत और हिंदुस्तानियत दोनों के मसीहा थे और अपने उसी मसीही अंदाज मे जीवन भर अपने काव्यामृत की बराबर वर्षा करते रहे।

पद्य-गद्य की अनेक विधाओं में मानवोत्थान और राष्ट्रीय उद्‌बोधन के लिए बहुत कुछ रचा है उन्होंने। शाश्वत और स्थायी मूल्य का उनका साहित्य किसी युग-विशेष के लिए नहीं, अपितु युग-युग के लिए अपनी उपयोगिता अनिवार्यता बनाए रखेगा।

ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी की प्रशस्ति के साथ साहित्य के प्रायः सभी सम्मानों-पुरस्कारों से प्रतिष्ठित किए जानेवाले दिनकर जी को भारत-रत्न के अलंकरण से अलंकृत नहीं करने और उनके संसदीय जीवन-काल में उन्हें शिक्षा-संस्कृति-साहित्य का केंद्रीय मंत्री नहीं बनाकर हमारे राष्ट्र ने भले ही उनके साथ नाइंसाफी की हो, मगर कृतज्ञ राष्ट्र के लिए उन्हें और उनके राष्ट्रीय साहित्यिक अवदान को विस्मृत करना संभव नहीं होगा।

कद : पांच फुट ग्यारह इंच का कद वर्ण रक्तिम सौंदर्य से युक्त उज्ज्वल गोर, आनन आत्मविश्वास की दृढ़ता से दोषित, स्वाभिमान का दर्द, पौरुष की तेजस्वी आभा से आलोकित उनकी अंग-प्रत्यंग, परिधान में खादी का स्वच्छ सफेद लंबा कुर्ता और धोती, गले में झूलता जरी की किनारी वाला उत्तरीय शीत ऋतु में अचकन और उसी के वर्ण का मफलर में छड़ी, होठों पर मुस्कान यह रूप-स्वरूप था दिनकर जी के वाह्य व्यक्तित्व का मगर रचनाओं में अग्नि-अंगारों, आफताब-शोलों की उष्मा, पैसठ वर्ष, सात महीने और एक दिन के अपने जीवन-अस्तित्व में हिंदी-साहित्य की समृद्धि के उच्चतम शिखर तक ले जानेवाले सहित्य मनीषी के ज्ञान-गौरव से भरपूर वैभवशाली व्यक्तित्व के अनुरूप ही उनके समस्त कार्य व्यापार भी उल्लेखनीय रहे हैं।

दिनांक 23 दिसंबर 1908 को वर्तमान बेगूसराय और तत्कालीन मुंगेर जिले के सिमरिया गांव में उदित और दिनांक 24 अप्रैल 1974 को धार्मिक-स्थली तिरूपति में अस्त हुए दिनकर की मात्र भौतिक काया का ही अंत हुआ है, उनके कृतित्व के प्रकाशवान और तेजस्वी सूरज की प्रखर रश्मियों का अवसान होना असंभव है।

संपर्क : विशेष कार्य पदाधिकारी,
बिहार राज्य स. भूमि विकास बैंक,
बुद्ध मार्ग, पटना-1

कहानी

जोगी दादा

✍ गिरीशचंद्र श्रीवास्तव

जोगी दादा का पार्थिव शरीर चिता की आग की लपटों में धीरे-धीरे जल रहा था। जलती हुई लपटों में चंदन का बुरादा फेंकते हुये नित्ती भइया बोले...

'घनश्याम, इस शरीर का क्या ठिकाना? कब बुलावा आ जाय। जोगी चला गया हम सब को छोड़कर .....।'

घनश्याम के अंतस्तल पर जैसे किसी ने लोहे के हथौड़े से वार किया। वह आकाश की ओर देखता रहा किंतु खामोश रहा।

चिता की लकड़ियाँ चट चट बोलती रहीं।

सहसा नित्ती भइया ने कहा...

'अच्छा घनश्याम, सब काजग पत्र तो ठीक से रख लिये है न?'

घनश्याम की छाती पर जैसे किसी ने बड़ी जोर का घूँसा मारा।

वह सोचने लगा क्या रुपये पैसों से स्वार्थ रिश्तों को इतना बदल देते है। कि बिल्कुल निकम्मा समझा जाने वाला इंसान भी अचानक महत्वपूर्ण हो जाता है।

सहसा नित्ती भइया बोले....

'कागजों की रजिस्ट्री तो करा ली होगी न घनश्याम?'

मन ही मन घनश्याम तिलमिला गया। पिछले महीने ही तो जोगी दादा का रंगून से एक्सप्रेस पत्र आया था कि उनकी हालत गम्भीर है और डाक्टरों की सलाह पर वापस आ रहे हैं। जब वह घनश्याम के पास पहुंचे थे तब उनकी दशा काफी खराब थी और उसे लगा था शायद उनकी मिट्टी ही यहां उन्हें खींच कर ले आई थी। उसने उन्हें एक प्राइवेट नर्सिंग होम में भर्ती करा दिया था। उसका हाथ पकड़ते हुए जोगी दादा ने कहा था..

'घनश्याम, जरा मेरे घर में भी खबर कर देना वैसे मैं जानता हूं कि शायद...'

वह खामोश हो गए थे। उसने देखा था कि उनकी आंखें भर आयी थी और वह समझ गया था कि जीवन के अंतिम क्षणों में अपने घर के लोगों का ख्याल आ रहा है।

वह उनके घर गया था। बीमारी की खबर सुनकर नित्ती भइया पहले तो कुछ चौंके थे फिर अपने पांवों की ओर देखते हुए बोले थे...

'घनश्याम, तुम तो जानते ही हो मैं चल फिर नहीं सकता। गठिया का मरीज हूँ इतनी ठंडी प्रतिक्रिया? शायद ठीक ही कहा था जोगी दादा ने घनश्याम ने मन ही मन सोचा। वह चुपचाप बैठा रह गया था।

कुछ देर की खामोशी के बाद नित्ती भइया ने कहा था...

'क्या हुआ है? डाक्टरों ने क्या कहा है? और फिर इतने दिन कहां रहा कुछ पता है। न कोई चिठ्ठी न पत्री।.... बड़ा नालायक है जोगी, शुरु से ही ऐसा था.....।'

घनश्याम बोला था...

'भइया, अभी तो उनकी हालत बहुत नाजुक है। इलाज चल रहा है। कमजोर बहुत हो गये है। आप सब की याद कर रहे थे, उन्हीं के कहने पर मैं यहां चला आया।'

नित्ती भइया बोले थे...

'उसका हमारा रिश्ता तो तभी खतम हो गया था जब वह बिना कुछ कहे सुने बरसों पहले कहीं चला गया था। उसके बाद उसने कभी खबर ली हम सब की . ...? अब जब बीमार पड़ा तब हमें याद करने लगा।'

उनके वाक्यों में तीखा व्यंग्य और कड़वाहट थी। घनश्याम ने सोचा कि जोगी दादा की बीमारी का समाचार देने का काम पूरा हो गया औरअब उसे वहां से चलना चाहिए।

उसे उठते देखकर उन्होंने कहा था...

'अच्छा, नर्सिंग होम का नाम, बेड नं. आदि दे देना। हो सका तो अन्नू को भेज दूंगा।'

नर्सिंग होम का पता आदि लिखकर वह चला आया था।

न तो अन्नू भइया नर्सिंग होम आये थे और न ही अन्य कोई। तीन चार दिन के इलाज के बाद डाक्टरों ने जवाब दे दिया था और कल रात जोगी दादा ने आंखे मूंद ली थी। उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार उनकी मृत्यु और उनके द्वारा छोड़ी गई वसीयत के सम्बन्ध में वह उनके परिवार वालों से सूचना दे आया था। और अब उनकीं की जलती चिता के सामने बैठकर एक ओर जोगी दादा के निधन और संसार की निस्सारता पर आहें भरना और दूसरी ओर उन्हीं की वसीयत की रजिस्ट्री जैसे निहायत सांसारिक प्रश्नों के प्रति जिज्ञासा करना घनश्याम को आहत कर गया।

वह उठकर चिता की दूसरी ओर बैठ गया और जोगी दादा के शरीर का जलना

देखता रहा। रह रह कर अतीत की घटनायें उसकी आंखों के आगे से गुजरने लगी। जोगी दादा का और उसका बहुत पुराना साथ था। स्कूल के दिनों से ही वह उन्हें जानता था और जोगी दादा भी उसे खूब चाहते थे। वैसे तो वह उसके बड़े भइया अविनास के साथ पढ़ते थे लेकिन इंटरमीडियेट में कई बार फेल होने के बाद वह घनश्याम के साथ आ गये थे। पहले वह अविनाश भइया के पास अक्सर पढ़ाई के सम्बन्ध में आया करते थे और एक दिन परिचय कराते हुये उन्हेंने कहा था...

'देख जोगी, यह घनश्याम है मेरा छोटा भाई और यह जोगी।'

तभी से घनश्याम उन्हें जोगी दादा कहने लगा था। उनका वास्तविक नाम जोगेन्द्र था यह जानने की कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ी और जब वह फेल होते होते उसके साथ आ गये तो उन्होंने मुस्कुराते हुये कहा था...

'देख घनश्याम, मैं तेरे साथ भी आ गया।'

घनश्याम उन्हें जोगी दादा कहता रहा। वैसे बारहवी कक्षा के हिसाब से उनकी आयु काफी थी और देखी घनश्याम के अन्य सहपाठी भी उन्हें जोगीदादा ही कहने लगे। पढ़ाई करते करते अचानक जोगी दादा कहते...

'घनश्याम, अच्छा बता क्या तेरा मन लगता है पढ़ाई में?'

वह किताबों से ध्यान हटाकर कहता...

'नहीं पढूँगा तो करुँगा क्या?'

वह कहते...

'मेरा तो मन नहीं लगता । बस जी चाहता है सब छोड़-छाड़ कर कहीं भाग जाऊं।'

और वह पढ़ाई छोड़कर बाहर चले जाते। घनश्याम अच्छे नंबरों से पास हो गया था और जोगी दादा भी किसी तरह निकल गये थे। उसके बाद दोनों ने बी.ए. की पढ़ाई शुरु की थी किन्तु जोगी दादा बी.ए. नहीं कर सके थे।

बीचबीच में जोगी दादा अपने घरवालों के उपेक्षापूर्ण व्यवहार की बातें बताया करते और घनश्याम उनकी बातें सुन सुन कर दुखी हो जाया करता था। जब वह बी. ए. में दूसरी बार फेल हुये थे तब नित्ती भइया ने उन्हें बहुत बुरा भला कहा था और अंत में चेतावनी देने हुये बोले थे..

'देखो जोगी, तुम इस बार भी फेल हो गये। मैं कब तक तुम्हारा बोझ ढोता रहूंगा। तुम्हारे निकम्मेपन का असर हमारे बच्चों पर भी पड़ रहा है।'

उस दिन जोगी दादा फूट फूट कर रो पड़े थे। घनश्याम ने उन्हें चुप कराते हुये कहा था...

'चुप हो जाइये जोगी दादा, एक बार फिर कोशिश कीजिए।'

अपने आंसू पोंछते हुये उन्होंने कहा था...

'घनश्याम, क्यों ऐसा होता है। क्या मैं वास्तव में बोझ हूँ उन पर। मेरे माता पिता होते तो क्या वह भी यही कहते?'

उस समय वह चुप रह गया था। लेकिन आज उसे लगा जैसे चिता की उठती हुई लपटें बार-बार वहीं प्रश्न दुहरा रही हैं।

नित्ती भइया ने कहा...

'अच्छा घनश्याम, कुल कितनी सम्पत्ति छोड़ी थी जोगी ने? किसको कितना कितना दिया है?'

घनश्याम की छाती ग्लानि और क्रोध से फूल उठी और एक बार मन में आया कि उन स्वार्थी लोगों को वहां से दूर भगा दे, किन्तु जोगी दादा की अंतिम इच्छा का आदर करते हुये उसने स्वयं को संभाल लिया और चुप रह गया।

जोगी दादा ने ही बताया था कि नित्ती भइया और अन्नू भइया उनके सगे भाई नहीं थे। नित्ती भइया के पिता ने अपनी ब्याहता पत्नी के रहते एक गरीब विधवा स्त्री से सम्बन्ध बना रखे थे और जोगी दादा उसी के पुत्र थे। वह जब छोटे थे तभी उनकी मां हैजे की बीमारी में चल बसी थी और उसके बाद उसके पिता उन्हें अपने घर ले आये थे। नित्ती भइया और अन्नू भइया के साथ ही उनका पालनपोषण भी उसके परिवार में हुआ था। नित्ती भइया की मां को वह भी मां कहते थे और वह भी सौतेला बेटा होने पर भी उन्हें अपेक्षा से अधिक प्यार करती थीं। लेकिन जोगी दादा का भाग्य छलिया था क्योंकि वह भी कुछ ही वर्षों में इस संसार से कूच कर गई और जब वह 10 वर्ष के थे तब पिता भी स्वर्ग सिधार गये थे। इसी के बाद शुरु हुई थी जोगी दादा के दुखों की कहानी।

एक साल बड़ी सर्दी पड़ी थी किन्तु जोगी दादा मात्र एक कुर्ता पहने ही दिखाई देते थे। घनश्याम ने पूछा था...

'जोगी दादा, सर्दी बहुत है। आपने कुछ गरम कपड़ा नहीं पहना है।'

वह बोले थे...

'अन्दर स्वेटर पहना हुआ है.....'

घनश्याम ने साफ देखा कि जोगी दादा झूठ बोल रहे थे। और जब वह जाने लगे तब उसने अपना एक पूरी बांह का स्वेटर देते हुए कहा था..

'यह पहन लीजिये नहीं तो बीमार पड़ जायेंगे।'

जोगी दादा ने भावविह्वल होकर उसका हाथ पकड़ लिया था। वह समझ गया था कि उनके पास ऊनी कपड़े नहीं थे और उनके परिवार वालों को इसकी चिंता नहीं थी।

लेकिन वह सचमुच बीमार पड़ गये थे। खूब तेज बुखार आ गया था और कई दिनों तक कॉलेज नहीं आये थे। बाद में घनश्याम उनके घर गया था तब नित्ती भइया ने कहा था...

'कुछ नहीं, यूं ही थोड़ी सर्दी लग गई है। अब ठीक हो गया है।'

तब तक जोगी दादा खांसते हुये बाहर

आ गये थे और उसे बाहर ले गये थे। घनश्याम ने कहा था...

'कैसी तबीयत है....?'

उन्होंने कहा था...

'शायद फ्लू हो गया है। सारे बदन में दर्द है।'

घनश्याम ने डाक्टर के पास से दवाई लाकर दी थी तब पांचवे दिन वह चारपाई से उठ पाये थे।

जोगी दादा से ही मालूम हुआ था कि बाजार हाट का सारा काम वही किया करते थे। एक बार हिसाब में कुछ गड़बड़ी हो गई तो उन्हें बहुत डाँट पड़ी थी। अन्नू भइया ने कहा था...

'अब देखता हूं तुम पैसों की चोरी भी करने लगे हो। जरुरत थी तो माँग लेते। तुम्हें शर्म आनी चाहिए।'

जोगी दादा बहुत दुःखी हुए थे। मिलने पर उन्होंने कहा था...

'घनश्याम, क्यों ऐसे होते हैं लोग? मैंने उनका क्या बिगाड़ा है?'

इसका उत्तर न तो घनश्याम के पास था और न जोगी दादा के पास।

और एक दिन वह बिना कुछ कहे सुने कहीं चले गये थे और वर्षों तक उनकी कोई खोज खबर नहीं मिली। उनके घर वालों ने उन्हें बहुत बुरा भला कहा और कुछ दिनों के बाद मान लिया था कि अब वह वापस नहीं आयेंगे। उनके अचानक गायब हो जाने के बाद जब घनश्याम उनके घर गया था तब नित्ती भइया बोले थे...

'देख घनश्याम, एक तो पढ़ता लिखता नहीं था और अब पता नहीं कहां भाग गया। न कोई चिठ्ठी न खबर। नालायक कहीं का।'

नित्ती भइया से छोटे अन्नू भइया ने कहा था..

'अभागा था। हमने कितनी कोशिशें की कि पढ़ लिख कर अपने पैरों पर खड़ा हो जाय। पर पता नहीं कहां चला गया। अब दर दर की ठोकरें खा रहा होगा।'

वही जोगी दादा आज नहीं है और उन्हीं की जलती चिता के सामने बैठ कर वही लोग उनकी सम्पत्ति और उसके बटवारे की बात कर रहे थे जिन्होंने उन्हें दर दर की ठोकरें खाने का आशीर्वाद दिया था।

उसे अच्छी तरह याद है कि उनके चले जाने के बाद धीरे धीरे उनके घर वालों ने उनके सम्बध में बातचीत करना छोड़ दिया और जोगेन्द्र नाम का कोई लड़का वहां कभी रहता था यह प्रसंग वहां फिर कभी नहीं उठा।

लेकिन घनश्याम उन्हें भुला नहीं पाया। समय बीतता गया, पढ़ लिखकर घनश्याम नौकरी करने लगा और उसका अपना परिवार हो गया किन्तु खाली क्षणों में वह उसे बहुत याद आते।

जलती हुई चिता के सामने बैठे बैठे घनश्याम पुरानी यादों में उलझा रहा और एक विचित्र सी मनास्थिति से गुजरता रहा।

जिस प्रकार अचानक एक दिन जोगी दादा घर से गायब हो गये थे उसी तरह वर्षों के लंबे अंतराल के बाद वही जोगी दादा अचानक वापस आ गये थे। घनश्याम सोचने लगा यदि वह यहां नहीं आये होते तो शायद अपने घर से इतनी दूर रंगून में ही उनकी इहलीला समाप्त हो गई थी और उस परिस्थिति में मानवीय चरित्र के उस बीभत्स स्वरुप से परिचय नहीं मिलता जो जोगी दादा के परिवार वालों ने दिया था। मन ही मन वह प्रश्न उसके मन में मथता रहा...क्यों आये जोगी दादा यहाँ?

जब जोगी दादा अचानक घर से भाग गये थे उसी के कुछ दिनों बाद ही उनके परिवार वालों ने उन्हें निर्जीव घोषित कर दिया था। 15-20 वर्षों तक उनका घनश्याम से भी कोई सम्पर्क नहीं रहा। फिर जोगी दादा ने ही अपने किसी परिचित को भेज कर उससे संबंध स्थापित किया था। वह सब न होता तो क्या होता? उसे याद है उनके एक परिचित भंडारीजी उसके पास आये थे और अपना परिचय देने के बाद बोले थे....

'जोगेन्द्रजी ने ही मुझे यहां भेजा है और मै। यहां आप को ही ढूंढता हुआ आया हूँ। बहुत पुराना पता था इसलिये आशंका थी कि कहीं आप न मिलें।'

उन्होंने अपनी जेब से जोगी दादा का दिया हुआ एक लिफाफा निकालकर उसे दे दिया था। लिफाफे के भीतर उनका पत्र था जिससे ज्ञात हुआ कि वह घर से भाग कर कलकत्ता की गाड़ी में बैठ गये थे। कलकत्ते में 2-3 वर्ष मेहनत मजदूरी करके अपना पेट पालते रहे। वहीं एक दिन सोनाली से भेंट हो गई थी जो उन्हें अपने साथ रंगून ले गई थी और जिसने उन्हें अपने पुश्तैनी कारोबार में लगा दिया। उन्होंने लिखा था...

'घनश्याम, मैं सोच भी नहीं सकता था कि बिना पढ़ाई पूरी किये हुये मैं इतना अधिक पैसा कमाने लगूंगा जिसकी कल्पना करना मेरे लिए संभव नहीं था। तु तो जानते हो मेरा मन पढ़ाई में कभी नहीं रहा और इसी कारण मुझे नित्ती भइया आदि नालायक समझते रहे। लेकिन आज मेरे पास वह सभी कुछ है जिसे पाने के लिए लोग कितनी पढ़ाई लिखाई करते है फिर भी नहीं पाते। अब मुझे घर छोड़ने का दुख नहीं है हां इतना अवश्य है कि मैं अपनों से बहुत

दूर हूँ। तुम्हारी बड़ी याद आती है। तुम भी यहां आ जावो मैं तुम्हारा भी बंदोबस्त करा दूंगा।'

जोगी दादा से पत्र व्यवहार चलता रहा और वह अक्सर अपने फैलते हुए कारोबार के विषय में लिखते रहे। एक पत्र में उन्होंने लिखा था...

'घनश्याम, इतनी आयु बीत गई कभी विवाह का ख्याल नहीं आया। माता-पिता होते तब शायद मेरा विवाह बहुत पहले हो गया होता। पर अब मैं सोचता हूँ कि विवाह कर लूं।'

उन्होंने एक पत्र में लिखा था...

'हालांकि सोनाली मुझसे आयु में बड़ी है पर मुझे बहुत अच्छी लगती है और शायद मुझे उससे प्यार हो गया है। मैं उसी के घर में ही रहता हूँ और उसका कारोबार संभालता हूँ। उसके पिता के न रहने के बाद वह बहुत अकेली हो गई है। मुझे यकीन है कि वह मेरे साथ घर बसाने के लिए हाँ कर देगी।'

घनश्याम ने सोचा था कि अब शायद जोगी दादा के सैलानी जीवन में ठहराव आ जायगा। लेकिन चाहने भर से क्या सारी इच्छायें पूरी हो जाती है। इसके बाद छ महीने तक उनका कोई पत्र नहीं आया। अचानक एक दिन उनका बड़ा लंबा पत्र आया जिसका सार इस प्रकार था...

'जब जोगी दादा ने एक दिन सोनाली से अपने मन की बात कही तब वह बड़ी देर तक चुप रही थी।'

जोगी दादा के बार बार कहने पर वह बोली थी...

'मेरा ब्याह हो चुका है और मेरा पति जीवित है।'

जैसे बिजली गिर जाने से मनुष्य मृतप्राय हो जाता है जोगी दादा वैसे ही निष्प्राण से गये और बोले थे...

'क्या कह रही हो सोनाली-तुम्हारा ब्याह हो गया है। पर कहां है तुम्हारा पति?'

सोनाली कोने में जाकर सुबकने लगी थी। जब जोगी दादा उसे चुप कराने लगे थे तब वह उनके सीने से लग कर फूट फूट कर रोने लगी थी। शांत होने पर उसने बताया था कि कम आयु में ही उसका ब्याह हो गया था। लेकिन उसका पति आयु में उससे बहुत बड़ा था कि कम आयु में ही उसका ब्याह हो गया था। लेकिन उसका पति आयु में उससे बहुत बड़ा था और दबावों की तस्कारी और लड़कियों की दलाली में कई बार जेल भी जा चुका था। जब भी घर आता शराब पीता और सोनाली का शरीर नोचता रहता। विरोध करने पर

गालीगलौज और मारपीट करता। पिता से शिकायत करने पर वह उन्हें भी धमकी देता। पिता ने ही उसके लिए एक अलग काटेज ले दी थी फिर भी वह कभी कभी रुपये ऐंठने सोनाली के पिता के पास आ धमकता था। अपने धंधे के संबंध में वह अक्सर बाहर रहता और कभी कभार पुलिस के हाथों पड़ जाता था। सोनाली के इतने बड़े कारोबार के कारण वह तलाक के लिए भी सहमत नहीं था।

जोगी दादा ने सोनाली को दिलासा दिलाई और उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा...

'सोनाली, मैं तुम्हें अपनाने को तैयार हूँ। क्या तुम यह बंधन तोड़ सकती हो ?'

वह बोली थी...

'तुम नहीं जानते वह कितना खतरनाक है, वह तुम्हारी जान ले लेगा।'

उन्होंने कहा था...

'मुझे कुछ नहीं होगा। बोलो तुम तैयार हो।'

सोनाली मुंह नीचा किये बड़ी देर तक बैठी रही और बिना कुछ कहे हुए उठकर चली गई।

अगले दिन जब जोगी दादा देर रात घर लौटे तो घर में सन्नाटा था। नौकरानी ने बताया कि सोनाली मेम साहब उनके लिए एक लिफाफा छोड़ गई है। उसने अपने कमरे में ले जाकर लिफाफा खोला। भीतर सोनाली के हाथ का लिखा पुर्जा था ... उसने लिखा था... आज मेरा पति फिर आया था, मैं मजबूर होकर उसके साथ जा रही हूँ। अभी समय नहीं है कि और कुछ लिख सकूं क्योंकि वह अपने दल बल के साथ आया है। यह मकान मैं तुम्हारे लिए छोड़े जा रही हूँ जब तक मन चाहे रहना। अगर कभी मिली तो सारी बातें बता सकूंगी। कारोबार के सारे कागजात तुम्हारे कमरे की टेबल की दराज में रखे हैं। जोगी दादा बुत की तरह खड़े रह गये। सारा मकान घूमता हुआ सा लग रहा था।

उन्होंने लिखा था कि सोनाली उसके बाद कभी नहीं मिली। कुछ दिनों बाद वकील के माध्यम से डाक द्वारा कारोबार के संबंध में पावर आफ अटार्नी मिल गया जिसके अनुसार सोनाली के सारे कारोबार पर अब उसका अधिकार हो गया। उस अकेले घर में सोनाली की अनगिनत यादें बिखरी हुई थी। इसलिए उसकी अनुपस्थिति में वह घर काटने को दौड़ने लगा। इसके बाद फिर लंबा अंतराल और उनकी ओर से पूरी खमोशी। फिर अचानक उनकी बीमारी का एक्सप्रेस पत्र, उनका यहां आना, घनश्याम का उन्हें नर्सिंग होम में भर्ती कराना और उनका दम तोड़ना।

मृत्यु से दो दिनों पूर्व जोगी दादा ने

कहा था....

'घनश्याम, अब मेरा अंतिम समय आ गया है। मेरा एक काम कर दोगे।'

घनश्याम बोला था...

'कैसी बाते करते है, जोगी दादा आप ठीक हो जायंगे।'

उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुये उन्होंने कहा था...

'नहीं, बस अब और नहीं। बस तुम मेरा यह अंतिम काम कर दो।'

वह बोला था...

'बोलिये क्या काम है?'

उन्होंने कहा था...

'एक वकील बुलाकर मेरी वसीयत बनवा दो।'

घनश्याम ने वकील बुलवा दिया था और वसीयत तैयार करवाकर रजिस्ट्री करवा दी थी। जिस रात उन्होंने अंतिम सांस छोड़ी थी उन्होंने कहा था...

'घनश्याम, मेरे पास कुल सम्पत्ति एक करोड़ से ऊपर है जिसमें से नगद करीब 75 लाख है। उसमें से 25 लाख मैं तुम्हें दे रहा हूँ तुम उस पैसे से मेरी माँ के नाम का अनाथाश्रम खुलवा देना और उसके ट्रस्टी बनकर उसका संचालन करना। बाकी 25 लाख में नित्ती भइया और अन्नू भइया को दे रहा हूँ वह जैसा चाहें उसका उपयोग कर सकते हैं।'

घनश्याम सुनता रहा। जोगी दादा की सांस फूल रही थी। थोड़ा रुक कर बोले...

'यह केवल इसलिय कि उन्हीं के पिता का खून मेरी रगों में भी दौड़ रहा है।'

उन्होंने फिर कहा ...

'बाकी पचीस लाख चल अचल संपत्ति सोनाली के नाम है यदि वह कभी संपर्क करे तो उसे दे देना। तब तक तुम उसके ट्रस्टी रहोगे। उसे तुम्हारा पता मालूम है। ईश्वर करे वह जीवित हो।'

जोगी दादा एक पुच्छल तारे की तरह आये थे और उसी तरह चले गये। उनके न रहने की खबर सुन कर नित्ती भइया और अन्नू भइया ने मुँह बिचका लिया किन्तु जब वसीयत की बात बताई तब उनका भावपरिवर्तन देखने लायक था। नित्ती भइया बोले थे...

'क्या कह रहे हो घनश्याम? हमारा जोगी नहीं रहा। अरे सुनती हो घनश्याम कैसी मनहूस खबर लाया है।'

घनश्याम चुपचाप खड़ा रहा था। अन्नू भइया ने अपना चश्मा उतारकर आँखों में छलक आये अदृश्य आंसुओं को छुपाने का

स्वांग किया और बोले थे...

'कब हुआ घनश्याम । हम तो देखने भी नहीं जा सके। एक बार देख तो लेते।'

चिता की आग अपने पूरे उठान पर थी। अन्नू भइया पास खिसक आये और बोले....

'और कितनी संपत्ति थी उसका क्या किया?'

घनश्याम की आँखों में लाल मिर्चे जैसा जल रहा था। धीरे-धीरे सारा शरीर जल गया केवल कपालभंजन की क्रिया करनी शेष रह गई। भइया आगे बढ़े और बोले...

'भाई, यह काम मेरे ही हाथो होना चाहिए। क्यों घनश्याम?'

अन्नु भइया खिसिया गए जैसे अच्छा अवसर चूक गये। कपाल क्रिया के बाद नित्ती भइया बोले...

'घनश्याम, अब देखो जिसको जाना था वह तो चला गया। ईश्वर की यही इच्छा थी। यहां से तुम हमारे घर ही चलो और उसकी वसीयत के कागजात हमें दे दो। क्यों अन्नू?'

अन्नू भइया ने कहा...

'हां भइया ठीक तो है। घर के लोग तो हमी लोग हैं।'

घनश्याम की आँखों में खून सवार हो गया किन्तु अपने को नियंत्रित करते हुए बोला...'आप से संबंधित कागजात आप तक वकील भेजवा देगा। आप चिंता न करें। अभी जोगी दादा का श्राद्ध संस्कार आदि तो हो जाए।'

नित्ती भइया का मुँह लटक गया। अन्नू भइया चुपचाप खड़े रहे फिर भी उनसे रहा नहीं गया उन्होंने पूछा- 'हमारे नाम कितने रुपये वसीयत की है। सुना है करोड़ों की सम्पत्ति थी।'

नित्ती भइया बोले...

'क्यों नहीं होगी हमारा जोगी क्या वहां इतने साल केवल घास छीलता रहा। जो कुछ कमाया है वह सब हमारे ही हक में तो जायगा।'

नित्ती भइया, अन्नू भइया आदि अब श्मशान घाट छोड़ कर जा रहे थे। घनश्याम अब भी जोगी दादा की चिता पर बिखरी हुई राख के भीतर छिपी उनकी पीड़ा को चुनने का प्रयास कर रहा था।

संपर्क : ब्लॉक-सी-58/5,
सं. बी-23, सेक्टर-62,
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर (उ. प्र.)

14 सितंबर
हिंदी दिवस पर

राष्ट्रभाषा हिंदी : दशा और दिशा

डॉ० डी० आर० ब्रह्मचारी

नई दिल्ली में संघ सरकार की सारी योजनाएँ बनती और नीतियाँ निर्धारित की जाती हैं, मगर ऐसी भाषा में जिसे जनता बिल्कुल ही नहीं जानती है और फिर जनता से यह कहा जाता है कि वह इन योजनाओं, नीतियों समझोतों आदि को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करे। ऐसी हालत में राष्ट्र निर्माण के सभी कार्यों में जनता अपना सहयोग सरकार को कैसे प्रदान कर सकती है।

1974 के नॉवेल पुरस्कार प्राप्त अर्थशास्त्री स्वीडेन के कार्ल गुन्नार मिर्डल: 'एशियन ड्रामा'

प्रथम खण्ड - इंट्रोडक्शन, पृ० 81

विडंबना है कि प्रतिवर्ष चौदह सितंबर को हिंदी दिवस समोराह संपन्न होता है -हिंदी डे।

अन्य वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चौदह सितंबर आ ही गया - हिंदी दिवस। जैसे स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, शहीद दिवस, शिक्षा दिवस, वैसे ही हिंदी दिवस।

इन दिवसों को जो हश्र होता है, किसी से छिपा नहीं। शहीदों को कल्याण हो चुका, शिक्षकों की समस्याएँ निर्मूल हो चुकीं, मजदूर विगत-शोक हो चुके, महिलाओं के संकटों का उन्मूलन हो चुका, बाल-समस्याएँ निबट चुकीं, वैसे ही स्वतंत्रता की संरक्षा के लिए हम प्राणपण से पल-पल जुटे हैं, गणतंत्र की सिद्धि में मनसा वाचा कर्मण लगे हैं। राष्ट्रभाषा के उत्थान के माध्यम से अशेष समर्पण के साि विहित विधान के मुताबिक हम राष्ट्रोतीान यज्ञ मं तनमन धन से संलग्न हैं, ऐसा कि पहले के शहीद भी लजा जाएँ। भाषा और वस्तु देह और आत्मा की तरह पृथक नहीं होती है। यह सुस्पष्ट तथ्य है गिरा अरथ जल वीचिसम । भाषा की दरिद्रता वस्तु की दरिद्रता ही तो है।

बिना भाषा के राष्ट्र की कल्पना असंभव है। हमारी विलक्षण गुणग्राहकता का तरीका भी कितना नायाब है कि एक तो बिना लोभ-लाभ के हम इसके लिए उद्यत होते नहीं, लोभ-लाभ से प्रेरित होकर तत्पर होते भी है। तो कहीं मूर्त्ति लगाकर या कहीं संस्था अथवा स्थान का नामकरण कर अपने कर्त्तवय की इतिश्री कर देते हैं, और सीना ऐसे ताने फिरते है। कि लगता है, किसी का अपूर्व उपकार कर रहे हों कि लगता है, किसी का अपूर्व उपकार कर रहे हों। भीतर झाँकने की आवश्यकता महसूसते ही नहीं, मानो हो गई हमारी कृतज्ञता का काम तमाम और जीत लिया हमने अकेले मैदान।

सो, हिंदी दिवस पर भी हम इसी सोच से काम लेते हैं। सभा-बैठकें होती हैं, जश्न होता है, बढ-बढ़ कर अनोखे संकल्प लिए जाते हैं और फिर आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा समाचारपत्रों के द्वारा बढ़ा-चढ़ाकर विज्ञापनबाजी की जाती है, तस्वीरें आती हैं, पैसे बनते है। आखिर, इन दिवसों को और चाहिए भी क्या? खनापुरी ही तो। उसमें तो हमसे बढ़कर कौन दरियादिल हो सकता है? इसी भाँति दिवस, पखवाड़ा, माह समाप्त हो जाते हैं। परिणाम वही ढाक के तीन पात। शेष बच जाती है- लंबी-लंबी डींगे, डपोरशंखी घोषणाएँ उसकी आवृत्तियाँ, अनुगूँज।

थोड़ा विरमकर विचारने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि आखिर कबतक पत्र, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, दूर्वा, अक्षत से निष्प्राण देवता को तुष्ट किया जाता रहेगा? वैश्वानर साधना के व्याज से शव-साधना का कार्यक्रम कब तक चलता रहेगा? हो सकता है उन्हें प्रतीत न हो क्योंकि उन्होंने इस संस्कृति को पूर्णत: आत्मसात कर लिया है पर ढिंढोरा पीटकर सत्य को कबतक दबाया जाता रहेगा? चाहे जितने दिनों तक, किंतु होगा ऐसा ही। एक दिन ऐसा भी आ सकता है जैसा अफगानिस्तान में बुद्धमूर्त्तियें के साि हुआ। उसका सोचिए।

राष्ट्रभाष का जहाँ तक प्रश्न है वह आस्पद किसी ने हिंदी पर कृपा प्रदानकर उपकार भाव से नहीं दिया था। यह तो इसका नैसर्गिक अधिकार था, बल्कि इसके माध्यम से उन्होंने संपूर्ण राष्ट्र को जोड़कर राष्ट्रीयता का उन्मेष किया था। आधार मजबूत किया था। ऐसा करना उनकी विवशता थी। बाद में चाहे मुकर जो जाएँ, और ऐसा ही हुआ भी, स्व० राजगोपालाचारी और स्व० सुनीति कुमार चटर्जी ने मुक्तकंठ से हिंदी का यशोगान किया था, महात्मागाँधी के स्वर में हामी भरी थी, हिंदी की अकूत क्षमता से अभिभूत जो थे किंतु आज? जरूरत पड़ी तो खूँ से सींचा हमने गुलशन वक्त आया तो कहते तेरा काम नहीं दयानंद, रवींद्र, बंकिम, सुब्रहण्यम भारती सबों ने एक स्वर से हिंदी की अभ्यर्चना की थी पर राजनीति तो द्विजिहब सर्पिणी होती है। हिंदी राष्ट्रभाषा अब भी है, कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कामरूप तक। प्रमाण ढूँढना हीं हो तो व्यवसाय तीर्थ, रेल, चलचित्र, फिल्मी गीतों में आसानी से ढूँढा जा सकता हैं हिंदी कहीं बाहर से नहीं आई, भारतीय मिट्टी में उपजीं यहाँ यायावर नागार्जुन की इन पंक्तियों को उदृत करना समीचीन होगा - कहाँ बोली जाती है हिंदी? बल्कि यह पूछना ठीक होगा कि कहाँ नहीं बोली जाती है हिंदी? कहाँ नहीं समझी जाती है? यह समूचे देश की समझी भाषा है, केवल उत्तरवालों की बपौती नहीं है। साधु-संतों, फकीरों- दरवेशों, घुमंतुओं-वनजारों, सिपाहियों हरकारों, बनियों- सौदागरों, पंडितों- मौलवियों, कारीगरों-दस्तकारों के जत्थे हजारों साल से दूर-दूर घूमते-फिरते रहे हैं। उनमें से गूँगा एक प्रतिशत भी नहीं रहा होगा। सो अभिव्यक्ति

का यह प्रबल माध्यम हिंदी उन्हीं पूर्वजों की देन मानता हूँ मैं अखिल पूर्वजों की देन।

कमंडलुफेरी साधुओं को कानखोलकर सुनना चाहिए कि हिंदी को जानते थे- गासदितासी, एफ. ई. के. ग्रियसीन। हिंदी से परिचित थे- बीम्स, केलॉग, पादरी एथरिंगटन, हिंदी की शक्ति-क्षमता से अवगत है- समेकेल, फादर कामिल बुल्के, बारान्निकोब, दीमशित्स, अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर।

स्टेशनों पर, मेंडरों के बीच, कुलियों के बीच, रिक्शावालों के बीच, स्टॉलों पर, टमटमवालों के बीच, होटलों में, सब्जी बिक्रेताओं के बीच, पान बिक्रेताओं के बीच, जूते पॉलिश करने वालों के बीच, सँपेरों के यहाँ, मदारियों के यहाँ, रामलीला-नौटंकी-जात्रापार्टी विदेशिया वालों के यहाँ, फेरी वाले और ठेलेवालों के यहाँ, ईंट ढोनेवाले, राजकर्मी, काष्ठकर्मी, लौहकर्मी, गैरेजों, मीलों, कारखानों के बीच हिंदी के विराट् रूप के दर्शन आपको सहज रूप में अनायास होंगे।

स्पष्ट है कि इनकी भाषा में राजकाज कर वोट की प्रयोगशाला के जंतुओं की सत्ता में भागीदारी हमारा इरादा नहीं। यही अंग्रेजियत है जिसे उनके वारिस ढो रहे हैं। अतएव हिंदी नहीं जानने का अभिन्य करते हैं हम। कन्वेंटी हिंदी और अफसरी हिंदी का चमत्कार तो और गुल खिलाने वाला होता है, हमारे उत्कट राष्ट्रप्रेम को उजागर करनेवाला । कभी प्रधानमंत्री अटलजी ने कहा था- हिंदी को खतरा है तो स्वयं भारत में, विदेशों में नहीं। लोकसभा में हिंदी की दशापर तरसखाकर मुलायमसिंह यादव को कहना पड़ा था- दम होतो जिसका प्रतिनिधित्व करने आए हो उसके बीच जाकर अंग्रेजी बोलकर देखो।

देशी मुर्ग बिलायती बोल।

खुसरो की आत्मीया, जायसी के प्रेम की बोल, कबीर के अटपटेस्वर का मूर्तरूप, रहीम की मधुरवाणी का कोष, रसखान की रससिक्त धारा का अक्षय स्रोत हिंदी से यदि ईर्ष्या किसी को है तो वह राजरानीत्व को, पट्टमहिषीत्व को। वह भी आज से नहीं, आरंभ से ही, आदिकाल से। कभी फारसी को, फिर अंग्रेजी को और फिर किस-किस को नहीं।

हिंदी की दशा-दिशा पर जब हम विचार करते हैं तो विचित्र विरोधाभास मालूम पड़ता है। माल महाराज का मिरजा खेले होली। चौदह सितंबर उन्नीस सौ उनचास को केंद्र सरकार की राजभाषा के रूप में हिंदी को मूर्द्धानिषिक्त किया गया था। भारतीय संविधान के सत्रहवें भाग में तीन सौ तैंतालीस से तीन सौ इक्यावन तक - नौ अनुच्छेदों में इसकी विस्तृत चर्चा है। पर पंद्रह वर्षों का अंतराल देकर बड़ी ही चालाकी से उसके राहु को भी उसके साथ चिपड़ा दिया गया था। न जाने उन दिनों क्यों हिंदी वालों की मति मारी गई थी- काउवेल्ट के जो ठहरे! वह पंद्रह वर्ष आजतक समाप्त नहीं हुआ। और न कभी समाप्त होगा भी। लगता है- जस जस सुरसा वदन बढ़ावा। तासु दुगुन कपि रूप दिखावा। हिंदी विरोध में जनमी, विरोध में पली- धिक् जीवन! पाता ही आया जो विरोध। यही तो उसकी नियति रही है। हमारी स्वतंत्रता की आधी शती जा चुकी। क्या हम जान सकते हैं कि भारत के सर्वोच्च न्यायालय में बहस किस भाषा में स्वीकृत है? संघ लोक सेवा आयोग में अंग्रेजी की अनिवार्यता क्यों है? देश की सर्वोच्च संस्था कार्यपालिका, न्याय पालिका और विधायिका किस भाषा में डार्य करती है? राष्ट्रभाषा की यह दशा किस दिशा की संकेत कर रही है?

हिंदी को खतरा है तो केवल राजनीतिक छलछंद से। उदारीकरण, भूमंडलीकरण, कंप्यूटरीकरण, इंटरनेटीकरण, उत्तर आधुनिकातावादीकरण, उपभोक्तावादीकरण हमारी बहानेवाजी की अग्नि में घी नहीं डालते तो और क्या? लोग कहते हैं पोप संगीत और वेलेंटाइन डे की चपेट में सारा भारत आ रहा है किंतु भारतीय संगीत की जितनी बड़ी विरासत हमें प्राप्त है, वहाँ विश्व को पहुँचना अभी बाकी है और बिहू, करमा, पोंगल, वैशाखी, ईद और होली को क्या कहोगे? भरतनाट्यम् ओडसी, कत्थक, कथकली, भाँगड़ा, कुचिपुडि को क्या कहोगे?

रोने का मन तो आँख में गरी खूँटी। षड्यंत्र का अपना कमाल होता है अपना बहाना होता है। हिंदी की संजीविनी शक्ति को क्या करोगे? नगन सत्य है कि हिंदी किसी दरबार का कभी मुखपेक्ष नहीं रही, कभी नहीं। इसकी प्रकृति ऐसी है ही नहीं। इतिहास साक्षी है, स्वयं दरबार को हिंदी के आँगन में आकर कहना पड़ा है- भिक्षांदेहि। हिंदी का कपाट तो सदा-सर्वदा सबके लिए अनवरूद्ध रहा है। यही तो उसकी पूँजी है, शक्ति-सामर्थ्य है, शील और आचार है।

फादर कामिल बुल्डे ने बहुत पहले कहा था- हिंदी भाषा इतनी संमृद्ध और सक्षम है कि सारा कामकाज सुचारु रूप से किया जा सकता है। यह खेद की बात है कि हिंदी भाषियों में भाषा के प्रति स्वाभिमान नहीं जगा।

सम्पर्क : नवकूथान, मोहनपुर,

समसतीपुर-848101

काव्य-कुंज

गज़ल

श्रीकान्त व्यास

गद्दे पे मुफ्तखोर/अब सोने लगे हैं।
मुर्दे भी कफन के लिए रोने लगे हैं।
मिटती नहीं जनाब ऊँच-नीच की खाई।
झोपड़ियों से इन्कलाब होने लगे हैं।
भेड़िये ने उड़ाई बकरे की नींद है।
मुंडेर से भी कबूतर खोने लगे हैं।
सूरज का अपहरण बादलों ने कर लिया।
शोक में दीये नयन भींगोने लगे हैं।
रोशनी की बारिश में भींग रहे जनाब।
व्यास को अब अंधेरे डूबोने लगे हैं।

संपर्क: पोस्ट बॉक्स-16
जी० पी० ओ०
पटना-800001(बिहार)

ऊर्जा की पहचान

परमानंद झा प्रभाकर

अपने अंतर की ऊर्जा को भी पहचान सिपाही
कर कुछ ऐसा जगतीतल को कर हैरान सिपाही
मिले विफलता कभी तो हिम्मत हार न देना
घुटने टेक, शत्रु के सम्मुख गर्दन वार ने देना
हार-जीत की शूर कहाँ, परवाह किया करते हैं
बढ़कर आगे दिशा हवा की बदल दिया करते हैं
शूरों के ही फलते आए हैं अरमान सिपाही
कर कुछ ऐसा जगतीतल को कर हैरान सिपाही
हिम्मत को हथियार बनाले, विजयचरण चूमेगी
और सफलता की किरणें असफलता से फूटेंगी
हिम्मतवालों ने ही तो इतिहास बदल डाला है
हिम्मत के जादू से जग को अचरज में डाला
तू भी अपनी हिम्मत की कुछ दे पहचान
कर कुछ ऐसा जगतीतल को कर हैरान सिपाही

संपर्क: बाल विद्या मंदिर,
गोल्फ फिल्ड, रेलवे कॉलोनी,
माधुरी चौक, समस्तीपुर (बिहार)

गज़ल

रीतेश कुमार

शतरंज का खेल है यह जिंदगी।
गम और खुशी का मेल है यह जिंदगी।
सम्भल-सम्भल कर बढ़ाओ कदम।
न तो हो जायेगी सेल यह जिंदगी।
हम ऐसे मोड़ पर खड़े हैं जहाँ
केवल रेल-पेल है यह जिंदगी।
जिसने हार कर तौबा किया होगा
उसके लिए नकेल है यह जिंदगी।
छोटी आयु में भी खुशी से जियो
उत्साह के बिना फेल है यह जिंदगी।
कुछ ऐसा करके जाओ "रीतेश"
तेजी से भागती रेल है यह जिंदगी।

संपर्क: जागेश्वरी सदन
माधुरी चौक, बहादुरपुर दक्षिणी
वार्ड सं० 24, समस्तीपुर, बिहार

बबूल वाले गांव

आनन्द तिवारी पौराणिक

सकून को तलाशते, बबूल वाले गांव।
बीहड़ों के रास्ते, बिवाई वाले पांव।।
मर्सिया पढ़ रहे, पलास वन,
कैक्टस निहारते, नीम वाले छांव।
मंजीरों और मृंदगों ने भुला दिए स्वर,
माटी की गंध पर, मौसम के दांव।।
अमराई तरसती पपीहे के गान को,
कौवे ही कौवे, बस कांव-कांव।
हादसों के रुदन गान चौपाल गा रहे,
एक कतरा आंसू, नहीं कोई
घिरे उदासियों से, खलिहान, खेत,
छत विहीन झोपड़ी, बुझे हुए अलाव।
पूछता है हर कोई यह यक्ष प्रश्न,
हर निगाह कर रही अपना बचाव।।

संपर्क: श्रीरान टाकीज मार्ग,
महासमुन्द, 493-445 (छतीसगढ़)

गज़ल

डॉ. जसवंत सिंह

जहाँ हिंसा का आतंक न हो,
वह ठाँव ढूँढ़ता हूँ।
जेठ की हर दोपहर में,
बरगद की छाँव ढूँढ़ता हूँ।
जहाँ जिस्म फरोशी न हो,
वह बाजार ढूँढ़ता हूँ।
बाद जिसके पतझड़ न,
आए वह बहार ढूँढ़ता हूँ।
ऊँचे-ऊँचे लोगों में,
ऊँचा इमान ढूँढ़ता हूँ।
देश के पहरेदारों में,
देशाभिमान ढूँढ़ता हूँ।
अपनों के बीच,
अपनों को ढूँढ़ता हूँ
रात जो देखे थे,
उन सपनों को ढूँढ़ता हूँ।

संपर्क : रामबुझावन साहित्य सदन,
सती स्थान, मसौढ़ी, पटना

गज़ल

राजभवन सिंह

मस्जिद में ना खुदा है, न मंदिर में राम है।
इंसान के ही दिल में बस उसका मुकाम है।।
था राज तजा राम ने जिस धर्म की खातिर।
तू राज की खातिर ले रहा उसका नाम है।।
सियाशत शराब है, धरम है दूध की मानिंद।
मतघाल मेलकर यह धंधा हराम है।।
इंसान का कर कत्ल तू मजहब के नाम पर।
मत नाम ले तू राम का, रावण का काम है।।
मर्यादा रखी राम ने ता जिंदगी यहाँ।
तू फेलबंद ही कर रहा सुबह-शाम है।।
फिर का परस्ती छोड़ के इंसानियत को देख।
'बेताब' तेरे जैसों को देता पैग़ामी है।।
तू आग मत लगा वतन में वोट की खातिर।
जो देश जल गया तो खुदा है न राम है।।

संपर्क : पोस्टल पार्क, बुद्धनगर,
पथ-सं०2, पटना-1

काव्य-कुंज

ग़ज़ल

✍डॉ.रामलखन राय

चाहता रहना यहाँ कोई न अपने आप में।
फ़ासला इतना बढ़ा पटती न बेटा-बाप में।
जब चुनावी भीड़ में फिल्मी सितारे आ गये
भूल कर सब प्रश्न जनता खो गई आलाप में।
शामियाने तान कर हम आसमाँ का ले मज़ा
रोज बोते हैं वहम का बीज अपने आपमें।
कौन करता है जुगाली कौन खाता है महज
आप हैं मशगूल केवल लोकतंत्री जाप में।
माँगते हैं अब मजारों से दुआएं आप क्यों
है दुआओं का असर होता कहाँ संताप में।
किस तरह बाँटी गई है रोशनी इस दौर में
जिंदगी हर पल समाती जा रही अभिशाप में।
क्यों न हो बेचैन दिल जब रास्ता हो ना मिले
लोग फँस कट रह गये हैं बस सियासी छाप में।

संपर्क: मंडल निदेशक
नेहरू युवा केन्द्र संगठन, इम्फाल जोन,
डी.सी कम्पलेक्स (पश्चिम)
कमरा सं. ए/03 मेनगेट, ग्राउण्ड फ्लोर,
लम्फेलपाट, इम्फाल-794004 (मणिपुर)

...कोई फिलहाल आया

✍ वंदना वीथिका

हमें घर से सुकुन जब अस्पताल आया
तब मालूम उन्हें हमारा हाल आया।
मौत के बिस्तर पर सो रही थीं साँसें
जगे मेरी ज़िंदगी, ख़्याल आया।
हुई आँखें जब बेजुबान हमारी
होठों पर उनके कई सवाल आया।
बेअसर सब हुई दवाएँ जब उनकी
काम दुआ ही कोई फिलहाल आया।

-व्याख्याता,
मगध-महिला कॉलेज, पटना

पाप-पुण्य की लक्ष्मण रेखा

✍श्री राजेश्वर प्रसाद सिंह

पाप-पुण्य की लक्ष्मण रेखा, जिस चश्में से मैंने देखा।
वह चश्मा है ज्ञान चक्षु का, मानवता को विहसित देखा।
देखा, जगत-जीव मुश्काते, हमने भी पुलकित हो देखा।
हर्ष-विषाद के मध्य मार्ग पर, परिलक्षित है लक्ष्मण रेखा।

मार्ग पुण्य का स्वर्ग दिखाता, वह पापी को नर्क बताता।
स्वर्ग मार्ग 'जेनिथ' को जाता, नर्क बेचारा 'नादिर' पाता।
गृह विहीन वह क्रंदित पापी, वस्त्रहीन वह रोका खाता।
द्रवित हुआ जो पुण्य पखेरु, लक्ष्मण रेखा वही दिखाता।

द्रवित मनुज ने दया दिखाई, पाप-पुण्य की लक्ष्मण रेखा।
दानव-देव का पृथककरण है, मानवता की लक्ष्मण रेखा।
कठिन हिमालय, सागर गहरा, यह धरती है लक्ष्मण रेखा।
जीवन मरण सही दर्शाये, वही धरातल लक्ष्मण रेखा।

ऊँचे शिखर तो है बर्फीला, गगन दिखाई देता नीला।
नील गगन के बीच बर्फ में, देव जनों के अगणित किला।
दानवता तो गई रसातल, भक्षण हेतु घोंघा मिला।
मानवता मन मधुर गुलाबी, देव श्वेत, दानव है पीला।

अन्वेषक मानव, रेखा का, ज्ञानी गुरुओं ने दर्शाया।
अस्थिदान दिया खुद अपना, नाम दधिचि वह कहलाया।
दानी एक शिवि राजा था, पक्षी हेतु हाथ कटाया।
लक्ष्मण रेखा पर है दानी, पाप-पुण्य को नाच नचाया।

अच्छा-बुरा युद्ध करता जब, पाप-पुण्य भी कुश्ती लड़ता।
श्वेत-श्याम में द्वंद्व हुआ जब, मानव तब बुद्धि से लड़ता।
शून्य विवेक दैत्य मूर्छित है, सद्मानव ऊपर चढ़ जाता।
दानवता पर मानवता को, विजय पताका नित फहराता।

नाथ बनो तुम उस अनाथ का, रोगी, वृद्धा को अपनाकर।
दीन दुखी को दवा-दुआ दो, त्यक्तजनों को अंक लगाकर।
अबलाएँ अब हो बलशाली, हीन भावना को दफनाकर।
ऊँच-नीच में हो आलिंगन, वर्ग भेद को दूर भगाकर।

मानव का अपहरण पाप है, रोता अपहृत मानव कैसे ?
पापों में यह पापराज है, चौंसठ जन्म गिद्ध के जैसे।
अपहर्त्ता तू गिद्धराज है, आरपी तेरा काक् भुषुंडी।
ज्ञान समर्पित तुझको करता, उसको तू मत समझ घमंडी।

संपर्क : शिवपुरी,
पटना (बिहार)

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

न्यू इंडिया एश्योरेन्स, चेन्नै के वरिष्ठ मंडल प्रबंधक श्री आई. जयशीलन की अध्यक्षता में पिछले 10 मार्च को आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्‌घाटन करते हुए प्राध्यापिका सुश्री जी. मुमताज ने कहा कि थोड़े प्रयास से ही हिंदी सीखी जा सकती है। कार्यशाला के अध्यक्ष ने इस तरह के कार्यक्रम से दैनिक कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के साथ-साथ राजभाषा के कार्यान्वयन में गति लाई जा सकती है।

प्रारंभ में हिंदी अधिकारी डॉ. ईश्वर करुण ने अतिथियों का स्वागत किया तथा 'संघ की राजभाषा नीति और हमारा उत्तरदायित्व' पर एक व्याख्यान भी दिया। इसके साथ प्रतिभागियों को अभ्यास भी कराया।

अंत में सभी प्रतिभागियों को हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोष प्रदान किया गया। हिंदी संयोजक नारायण स्वामी के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् कार्यशाला का समापन हुआ।

प्रस्तुति : ईश्वर चन्द्र झा, चेन्नै।

विचारधारा से ही साहित्य की रचना संभव
'समय के सामने' संस्मरणात्मक पुस्तक पर संगोष्ठी

विचार कार्यालय, दिल्ली

विचारधारा से ही साहित्य की रचना संभव है और यह सच है कि हर रचना में विचारधारा होती है। ये विचार हैं वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी के, जिसे पिछले दिनों नई दिल्ली के राजेंद्र भवन में राष्ट्रीय विचार मंच की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव की संस्मरणात्मक पुस्तक 'समय के सामने' पर आयोजित एक विचार संगोष्ठी में उन्होंने व्यक्त किए। संगोष्ठी के अध्यक्षीय उद्‌गार में डॉ. त्रिपाठी ने पुन: कहा कि विधा एक तरह से वर्ण व्यवस्था है। किसी भी रचना में जितनी अधिक विधाएँ होती हैं, वह रचना उतनी ही जीवंत होती है।

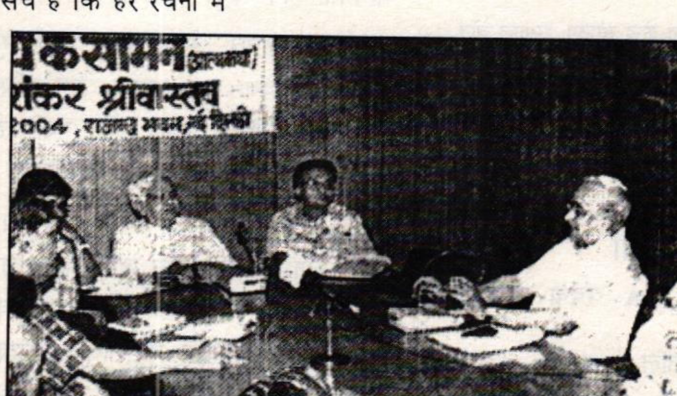

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रेम जनमेयजय ने इस पुस्तक के संबंध में चर्चा के दौरान कहा कि यह पुस्तक की कमजोरी है कि लेखक विराट बिंब की बजाय छोटे-छोटे बिंबों में अपनी बात कहता है। इस पुस्तक में गद्य की चंपू शैली दिखाई देती है और भाषा का प्रवाह भी अच्छा है। संगोष्ठी में डॉ. धर्मेंद्रनाथ अमन, रमेश चंद्र मिन, राम सुरेश पाण्डेय, रमाकांत शुक्ल के अतिरिक्त परिचय साहित्य परिषद् की अलका सिंहा ने भी अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए, पवन माथुर ने संगोष्ठी का संचालन किया।

-अंजलि, नई दिल्ली से

''हिंदी-ग़ज़ल की वर्तमान दशा और दिशा'' पर विचार-गोष्ठी संपन्न

पटना-ग़ज़ल शायरी का शऊर है, अत: इसका सृजन इतना सहज नहीं है, जितना आम लेखक समझ लेते हैं। ग़ज़ल की भाषा सहज संप्रेषणीय, किंतु अभिव्यंजनायुक्त होती है। इसका अनुशासन ही इसकी विशेषता है।

जगदीश चंद्र पण्डया प्रणीत ग़ज़ल-संग्रह ''मुहब्बत का सफ़रनामा'' की ग़ज़लें पूरी तरह आश्वस्त करती हैं। ये विचार हैं चर्चित नवगीतकार सत्यनारायण के, जिन्हें वे बिहार-हिंदी साहित्य-सम्मेलन के तत्वावधान में बच्चनदेवी साहित्य-गोष्ठी'' के अंतर्गत आयोजित विचार-गोष्ठी में अभिव्यक्त किए।

संचालन कथाकार डॉ. सतीशराज पुष्करणा ने कहा कि पण्डया की ग़ज़लों में जहाँ गमे-दौरां है, वहीं गमे-जानां भी है। कहीं-कहीं अरबी-फारसी के शब्दों की बोझिलता के बावजूद अपना प्रभाव जमाने में इनकी ग़ज़लें सफल हैं।

डॉ. स्वर्ण किरण ने ग़ज़ल की वर्तमान स्थिति पर असंतोष जताते हुए पण्ड्या की ग़ज़लों में आशा की किरणों का आभास किया। कविवर प्रसिद्ध दोहाकार श्री हारून रशीद ''अश्क'' ने उर्दू ग़ज़ल शीर्षक से अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए हिंदी-ग़ज़ल से उर्दू-ग़ज़ल के शिल्प एवं संबंधों की महत्वपूर्ण चर्चा की।

प्रस्तुति : प्रतिभा राज, महेन्द्रू, पटना-6.

हैदराबाद की चिटठी

प्रस्तुतिः डॉ. चंद्रमौलेश्वर प्रसाद

त्योहारः संक्राति और ईद के अवसर पर हैदराबाद के हुसैन सागर के किनारे नेकलेस रोड मैदान में 'अंतरराष्ट्रीय पतंग उत्सव' में ग्यारह जापानी और दो ईराकी पतंगवाजों के साथ विभिन्न राज्यों के चालीस पतंगवाजों सहित विभिन्न राज्यों के चालीस पतंगवाजों ने भाग लिया और विभिन्न प्रकार के पतगों को देखकर दर्शक आनंदित हो उठे।

कलाः सुप्रसिद्ध लेखिका इस्मत चुगताई की तीन कहानियों 'मुगल बच्चे' 'छुई-मुई' और 'घरवाली' का मंचन पिछले दिनों नसीरूद्दीन शाह, उनकी पत्नी रत्ना पाठक शाह और पुत्री हीबा शाह के द्वारा हैदराबाद के रवीन्द्र भारती में किया गया।

पर्यटनः पिछले दिनों 17000 वर्ग फीट पर 'स्नो वर्ल्ड' के नाम से विश्व का सबसे बड़ा कृत्रिम वर्फ मनोरंजन केंद्र की स्थापना की गयी जिसके प्रवेश द्वार पर तापमान 5 डिग्री और गैलरी में यह तापमान शून्य डिग्री से नीच पहुँच जाता है । इस ठंडी नगरी का प्रवेश शुल्क 250 रु० और

बच्चों के लिए 200रु० प्रति घंटा रखा गया है।

साहित्यः हैदराबाद के हिंदी महाविद्यालय में आयोजित 26वें अ० भा० नागरी लिपि सम्मेलन का उद्घाटन पद्मभूषण डॉ. सी. नारायण रेड्डी ने किया। सम्मेलन को संबोधित किया नागरी लिपि परिषद, दिल्ली के प्रधानमंत्री डॉ. परमानंद पांचाल, डॉ. राधेश्याम शुक्ल, प्रो. राजकिशोर पांडेय, प्रो. टी. मोहन सिंह, आरिफ नज़ीर, डॉ. अब्दुल अलीम, डॉ. रेश्मा बेगम, उमेश चन्द्र त्यागी, डॉ. ज्ञान प्रकाश सैनी, सुंदरलाल कथुरिया, पी. आर. वासुदेवन 'शेष', डॉ. गोपाल शर्मा, प्रो. वाई वेंकट रमण राव, डॉ. पदमाजा, डॉ. एस. नारायण राव, अनुपमा रत्नाकर प्रथुणे, डॉ. किशोर वास्वानी, राजेन्द्र मिश्र तथा सी. वी. चारी ने। 'विश्वंभरा'

की महासचिव डॉ. कविता वाचक्नवी तथा डॉ. प्रतिभा पारमार ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में डॉ. ऋषभ देव शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित एक जीवंत कवि संमेलन का संचालन किया अजित गुप्ता और इस अवसर पर प्रो. नेहपाल सिहं वर्मा के संपादन में प्रकाशित एक आकर्षक संस्मारिका का लोकार्पण भी हुआ। असम से सिल्चर में अगले सम्मेलन की घोषणा के साथ इस सम्मेलन का समापन हुआ।

सम्मानः दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की ओर से प्रति वर्ष 40 वर्ष से कम उम्र के युवा साहित्यकार को दिया जानेवाला 'कर्पूर वंसत सम्मान' से इस वर्ष हैदराबाद के युवा कवि द्वारका प्रसाद मायछ को उनके काव्य संग्रह 'जिंदगी मुझको मिली' के लिए उन्हें 11सौ रुपये की राशि, शॉल, स्मृति चिंह और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। 'विचार दृष्टि' की ओर से श्री मायछ को हर्दिक बधाई।

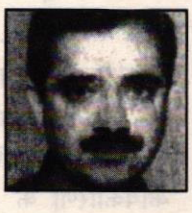

प्रिंस चार्ल्स को इस्लामिक पुरस्कार

आक्सफोर्ड सेंटर ऑफ इस्लामिक स्टडी की घोषणनुसार ब्रिटेन के उत्तराधिकारी

प्रिंस चार्ल्स को इस्लामिक और पश्चिमी सभ्यता के बीच बातचीत को प्रोत्साहन देने के क्षेत्र में उनके प्रयासों के लिए सुलतान हसन अल बोलकिया अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार सुलतान ब्रुनोई के हाथों प्रदान किया गया।

सू की का 59वाँ जन्म-दिन मनाया गया

पिछले एक साल से अधिक समय से अपने घर में नजरबंद म्यांमार की क्रांतिकारी विपक्षी नेता आंग सान सू की का 59वाँ जन्म-दिन देशभर के 400 से अधिक लोकतंत्र के समर्थकों ने मनाया।

दक्षिण के तीन राज्यों में मंच की कार्यकारिणी पुनर्गठित

मंच के राष्ट्रीय महासचिव का दौरा संपन्न

राष्ट्रीय विचार मंच की दक्षिण भारत के विभिन्न राज्यों की शाखाओं के कार्यकलापों को गति प्रदान करने हेतु राष्ट्रीय कार्यकारिणी के निर्देश पर मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने तमिलनाडु, कर्नाटक तथा आँध्र प्रदेश का दौरा किया और इनके पर्यवेक्षण में इन राज्यों की कार्यकारिणी के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का वर्ष 2006 तक के लिए विधिवत निर्वाचन हुआ।

तमिलनाडु

डॉ. मधु धवन की अध्यक्षता में चेन्नई के टी. नगर स्थित दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अय्यगार स्वामी हॉल में। 13 जून 2004 को पूर्वाह्न 11बजे मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर की उपस्थिति में आयोजित आम सभा में मंच की तमिलनाडु शाखा के निम्नलिखित पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए-

संरक्षक: डॉ. बालशौरि रेड्डी

अध्यक्ष: डॉ. मधु धवन

उपाध्यक्ष: डॉ. पी. के बालासुब्रह्मण्यन्

डॉ. एम. शेषन

महासचिव:डॉ. निर्मला एस. मौर्य

संयुक्त सचिव: श्री संजय जोशी

डॉ. मूर्ति

सहा.सचिव: डॉ. पी. आर. वासुदेवन

कोषाध्यक्ष: श्री नारायण कण्णन

सहा.कोषाध्यक्ष: श्रीमती आर. पार्वती

कार्यकारिणी सदस्य:

डॉ. गोविन्द राजन, डॉ. चुन्नी लाल शर्मा, डॉ. जयलक्ष्मी सुब्रह्मण्यन्, डॉ. कमला विश्वनाथन, डॉ. ईश्वर करुण, डॉ. शशि रेखा, सुश्री शांति मोहन, श्री प्रह्लाद श्रीमाली, प्रो. डॉली थॉमस

इस नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को सर्वसम्मति से यह अधिकृत किया गया कि वह कार्यकारिणी के रिक्त दो सदस्यों को अपनी पहली बैठक में मनोनीत कर ले।

सिद्धेश्वर — राष्ट्रीय महासचिव
डॉ. मधु धवन — अध्यक्ष

कर्नाटक

17 जून 2004 को 2.30 बजे अपराह्न मंडल रेल कार्यालय, बैंगलोर के राजभाषा अनुभाग के सभागार में राष्ट्रीय विचार मंच की कर्नाटक शाखा की एक आम सभा डॉ. ए. बी. साईं प्रसाद की अध्यक्षता में हुई जिसमें निर्वाचन अधिकारी डॉ. पी. एन. विद्यार्थी तथा मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर के पर्यवेक्षण में मंच की राज्य कार्यकारिणी का निर्वाचन हुआ। राज्य कार्यकारिणी के निम्नलिखित पदाधिकारी एवं सदस्य सर्वसम्मति से अगले वर्ष 2006 तक के लिए चुने गए:-

अध्यक्ष: डॉ. ए. बी. साईं प्रसाद

उपाध्यक्ष: डॉ. वीरेन्द्र ठाकुर

डॉ. विमला

महासचिव: डॉ. इसपाक अलि

संयुक्त सचिव: एल. बी. जॉर्ज

एम. के राधाविजयन,

सहा. सचिव: बी. के. अनुपमा

कोषाध्यक्ष: सिद्धार्थ शर्मा

इस नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को सर्वसम्मति से अधिकृत किया गया कि वह कार्यकारिणी के 13 सदस्यों को मनोनीत कर ले।

डॉ. पी. एन. विधार्थी
निर्वाचन अधिकारी

सिद्धेश्वर — राष्ट्रीय महासचिव
डॉ. ए. बी. साईं प्रसाद — अध्यक्ष

आंध्र प्रदेश

18 जून 2004 को अपराह् 5 बजे हैदराबाद के नुमाइश मैदान स्थित गाँधी दर्शन मण्डप में डॉ. नेहपाल सिंह वर्मा की अध्यक्षता तथा मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर के पर्यवेक्षण में आयोजित आम सभा की बैठक में राष्ट्रीय विचार मंच की आंध्र प्रदेश शाखा की कार्यकारिणी के निम्नलिखित पदाधिकारी एवं सदस्य सर्वसम्मति से चुने गए-

अध्यक्ष: प्रो. नेहपाल सिंह वर्मा

उपाध्यक्ष: श्री भारत भारती

श्री एम. उपेन्द्र

महासचिव: प्रो. (श्रीमती) रत्नकला मिश्र

संयुक्त सचिव: श्रीमती उमा देवी

श्री जी राजेन्द्र कुमार

सहा. सचिव: श्री जी. परमेश्वर

कोषाध्यक्ष: डॉ. चन्द्र मौलेश्वर प्रसाद

कार्यकारिणी सदस्य:

श्रीमती गुणमाला सोपाणी, श्री साकिब बनारसी, श्री रतनलाल दरक, श्री अमत लाल चावड़ा, श्री पुरुषोत्तम उड़ेल, डॉ. अमर ज्योति जायसवाल

सर्वसम्मति से डॉ. ऋषभदेव शर्मा को आंध्रप्रदेश राज्य के लिए मंच के मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' का ब्यूरो प्रमुख नियुक्त करते हुए उन्हें मुख्य संवाददाता तथा विजयवाड़ा एवं विशाखापटनम के लिए संवाददाता मनोनीत करने के लिए अधिकृत किया।

सिद्धेश्वर — राष्ट्रीय महासचिव
प्रो. नेहपाल सिंह वर्मा — अध्यक्ष

मूल्य-संकट और स्त्री की भूमिका

कविता वाचक्नवी

भारत को विश्व का ज्ञान-गुरु कहा जाता है। संसार हजारों वर्ष से इस ज्ञान की थाह पाने की निरंतर कोशिशें करता रहा है और यह भी सच है कि यह ज्ञान भारत से बाहर लोगों तक पहुंचा अवश्य, वे विस्मित भी हुए, उनके सारे निष्कर्ष धराशायी तक हो गए इस महिमा के सामने और वे और भी यत्नपूर्वक इसका रूपान्तरण करने की कोशिशें करते रहे, कर रहे हैं परंतु भारत का यह कोष इसकी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में आज भी एक अबूझ पहेली बना हुआ है--विश्व समुदाय के समक्ष। पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत के युद्ध के पश्चात् जब भारत का ह्रासकाल आरंभ होता है, तभी आर्यावर्त से इतर किसी जाति, समुदाय, मत, संप्रदाय, वर्ग आदि-आदि का अस्तित्वकाल और आरंभकाल। और यह वह काल है जब भारत अपनी हीनदशा, मूल्यहीन, सामाजिक विघटन, रूढ़ियों, परतंत्रता की बेड़ियों, आक्रमणों इत्यादि से दो-चार होता ही रहा है। इन सब स्थितियों ने निरंतर पतनोन्मुखी एक ऐसे सांस्कृतिक वातावरण का परदा हमारे चहुं ओर तान दिया है कि हम उत्थान के पारंपरिक मार्ग की पहचान तक करने में असमर्थ हैं।

वस्तुत: ऋषियों द्वारा शब्दबद्ध किए गए ज्ञान की जड़ें भारतीय जनमानस में इस तरह गहरे बैठ गई थीं कि ज्ञान ने कर्म में ढलकर एक अखंड विरासत हर आने वाली पीढ़ी को सौंपी। समस्त जीवन मूल्य हमारी संस्कृति में इस तरह रच-पच गए कि वे दैनन्दिन जीवन के पारस्परिक आचरण, परिवेश के प्रति आचरण तथा व्यवहार की वस्तु बन गए। वे केवल शास्त्र का विषय नहीं रहे, जीवन में पुष्पित-पल्लवित होते रहे। इस समूची सांस्कृतिक विरासत को पालने-पोसने गतिमान होने फैलाने का दायित्व उठाती रही भारत कुटुंब संस्कृति, पारिवारिकता के संस्कार, गृहस्थियां। सारी की सारी सांस्कृतिक संपदा, सांस्कृतिक मूल्य घरों में पनपते, पलते हुए दीक्षा व संस्कारों में, आने वाली पीढ़ियों को सौंपे जाते और इसीलिए ''माता निर्माता भवति'' या ''मातृमान् पितृमान आचार्यवान् पुरुषो वेद'' में स्त्री को, मां को 'स्वर्गादपि गरीयसी' तक कहा गया। दया, प्रेम, शालीनता, शिष्टाचार, स्नेह, बलिदान, त्याग, निर्माण, सहिष्णुता, ममता, वात्सल्य जैसे समस्त मानवीय मूल्य स्त्री ने अपने भीतर धारे रखे, उन्हें आचरण में अपनाया। पुरुष ने सामान्यत: न इन्हें अपनाया, वे विशिष्ट हो गए, सुंदर हो गए, अमर हो गए, क्योंकि पुरुषों में जब ये गुण आते हैं तो वे सुंदर हो जाते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगीराज कृष्ण इसीलिए पूज्य हैं कि विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने इन गुणों को अपने जीवन में सदा अक्षुण्ण रखा।

स्त्री नए समाज की निर्माता होती है, समाज और परिवार का सारा सूत्र उसके हाथ में होता है, बुनकर होती है वह, सूत्रधार होती है। इसीलिए उसके दैनन्दिन जीवन के कार्यकलापों के साथ, व्यवहार के साथ, गतिविधियों के साथ संस्कृति एकमेक हुई रहती है और इस तरह सांस्कृतिक क्षरण के भय से समाज, परिवार और राष्ट्र निश्चिन्त।

विचारणीय मुद्दा यह है कि सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रास के इस काल में क्या इस मूल्यहीनता की दोषी भी स्त्री ही है ? कथाकार प्रेमचंद के विचार में तो पुरुष सदा से व आज भी असभ्य, अशिष्ट और पशु है, बर्बर है, मनुष्य नहीं। जब पारिवारिक और सामाजिक धरातल पर स्त्री को उसकी निर्माता की, सूत्रधार की, बुनकर की गौरवमयी भूमिका के अधिकार प्राप्त थे, तब तक सांस्कृतिक गौरव और मानवीय मूल्यों को ऐसा खतरा नहीं था। जिस समाज में स्त्री को सूत्रधार व बुनकर की स्थिति मिलेगी, वही समाज, परिवार व संस्कृति उन्नति करेंगे आगे बढ़ेंगे और जहां स्त्री को उसके इस अधिकार से वंचित कर दिया जाएगा, वहां तो परिणाम भयंकर होने ही हैं--'सर्वा: तत्र अफला क्रिया:''। इन अर्थों में स्त्री की अस्मिता और संस्कृति परस्पर जुड़े हुए हैं क्योंकि सारे सांस्कृतिक मूल्य स्त्री से जुड़े हुए हैं।

प्रश्न यह भी उठता है कि तब वह दुष्चक्र कहां से आरंभ होता है कि हम स्त्री को समाज निर्माण की भूमिका से काटकर अलग कर देते हैं, वस्तु बना देते हैं, वंचिता बना देते हैं ?

परिवार, विश्व की कर्मभूमि है और ये परिवार स्त्री गढ़ती है। बर्बर, हिंसक, असभ्य, अशिष्ट समुदाय जब स्त्री को निजी लाभ, निजी प्रसन्नता, निजी अधिकार और निजी सत्ता के प्रयोजन से प्रयोग करने लगता है युद्ध और यह प्रयोग वह लगभग पिछले पांच हजार वर्ष से करने लगा ही है--तब-तब स्त्री सर्वप्रथम उस समुदाय-विशेष, मनोवृत्ति-विशेष की प्रयोग की वस्तु बनती है, बनी हैं। उसे प्रयोग करके लाभान्वित होने का झूठा दंभ पोसने वाला वर्ग तब धीरे-धीरे स्त्री को धरेलू उपयोग की वस्तु भी समझने लगता है, बनाता है और पुन: स्वयं को अधिक अधिकार संपन्न मानकर, पाकर गर्वित होता है। यहीं से आरंभ होता है--यह दुष्चक्र, जो स्त्री को बना देता है--वस्तु, उपभोग की वस्तु, सारे समाज के लिए उपभोग की वस्तु। तब स्त्री की देह भी किसी के उपभोग की सम्पत्ति व

सामग्री है, उसकी इच्छाएं, भावनाएं, संवेदनाएं तक किसी और के अधिकार में हैं, तन-मन-बुद्धि व आत्मा तक पर अधिकार बनाने की कोशिशें निरंतर बनी रहती हैं। सदियों से चले आ रहे इस दुष्चक्र ने स्त्री को भी प्रभावित किया। उसकी मानसिकता दो व्याघातों से जूझती है। एक ओर तो स्त्री अपने नैसर्गिक गुणों के कारण सहनशीलता और सहिष्णुता का पालन करते हुए लंबी अवधि तक इस दुष्चक्र में फंसी किसी न किसी उपयोग में आती रहती है, या फिर, बदला लेने की मनोवृत्ति पनपती है उसकी मानसिकता में।

यह बदला वह किससे ले ? प्रतिकार किससे ले ? अपने से अधिक प्रभुता संपन्न, अधिकार संपन्न, शक्ति संपन्न से बदला न ले पाने के कारण विकट स्थितियां खड़ी होती हैं। इन स्थितियों का प्रतिकार करने की भावना इसलिए भी नहीं बलवती होती कि यह घर, परिवार, समाज, परिवेश, सब उसके अपने ही हैं बुद्ध और कृष्ण भी कहां मिलते हैं हर अर्जुन या द्रौपदी को। प्रतिकार न ले पाने के कारण भी भयंकर स्थितियां बन जाती है। परिणामस्वरूप कुछ स्त्रियां आत्महत्या करती हैं, कुछ छल-छद्म, कुछ प्रतिहिंसा, कुछ त्रस्त, जूझती, पिसती, घिसटती चली जाती है, या कुछ विपरीत परिस्थितियों में अपने मनोबल को जीवित रखते हुए तमाम विरोधों के सामने भी डट कर खड़ी रह पाती है।

अपने उपयोग को नकारने वाली स्त्रियों तक के विरुद्ध भी समाज का बड़ा वर्ग खड़ा होकर, तरह-तरह के उपाय उन्हें डिगाने, नतमस्तक करने, तोड़ने के करता है। जिनमें घरेलू हिंसा, चारित्रिक आक्षेप, असहयोग, उपहास या तलाक तक के मसले शामिल हैं। ऐसे पूरे परिवेश में स्त्री तीन प्रकार के व्यवहारों के विकल्प अपनाती है--1. शोषित होती रहती है, 2. शोषण को नकार देती है, दूर हो जाती है, अलग हो जाती है 3. स्वयं शोषण करने लगती है। इन तीनों स्थितियों में भी वह वंचिता तो रहती ही है। इस वंचिता से समाज व विश्व भला क्या पा सकते हैं ? जिसके अधिकार में कुछ शेष नहीं, जिसका कुछ अपना नहीं, वह किसी को दे भी तो क्या दे ?

आवश्यकता है कि स्त्री को पुनः उसकी समाज निर्माण की सूत्रधार की भूमिका लौटाई जाए, विवाह का अर्थ उसके लिए सामाजिक जीवन के निर्वासन न हो तथा उसे किसी भी प्रकार के उपयोग, उपभोग की वस्तु या सम्पत्ति मानने की ओछी और घिनौनी मनोवृत्ति पर अंकुश रखने के उपाय किए जाएं। तभी हम पुनः परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के मूल्यों के निरंतर प्रवाह की कल्पना करके मूल्यवान् हो सकते हैं, अन्यथा तो आगे आने वाली नस्लों में कैसे कोई राम होंगे, जो कह पाएं--

''अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण !
रोचते जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''

संपर्क: विश्वंभरा, पो. बा.-13,
खैराताबाद, हैदराबाद-500 004

With best compliments from :—

M/S MRITYUNJAYA INDIA FINANCIAL, COMMERCIAL & MARKETING SERVICES

(A Corporate house agent of LIC, GIC of both Govt. & Pvt. Companies)

Requires - Founder Associates, Network Leaders, Associate Consultants, State Field Managers, Regional Field Managers, Motivators, Trainers.

Responsibilities :— To develop team work in their areas concerned Contact immediately with detailed bio-data/resume candidates having experience in networking would be preferred.

Our Aim—To deal with Insurance/Education/FMCG/Financial products by the end of 2005.

—: Registered Office :—

MRITYUNJAYA INDIA FINANCIAL, COMMERCIAL & MARKETING SERVICES.

Mrityunjaya Universe Academy

U-74, 3rd Floor, Tirupati Complex, Shakarpur, Delhi-110092.
Phone : 011-30900423, 32700657
email : mritunjayf_prasad@rediffmail.com

महिलायें ही देश का उद्धार कर सकती हैं

डॉ० श्याम सुंदर घोष

मैं पहले या कई बार कह और लिख चुका हूँ कि भारतीय सांसद और विधायक अपने वेतन भत्ते को आधा करने की घोषणा कर देश के सामने एक आदर्श रखें। बिगड़ती अर्थव्यवस्था और फैशनपरस्ती और उपभोक्तावादी संस्कृति के निरंतर विकास के कारण अब देश एक अजीब दुष्चक्र में फँस गया है। उसे इस नाग-पाश से निकालना जरूरी है। पुरुष-वर्ग यह काम नहीं कर सकता। वह स्वार्थी, लालची और नकारा हो चुका है। अब महिलायें ही देश को बचा सकती हैं। वे ही आगे बढ़ कर सामाजिक परिवर्तन के चक्र को हाथ लगायें, जोर लगा कर उसे गति प्रदान करें।

जाहिर है कि यह काम उनके अधिकार-संपन्न हुए बिना नहीं हो सकता। तो वह अधिकार उन्हें देगा कौन ? क्या भारत का पुरुष-वर्ग देगा ? कतई नहीं। पिछले कई वर्षों से महिलाओं को तेंतीस प्रतिशत आरक्षण देने की बात चल रही है। इस पर सभी राजनीतिक पार्टियाँ जिस तरह नाटक कर रही हैं उससे हम-आप सभी परिचित हैं। जाहिर है कि वे संसद में यह प्रस्ताव कभी आने नहीं देंगे, पास होने की बात तो अलग है। ऐसे में महिलाओं को उनका अधिकार कौन देगा ? इसके लिए महिलाओं को लड़ना होगा।

महिलाएँ राजनीति के अलावा अन्य मोर्चों पर खूब लड़ रही है, चाहे वह पर्यावरण का मसला हो या नारी-मुक्ति का, बाल-शोषण का हो या सामाजिक कुरीतियों का ? उन्होंने अपने अनेक संगठन बना रखे हैं, उन्हें अनेक नाम दे रखे हैं। वे अपने क्षेत्र में बहुत प्रभावी है। लोग उनका लोहा मानते हैं। वे जिस मोर्चे पर उतर आती है उसे फतह करके ही दम लेती है। वे अनेकानेक निर्माण, योजनाओं में शामिल है। वह सब तो ठीक है, पर अब उन्हें एक नये क्षेत्र में, जो उनके लिए प्रायः महानिषिद्ध क्षेत्र हैं, कारगर संघर्ष करना होगा। उन्हें पार्टियों से अलग होकर, लगभग नन-पार्टी लाइन पर, महिला-आरक्षण-बिल को पास करने के लिए भारी आंदोलन करना होगा। ऐसा वे कर सकती हैं, आसानी से कर सकती है।

मैं अर्से से चाहता रहा हूँ कि भारतीय सांसद और विधायक अपने वेतन भत्ते को आधा करें। इसे वे एक सांकेतिक कदम मानकर शुरू करें। यदि वे ऐसा करेंगे, तो समझ जायेगा कि उनके लालची स्वभाव में परिवर्तन होने जा रहा है। अब वे थोड़े में गुजर-बसर करने को तैयार है और देश के सामने एक नया रास्ता खोलना चाहते हैं। पर मुझे नहीं लगता कि मेरी अपली का पुरुष-वर्ग पर कुछ असर होगा। अब यह काम महिलाएँ ही कर सकती हैं। अब उन्हें, सभी पार्टियों को लगभग अप्रासंगिक बनाते हुए, अपना एक अलग संगठन 'भारतीय महिला संगठन' बनना चाहिये ओर राजनीति में धमाकेदार प्रवेश करना चाहिये। उन्हें घोषणा करनी चाहिये कि राजनीतिक पार्टियाँ भले ही सांसदों और विधायकों के लिए आधे वेतन और भत्ते की घोषणा न करें, लेकिन वे करेंगी, करती है। सभी राजनीतिक पार्टियों से अलग उन्हें अपने संगठन की ओर से ठीक उतनी ही महिला प्रत्याशियों के चुनाव के लिए घोषणा करनी चाहिये जितनी संसद या विधानसभा की सदस्य संख्या हो। उन्हें चुनाव में इस घोषणा के साथ उतरना चाहिये कि जैसे वे बहुत कम खर्चे में घर चलाती हैं, वैसे ही देश और दुनिया भी चलायेंगी। देखिये, इसका क्या असर होता है ?

देश आज अनाप-शनाप खर्च से तंग है। कुछ समझ में नहीं आ रहा है हम उससे कैसे निजात पाये। कार्य-संस्कृति का लगभग विनाश हो चुका है। लोगों में हरामखोरी, घूसखोरी, बेईमानी इतनी बढ़ती जा रही है कि इसकी कोई सीमा नहीं दीखती। संगठित क्षेत्र निरंतर हड़ताल कर, या काम रोको और तालाबंदी, घेराव आदि की घोषणा कर, अपने वेतन भत्ते बढ़वा रहे हैं उनके और असंगठित क्षेत्र के बीच एक भयंकर खाई है। राजनीतिक पार्टियाँ अपने क्षुद्र स्वार्थ के कारण, उनके बीच अपने वर्चस्व और जनाधार को बनाये रखने के लिए, उनकी लिप्सा को, सैद्धांतिक जामा पहनाये जा रही है। उन्हें उत्पादन-वृद्धि, कार्य-संस्कृति के विकास, मँहगाई, बेरोजगारी के मसले से कोई मतलब नहीं है। वे केवल अपना प्रभाव और राजनैतिक लाभ की दृष्टि से काम करते हैं।

महिला संगठनों को देश की बागडोर सम्हालनी ही होगी। वे यह आज करें या कल। इधर सुनने में आ रही है कि यदि महिलाएँ मान जायें कि उन्हें बीस प्रतिशत आरक्षण ही दिया जा सकता है, तो महिला-आरक्षण-बिल पास कराने में राजनैतिक पार्टियों की सहमति हो सकती है। यह उनको दबाने का, एक और तरीका है। यदि वे आबादी में लगभग आधी हैं, तो उन्हें पचास प्रतिशत आरक्षण मिलना चाहिए। तेंतीस प्रतिशत क्यों ? यदि पुरुष-वर्ग उनके आरक्षण में कटौती कर तीस-प्रतिशत आरक्षण करना चाहता है, तो उन्हें जवाब में पचास प्रतिशत आरक्षण की माँग कर आंदोलन करना चाहिए। उन्हें घर-घर जाकर, खासकर उन राजनेताओं के घर-घर जाकर, खासकर उन राजनेताओं के घर जाकर कारगर सत्याग्रह विरोध और धरना-प्रदर्शन करना चाहिए, उनके परिवार की स्त्रियों को निरंतर गोलबंद करने की कोशिश करनी चाहिए। जो महिला आरक्षण का विरोध करते हैं। यह क्या कि, यदि पति दिवंगत हो जाये तो पार्टी पत्नी

को तुरंत चुनाव में प्रत्याशी बना लें। विधवा बनते ही उसमें यह योग्यता और क्षमता आ जाती है कि वे क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने के लायक समझ ली जाती है, जबकि सधवा रहते हुए वे इतनी नकारा समझी जाती है कि राजनीति की ओर झाँक तक नहीं सकतीं। पति जब किसी संगीन अपराध में आरोपित होता है, और उसके गिरफ्तार होने और जेल जाने की संभावना बनती है, तब वह अपनी पत्नी को मुख्य मंत्री की कुर्सी तक सौंपने को तैयार हो जाता है, लेकिन जब स्थिति भली चंगी रहती है, तो पत्नी को अपने राजनैतिक बैठक खाने में झाँकने तक नहीं देता। इस दुरंगी नीति को नेताओं के घर की महिलाएँ आखिर कब तक समझेगी ?

आज की राजनीति ने लोगों को इतना दुष्ट, लोभी, लालची और सुविधाजीवी बना दिया है कि वे अपना घर भरने के अलावा कुछ सोच ही नहीं सकते। उनकी दुनिया अधिक से अधिक चुनाव-जीत और पद-कुर्सी तक सीमित रहती हैं कुछ को तो अपनी पार्टियों तक की चिंता नहीं रहती। वे निरंतर उसे तोड़ते-फोड़ते रहते हैं। जिस थाल में खाना, उसी में छेद करना आज राजनीति के लोगों पर जैसा, और जितना लागू है, शायद ही किसी और वर्ग पर लागू होता है।

क्या इन बातों के बारे में महिलाएँ नहीं सोचती ? जरूर सोचती हैं, सोचती होगी। लेकिन जरूरत है निर्णायक घड़ी आने की या लाने की। संकल्पबद्ध होने की, खुलकर पुरुषों के विरुद्ध मोर्चा खोलने की। उन्हें आज की राजनीतिक पार्टियों को लगभग अप्रासंगिक और निष्प्रभावी बनाते हुए अपनी स्वतंत्र भूमिका निश्चित करनी है ।देश उनका इंतजार कर रहा है।

संपर्क : गोड्डा,
झारखंड-814133

'किसी दिन के लिए' पर गोष्ठी

रूसी - सांस्कृतिक-केंद्र, नई दिल्ली और परिचय साहित्य परिषद् के संयुक्त तत्वाधान में डॉ. ज्ञान चन्द गुप्त के सद्य: प्रकाशित कविता संग्रह 'किसी दिन के लिए' पर आयोजित विचार गोष्ठी एवं कविता पर एक सार्थक शाम के रूप में याद की जाएगी। रूसी लेखक यूरी बोन्दारेव की 80 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की सुप्रसिद्ध कवि-कथाकार-आलोचक डॉ. रामदरश मिश्र ने और विचारकों में उपस्थित थे डॉ. सुधेश, श्रीमती उर्मिल सत्यभूषण , डॉ. राज कुमार सैनी, डॉ. अश्विनी पारासर और श्रीमती अलका सिन्हा।

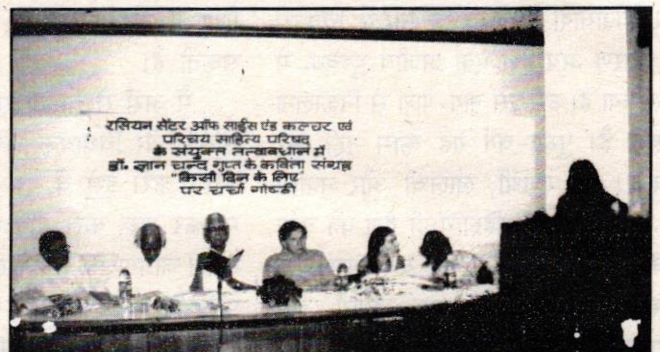

इस अवसर पर रूसी लेखक यूरी बोन्दारेव के सृजन पक्ष पर प्रकाश डालते हुए उन्हें सजीव जीवनानुभवों का सर्जक रचनाकार बताया। डॉ. गुप्त की कविताएं भरोसा जगाती हैं और ये कविताएं जिंदगी और जगत से जूड़ी हैं श्रीमती सत्यभूषण ने पुन: कहा। अलका सिन्हा ने इन्हें सूक्ष्म मानवीय संवेदना से ओत-प्रोत मानते हुए कहा कि असली कविता इसी जमीन से उपजती है डॉ. सैनी इन कविताओं में बाजार की उपस्थिति उस खलनायक के रूप में मानते हैं, जो आज अपने खूनी पंजे कसता हमारी मासूमियत को झुलस रहा है। डॉ. सुधेश ने जीवन में कविता की भूमिका का प्रश्न उठाते हुए कहा कि कविताएं जीवन को संवेदना से भरती हैं। डॉ. पारासर विचार में डॉ. गुप्त की ये कविताएं शीर्षक के अनुरूप भविष्य के प्रति चिंता झलकाती है।

अध्यक्ष पद से डॉ. रामदरश मिश्र ने डॉ. गुप्त की कविताओं की सराहना करते हुए बताया कि ये कविताएं पाठक को अपने साथ लगा लेती हैं। और व्यक्ति के सामाजिक सरोकारों का गहरा साक्षातकार कराती है। कार्यक्रम के दूसरे चरण में आयोजित कवि गोष्ठी में डॉ. विद्या शर्मा सुश्री शारदा मूर्ति, डॉ. उमाकांत गोयल, अमर नाथ 'अमर', सुभाष सेतिया, सिद्धेश्वर, आर के गर्ग आदि ने अपनी कविताएं सुनाई। परिषद के महासचिव इन्दुकांत आँगिरस ने गोष्ठी का संचालन तथा अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुति: इन्दुकान्त आँगिरस
महासचिव
परिचय साहित्य परिषद्
फ्लैट नं०,152 ए, पाकेट -4,
मयुर विहार-1, दिल्ली-91

ज़माना है फ़िदा जल्व-ए-शू पर

✍ डॉ. राजनारायण राय

आज के खुदग़र्ज उपभोक्ताओं को बीता साल भले ही रद्दी अखबार या लुढ़काये कुल्हड़-जैसा लगता हो तो उन्हें लगे, मुझे उसका करिश्मा बार-बार याद आता है। बारह महीनों की छोटी ज़िंदगी पानेवाले ने भले ही आसमान का तारा न तोड़ा हो पर इतना तो मानना ही पड़ेगा कि कुछ कलमुँहों को अपने यशस्वी कर-कमलों से जूते का काला हार पहना दिया। इतना ही नहीं कई सत्ताकांक्षियों को जूता सिर पर धारण करने या उसे चाटने के लिए मज़बूर भी कर दिया। इस तरह पिछले साल ने जूतों को शानदार इज्ज़त बख्शी है। इतनी इज्ज़त तो 4 दिसंबर को राज्याभिषेक के अवसर पर ओसाका के इम्पेरर के द्वारा 85 हजार डॉलर की कीमत वाले स्वर्ण सज्जित और रूबी जड़ित जूतों को पहनने पर भी न मिली थी।

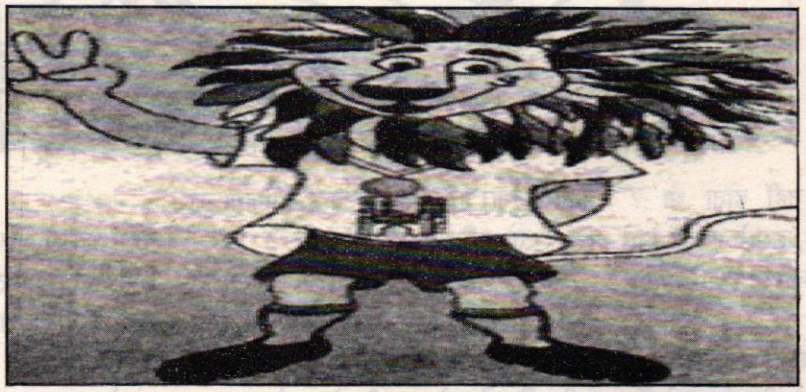

पाद-सौंदर्य का इज़ाफा करने वाले जूते के सम्मान-शान का परचम लहराया तो 1995 के बाद ही।

कहा जाता है, पुरुष जूता पहनता है और नारी जूती। किंतु पिछले साल फैशन की तेज हवा चली तो जूते और जूती में फ़र्क मिट गया। आज का हाल तो यह है कि ज़िंदगी के रेस में जूतों से जूतियाँ बहुत आगे निकल गईं-बेचारे जूते अब शर्म के मारे आँखें चुराये चल रहे हैं। पावर-प्रेक्षकों का कहना है कि जिस नारी के पीछे सत्ता की कुर्सी हो वह जूती नहीं, जूता है। जिस मर्द के नीचे से कुर्सी हट जाय तो वह समाज में जूती है।

मेरे एक दोस्त ने पूछा--रुपसियों के पैरों में क्या होता है ? भई, उत्तर साफ़ है। जिसके मटकते कूल्हे आपको नचा दे, जिसके नर्तित नितंब आपको हिला दे उसके पैरों में जूती नहीं जूता है। जब औरत सत्ता, शराब में डूबती है उसकी खूबसूरत टाँगों में जूती नहीं, जूता आता है। मतलब यह कि इस पोलीथिन युग में जहाँ जूता है, वहाँ सत्ता है। जहाँ नेता, वहाँ जूता।

हिंदी के लेखक भी अजीब हैं। मनचाहे शब्द में फ़ारसी का ''ख़ोर'' प्रत्यय जोड़कर ये नये-नये शब्द गढ़ते चले जा रहे हैं। नशाख़ोर, आदमख़ोर, हरामख़ोर, रिश्वतखोर, घूसख़ोर आदि शब्द नए सिक्के की तरह इन दिनों चल रहे हैं। हमारा देश तो अध्यात्मवादी है। फिर इन शब्दों की क्या ज़रूरत पड़ी है, यह मेरी समझ के बाहर है।

इन दिनों खोरों के हुजूम में जूतख़ोर भी शामिल हो गए हैं। पर हैं सबसे पीछे। इसलिए ज़माने की बैक बाइटिंग करते हुए अवसाद में ऐसे लोग डूब जाते हैं। वे कहते हैं, जब रिश्वतख़ोर, घूसख़ोर, कमीशनख़ोर, आदमख़ोर राष्ट्र-गौरव का संवर्द्धन कर रहे हैं, ऊँची कुर्सियों पर बैठकर। तो हम लोगों को ऐसे जायज हक से क्यों वंचित किया जा रहा है ? इस लोकतंत्र में जूतख़ोरी को भी। न्यायालय हो या नृत्यशाला, सरस्वती-मंदिर हो या शिशुपालन-केंद्र--सर्वत्र लोग जूता खानेवाले मिल जाते हैं। इससे साफ़ ज़ाहिर होता है, जूता प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थ है।

जूता चलाना और चाटना--ये दोनों कला हैं या विज्ञान ? इस उलझन में न पड़ना ही अच्छा है। पर, यह सब जानते हैं कि राजनीतिबाज़ों के बीच इसे दोनों रूपों में प्रतिष्ठा मिली है।

आजकल मंहगाई, ग़रीबी, घूसख़ोरी आदि को खूब सम्मानित किया जा रहा है। ऐसे माहौल में शू या बूट ने ''स्टेटससिंबल'' के रूप में अपनी पहचान बना ली है। आज वह अपनी किस्मत पर मुस्करा रहा है। श्वान और शू--दोनों इतरा रहे हैं, ऐंठे-ऐंठे चल रहे हैं। जिसके पास शू और श्वान दोनों हों तो उसके क्या कहने ! उसकी आवाज़ में श्वान की खनक होती है और चेहरे पर शू की चमक। इसीलिए तो कहा जाता है, यू शुड लुक लाइक पॉलिस्ड शू।

सुना है, बेटों के पांव में बाप का जूता आ जावे तो उसे दोस्त मान लेने में ही अपनी भलाई है। भई, बाप के पुराने फैशन के जूते में आज का होनहार नूरे-चश्म अपना पांव डालकर अपनी नाक क्यों कटवाए बैकवर्ड कहवाकर ? मज़ेदार बात है, बेटे का जूता पहनकर बाप तो मॉर्डन बन जाता है, पर बापू का जूता पहनकर बेटा निपट गँवार दिखता है।

जूतों की शिकायत रही है कि हिंदी के कवित उन्हें हिकारत-नफरत भरी नज़रों से देखते हैं। भक्तियुग हो रीतियुग हो, द्विवेदी युग हो या प्रसाद युग, कवियों ने मुक्त कंठ से नारी-सौंदर्य का गुण-गान

किया। सौंदर्य-लोभी, नारी-चरण के उपासक रहे पर इस सौंदर्य-विधायक जूते का नामोल्लेख तक नहीं किया। उनकी निगह नुपूर-बिछिया, पायल, पायजेब, मेंहदी-महावर की अलौकिक छवि में ही डूबी रही। शैंडल-शू के जलवे पर गई ही नहीं। जब मुआ पायल काव्य-सृजन के लिए प्रेरणा दे सकता है तो पा अफ़ाज सौंदर्य-प्रतियोगिता में सबसे मात दे सकता है तो निठल्लों के गोरख-धंधे साहित्य में उसे स्थान न मिले, यह कम आश्चर्य की बात है नहीं।

पुराणकारों से आज जूते पूछ रहे हैं कि आज शिक्षा-संस्थानों, कार्यालयों आदि में हमारा बेधड़क प्रवेश, क्या, इस्तेमाल हो रहा है, तो पुराने ज़माने में मल्लयुद्ध, गदायुद्ध, वाक् युद्ध के साथ उपानह या पदात्रियुद्ध नहीं होता था ? ज़रूर प्रचलित रहा होगा, हमारे पूर्वजों को सच कहिए तो जान-बूझकर उपेक्षित किया गया है।

एक सवाल बार-बार उठाया जाता है कि जूता क्या है ? जूते के दीवाने कहते हैं, यह क्या नहीं है ? यह अत्याधुनिक ब्यूटी एड है, शान व श्रृंगार है, दूरमारक कारगर हथियार है, उसे फेंककर दुशमन पर वार करें तो अस्त्र, नहीं तो शस्त्र। शू हो या शैंडिल--यह है पापोश क्योंकि पैरों को ढूँढता है। अफ़्राज है क्योंकि पैरों के साथ-साथ पहनने वालों को भी ऊपर उठाता है, पा-ए-माल है क्योंकि चरणों की यह दौलत है।

जिस युग को प्रदूषित करने की भरपूर चेष्टा की जा रही है वह कंटेस्ट या कंपिटिशन का है। श्रृंगार-प्रसाधनों यानी ब्यूटी एड्स की प्रतियोगिता में शामिल हैं कई चीजें पर जीत सेहरा मिला तो सिर्फ बूट को ही। रुपसियों का श्रृंगार तब तक पूरा नीं माना जाता जब तक ब्रा-बिकनी के साथ-उनके चरण-सौंदर्य-वर्धक शू या बूट नहीं। मैं तो कहता हूँ कि पुरुष को अपनी जिस्मानी सुंदरता दिखाने के लिए सिर्फ लंगोट व बूट में ही जनमंच पर चाहिए और रुपसियों को ब्रा, बिकनी और बूट में।

अल्ट्रा मॉडर्न बनने के लिए यह निहायत ज़रूरी है ब्यूटी किंग और ब्यूटी क्वीन का क्राउन पहनने का शौक तभी पूरा हो सकेगा। अन्य पहिराखों को म्यूज़ियम में रखना

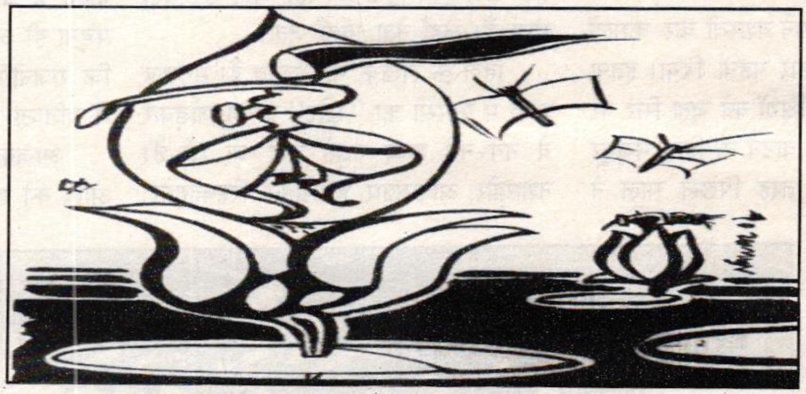

बेहतर रहेगा। हर जगह शॉटकट अपनाया जा रहा है तो पहिरावे में क्यों नहीं ?

एक ज़माना था। सुदरियाँ पैदल ही चलती थीं गलियों में, केलि-कुंजों में, जब उनके सुकोमल तलवे में काँटें चुभते तो प्रेमी-रसिकों को अपनी सेवा से उपकृत करने का स्वर्णावसर मिलता था। ऐसे दिन फेंकुओं को निराश होने की ज़रूरत नहीं। उपकार का मौका मिलेगा--शू पहनने और लेस बांधने का।

इतिहास गवाह है कि पहले राजाओं और बादशाहों के निराले-निराले शौक होते थे। किसी को या बॉबी-संग्रह का, तो किसी को पशु-पालने का। आज का नायाब शौक है--शू और श्वान संग्रह का जिसके पास जितने कुत्ते वह उतना ही बड़ा अफसर, जिसके पास जितने रंग-बिरंगे, छोटे-बड़े, जूते वह उतना ही महान् राष्ट्रनेता।

परंतु शौक जब हद से ज्यादा बढ़ जाता है तो वह पागलपन या सनक हो जाता है। पेन के शौकीन को चोर होते देखा गया है और पुस्तक-प्रेमी को अपराधी। शू-सेंडिल पर जान छिड़कने वाले-तो भ्रष्टाचार में लिप्त नज़र आते हैं।

मानना पड़ेगा, शू-सेंडिल की किस्मत बुलंदी को छूने लगी है। प्रेमोपहार की लिस्ट में इसका नाम न केवल दर्ज़ होने लगा है, बल्कि अब वह इंपार्टेंट आइटम बन गया है। वेलेंटाइंडे के रोमांटिक अवसर को खुशनुमा बनाने के लिए माडर्न प्रेमिकाएँ अब प्रेमियों को पा अफ़्राज "पाँव को ऊँचा उठाने वली" भी भेजती हैं और मिलती हैं तो अपने शू-सेंडिल पर "किस मी" का स्ट्रीकर लगाकर। ज़माना चला गया फ्लाइंग किस्स का, नेत्र-होठ चुंबन का। अब आ गया--शू-किस्स का। जिसमें प्रेमिका का शू-किस्स किया उसने प्रणयाकांक्षिणी का दिल जीत लिया। क़दमबोसी का स्थान ले लिया-शू-किसिंग ने। इक्कीसवीं सदी को स्वागत करना होना पाबीसी से नहीं, शूबीसी से।

इस संसार में कई ऐसे हैं जिन्हेंने अपने आराध्य को नहीं देखा। सूरदास जी थे सूर, पर कृष्ण के पावों में शू नहीं देखी, तुलसी ने भी। आज के कवि को न सिर्फ ईश्वर दिखे बल्कि उनका पूरा पहिरावा प्रसाधन भी। अन्यथा भक्तियुगीन कवियों ने "ईश्वर के जूते" पर कविता न लिखी होती।

आइए अल्ट्रा माडर्न बनें--शू-श्वान प्रधान संस्कृति अपना कर, शू-बोसी का प्रदर्शन कर, स्मैक-सुरा का सेवन कर क्योंकि शू-ज़माना है फ़िदा जल्व ए शू पर।

संपर्क 227,
पंडित वाड़ी फेज़-2,
देहरादून-248007 (उत्तरांचल)

जमुनादास की कुर्सी

डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव

हे भगवान, अब क्या होगा इस कुर्सी का। इतनी भागदौड़ और छीना-झपटी के बाद मंत्री-पद मिला। लेन-देन का सिलसिला अभी शुरू ही हुआ था कि कानून की गाज आ गिरी। दिल्ली की संसद में बैठे नेताओं को क्या पड़ी थी ऐसे कानून बनाने की। उल्टा या सीधा देश चल ही रहा था। यह दिसंबर-जनवरी 2003 का सत्र कितना मनहूस है। सोलह दिसंबर को लोकसभा और राज्यसभा ने पास कर दिया कि विधायकों की कुल संख्या के पंद्रह प्रतिशत ही मंत्री बन सकेंगे। फिर बाकी मंत्रियों का क्या होगा। टूथपेस्ट की ट्यूब से निकले पेस्ट की तरह जितने मंत्री बाहर आ गए, अब वे भीतर कैसे लौटेंगे। इस नये विधान ने तो हमें कहीं का नहीं छोड़ा। भारतीय संविधान में कहाँ लिखा है कि जम्बू मंत्रिमंडल मत बनाना। हाथी के पाँव में आदमी का पाजामा पहनाने की कोशिश कर रहे हैं ये नेता। इस मौलिक सूझ ने तो बड़ा बुरा किया। सरपलस मंत्री लोग अब कहाँ जाएंगे। यह भोज का नेवता देकर भूखे लौटाने के बराबर है। दूसरों की छोड़ें तो अब मेरा क्या होगा ? मैं किस घट लगूँगा ?

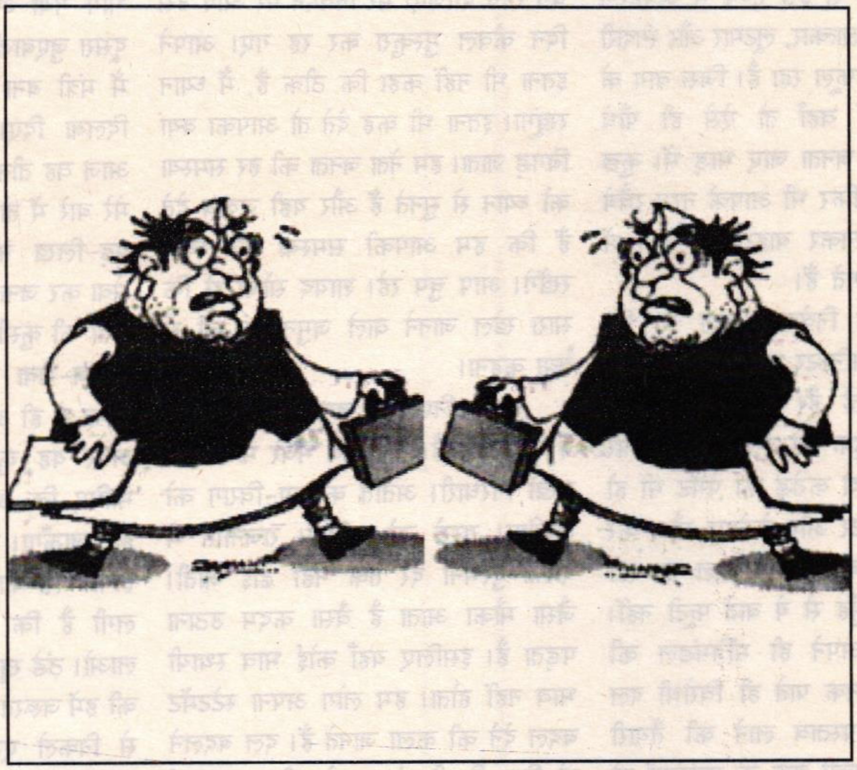

पिछले साल से मुझे मुख्यमंत्री जी के खेमे का मंत्री नहीं माना जाता है। एक समय था जब उनके खेमे में मैं ही मैं था। हर बात में मुख्यमंत्री जी मुझे ही याद करते थे--बुलाओ जमुनादास को। जमुनादास जी, राज्य कर्मचारियों के आंदोलन को आप ही शांत करा सकते हैं। जमुना बाबू, शिक्षक महासंघ नाराज है। उन्हें छः महीने से वेतन नहीं मिला है। आप जाकर उन्हें समझाइए। कैबिनेट में उनका मामला रखा गया है। जल्द ही फैसला हो जाएगा। न जाने ऐसे कितने संकट आए राज्य सरकार पर और इसी जमुनादास ने भागदौड़ करके सबका निबटारा करवाया। आज कुछ चुगलखोरों के कारण मुझे मुख्य मंत्री का विरोधी बताया जाता है। शपथ लेने के पूर्व वे मुझसे इतने नाराज थे कि मंत्रिमंडल में शामिल नहीं करना चाहते थे। मेरे समर्थक तूफान नहीं मचाते तो मुझे मंत्री की कुर्सी नहीं मिलती। जब मैं शपथ ले रहा था तब मुख्यमंत्री का मुँह उतरा हुआ था। यह कुर्सी वे अपने ममेरे भाई के चचिया ससुर को देना चाहते थे। वैसे उनकी चले तो राज्य मंत्रिमंडल की सारी कुर्सियाँ अपने सगे-संबन्धियों को ही सौंप दें। परंतु जनतंत्र भी कोई चीज हैं दूसरे देश के लोग हँसते हैं कि महात्मा गाँधी के देश में क्या-क्या होता है। किसी को भी जितना पचे उतना ही खाना चाहिए। उल्टी करने के लिए कोई नहीं खाता। मगर औकात से ज्यादा खाने पर मुँह-पेट चलने का डर रहता है।

इस देश में क्या-क्या नहीं होता है। नेतागण जन-कल्याण के लिए चिल्लाते हैं लेकिन कल्याण करते हैं अपना ही। जो उनसे बचता है वही जनता में पहुँच जाता है। इसी कल्याण-भावना से कोई अपनी पत्नी को मंत्री बनाता है तो कोई बेटे-भतीजे को। माँ-बेटी भी राजनीति में उतर कर चमक जाती हैं। हिंदुस्तान में चमचों की भी आबादी कम नहीं। चमचे ही एक-एक अनाड़ी और बुद्धिहीनों को चमका कर राष्ट्रीय परिदृश्य के सिंहासन पर ला बैठाते हैं। यहाँ पौरुष का पानी सूखकर पाताल तक जा पहुँचा है। ऐसे में किन्नर गण सिंहासन संभालने को तैयार हैं।

अब मेरे भीतर भय बैठ गया है। कानून की पहली गाज कहीं मुझपर ही न आ गिरे। अपनी कुर्सी कैसे बचाऊँ। किन देवी-देवताओं को गौहराऊँ। कुछ नोंक-झोंक हो गई थी।

चाहते हैं कि वे डूबकर पानी पीते रहें और कोई देखे नहीं। यह कला तो हमें भी आती है। जनता भूखी बैठी रह जाती है और सारा अनुदान हम अपने बैंक खाते में भेज देते हैं। मुख्यमंत्री जी कह रहे थे--जमुनादासजी, आपको मंत्रिमंडल में शामिल कर हमने भारी गलती की। मेरे मुँह में उत्तर बैठा था--सच तो यह है कि आपको चीफ मिनिस्टर बनाकर हाई कमान ने गलती की है। आपने क्या कम गलतियाँ की हैं। जिस मंत्रिमंडल का गठन आपकी सूझबूझ और विवेक से हुआ है उसमें चौदह मंत्री वैसे हैं जो कई अपराधिक मामलों में फँसे हुए हैं। उनकी ही कृपा से इस राज्य में अपहरण फिरौती, मर्डर-बलात्कार, लूटमार और रंगदारी का व्यापार फलफूल रहा है। जिस बाग के माली आप हों वहाँ तो ऐसे ही पौधे लहराएँगे। आम जनता जाए भाड़ में। कुछ नेता जेल में हैं, फिर भी आपके नरम रवैये से वे बीमार बनकर बाहर अस्पताल में उनके दरबार लगते हैं।

मैंने आपसे निवेदन किया था कि रामरतन सिंहा मिनिस्टर को रोकिए। वे हद से बाहर जा रहे हैं। राज्य की अस्सी किलोमीट र सड़क को उन्होंने कागज पर बनवा दिया है। दो करोड़ का पेमेंट भी हो चुका है। मिनिस्टर और ठेकेदार मौज कर रहे हैं और पब्लिक गड्ढे में पैदल नाप रही है। लेकिन मेरे मुँह से ये बातें फूटी नहीं। ऐसा करने में अपने ही मंत्रिमंडल की बेइज्जती थी। भनक पाते ही विरोधी दल अविश्वास का प्रस्ताव लाने की तैयारी करने लगता। दिल्ली तक के पत्रकारों के कान खड़े हो जाते। टी. वी. के चैनल आपका नाम उछालने लगते। हमने घर की इज्जत घर में ही रने दी। इसीलिए सात हत्याओं के आरोपी बाहुबली नरेश यादव को मंत्री की कुर्सी देकर आप उनको हटाने की हिम्मत नहीं कर सकते। सुना है कि कुछ ही दिन पहले आपने कई बार अपनी बी. पी. जाँच कराई है। हर हफ्ते शूगर टेस्ट कराते हैं। भीतर से आप बीमार हैं, तब भी सत्ता की कुर्सी का मोह आपको नहीं छोड़ता।

अपुष्ट समाचार है कि आप कुछ मंत्रियों की छुट्टी करने वाले हैं। मेरा ख्याल रखिएगा। चुनाव में मेरा तीन करोड़ खर्च हो चुका है। इसका डिटेल चुनाव आयोग को नहीं मालूम है। कुछ कर्ज सिर पर चढ़ गया है। वह देनदारी अभी पूरी भी नहीं हुई थी कि मंत्रिमंडल सीमित करने की कानूनी गाज गिर पड़ी। और नहीं तो पंद्रह प्रतिशत मंत्री पद आपके हाथ में हैं। इस अधिकार में कोई माई का लाल आपका हाथ नहीं काट सकता। मुझे मंत्रिमंडल में बने रहने दीजिए। मेरे निवेदन पर आप उस दिन केवल मुस्कुरा कर रह गए। आपने इतना भी नहीं कहा कि ठीक है, मैं ध्यान रखूंगा। इतना भी कह देते तो आपका क्या बिगड़ जाता। हम नेता जनता की हर समस्या को ध्यान से सुनते हैं और यही जवाब देते हैं कि हम आपकी समस्या का ध्यान रखेंगे। आप चुप रहे। शायद सोचा हो कि सारा खेल जानने वाले जमुनादास जी से क्या कहना।

सच मानिए, मुझ जमुनादास को चिंता ने घेर लिया है। मेरी नाव भंवर में है। पत राखो गिरधारी। अतीत के राग-विराग को त्यागिए। गुस्से को थूकिए। राजनीति में दोस्ती-दुश्मनी देर तक नहीं ढोई जाती। जैसा मौका आता है वैसा कदम उठाना पड़ता है। इसलिए यहाँ कोई भाव स्थायी भाव नहीं होता। हम लोग अपना स्टेटमेंट बदल देने की कला जानते हैं। दल बदलने के लिए किसी बंद कमरे की गुप्त वार्ता काफी है। सूरज उगने के पहले पार्टी का सीन बदल जाता है। करोड़ों की पेटियाँ हमारा पीछा करती हैं। सी. बी. आई. अपने माथे का पसीना पोंछती रह जाती है और हमारा काम बन जाता है। खुद मैंने साढ़े सात साल की अवधि में पाँच बार दल-बदल किया है। जहाँ ऊँची कुर्सी देखी वह घूम गए। राजनीति में सिद्धांतवादी या आदर्शवादी बनने के लिए हम नहीं आते हैं। जो आदर्शवाद हमें भूखों मार डाले उस को गले लगाकर क्या करेंगे। आह ! उस दल-बदल का भी एक अपना सुख था। वह सुख अब सपना हो जाएगा। बीते दिनों का आनंद हृदय बनकर उठता रहेगा। संभव है, कुछ लोग हृदयाघात के शिकार हो जाएं अथवा लकवा के झटके से लंगड़ा-लूला बनकर घर बैठ जाएं। सुख की स्मृति भी कितनी घातक होती है सर।

मुख्यमंत्री जी ! मेरी व्यक्तिगत परिस्थिति पर विचार कर मेरे अनुकूल निर्णय लीजिएगा। हम लोग तीन आई हैं। एक शादी बाद दहेज का पैसा लेकर मुंबई भाग गया और वहीं नौकरी कँरने लगा। दूसरा जुएबाजी का अड्डा चलाता था। जब मैं मंत्री बना तो उसे कुछ ठेके के काम दिलवा दिए। उसकी स्थिति सुधर गई। आज वह तीन पिक्चर हॉल का मालिक है। मेरे बारे में तो आप जानते ही हैं। मैं ज्यादा पढ़-लिख नहीं सका। किंतु सामाजिक सेवा कर जनता की सहानुभूति बटोरता रहा। सत्ता की कुर्सी पाने के लिए पहले निःशुल्क समाज-सेवा करनी पड़ती है। मित्रें की प्रेरणा से ही आज इस कुर्सी तक पहुँचा हूँ। अगर यह कुर्सी हिलती है तो निश्चित मानिए कि अगला विधानसभा चुनाव मैं हार जाऊँगा। उससे पार्टी का ही नुकसान होगा। मेरी कान्स्टच्युएन्सी में आवाज उठने लगी है कि अब किसी युवा नेता को लाओ। ठंडे खून वाले चौहत्तर साल के नेता की हमें जरूरत नहीं। मेरे विरोध में यूनिवर्सिटी से निकले एम. ए., बी. ए. के युवक अथवा डॉक्टर-इंजीनियर तक खड़े होने लगे हैं। फिल्मी दुनिया के अभिनेता भी नेतागिरी में दिलचस्पी लेने लगे हैं। राजनीति ने अब पेशा का रूप धारण कर लिया है। जितना ऐशो-आराम राजनेता की कुर्सी में है उतना जिले का कलक्टर बनने में नहीं। कुछ राज्यों में मिश्नर-कलक्टर लोग अपने मुख्य मंत्री को सूर्त्ती-खैनी तैयार कर श्रद्धापूर्वक भेंट करते हैं। अब उनकी क्या वैल्यू रह गई। चार-पाँच साल प्रतियोगी

परीक्षा की तैयारी कर वे अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा में आए। क्या इन्हीं टुच्चे नेताओं को खैनी बनाकर खिलाने के लिए वे आई. ए. एस. बने थे।

ये जमुनादास सात जन्म में भी आई. ए. एस. नहीं बन पाएंगे। मैं तिकड़म से मुख्यमंत्री बन सकता हूँ, किस्मत साथ दे तो प्रधानमंत्री की कुर्सी भी कठिन नहीं है। किंतु आई. ए. एस. की कुर्सी पाना असंभव है। इसलिए मेरे बॉस, मुझे इस कुर्सी पर कुछ दिन और रहने दीजिए। और नहीं तो मेरे बुढ़ापे पर तरस खाइए। जवानी में आजादी के तराने गाने में मैंने भी आपका साथ दिया था। उन दिनों आपने हँसकर कहा था--मैं एक दिन पं. जवाहरलाल नेहरू बनूँगा। आपको याद होगा कि मैंने क्या कहा था। मेरे मुँह से निकला था--मैं सुभाषचंद्र बोस बनूँगा। लेकिन हम दोनों कुर्सी की माया में ऐसे फँसे कि आप न नेहरू बने और न मैं नेताजी सुभाष बन सका।

मैं ऊपर-ऊपर आपका विरोधी जरूर लगता हूँ लेकिन हूँ मैं आपका शुभेच्छु। मैंने आपको कितने संकटों से बचाया है। मौका पड़ने पर मैं सत्य की लीपा-पोती करने में पीछे नहीं रहता। कैसे वे दुर्दिन थे जब पत्रकारों ने आपके चरित्र पर उंगली उठाई थी। अखबारों में छपा कि आपके संपर्क और आशीर्वाद से एक कुंवारी नौकरानी गर्भवती हो गई। आपके डी. एन. ए. टेस्ट के लिए प्रस्ताव आने लगे। मैंने ही प्रेस कांफ्रेंस में साहसपूर्वक इस चारित्रिक पतन का खंडन किया था और गेंद दूसरे पाले में डालते हुए मैंने कहा था कि यह विपक्ष का षड्यंत्र है। सरकार गिराने के लिए उन्होंने यह अफवाद उड़ायी है। गरीब नौकरानी तो कहीं भी गर्भवती होने के लिए मजबूर है। हमारे मुख्यमंत्री पर यह आरोप सरासर गलत है। आपकी कृपा से सच्चाई पर पर्दा डालना हमें आता है। वह मामला भी भगी लकड़ी की आग की तरह बुझ गया। मुझे तो पता ही था कि आप लंगोट के कमजोर आदमी हैं। उन्हीं दिनों एक आकर्षक आदिवासी युवती के भी साथ आपके कोमल संबंध उजागर होते-होते रह गए थे। जमुनादास ने आपकी कब नहीं रक्षा की है। पत्रकार के छोटे भाई को मैंने मेडिकल कालेज में सीट दिलवायी तब वह मामला कुएं में गिरी अंगूठी की तरह गहरे तल में जाकर धंस गया।

मेरा तो सुझाव है सर, जब वर्तमान मंत्रिमंडल को शार्टकट ही करना है तो क्यों नहीं आप उन्हें निकाल बाहर करें जो दूसरी जाति के हैं। आज अपनी ही जाति के लोगों पर भरोसा करना उचित नहीं है। भारत की आजादी के छप्पन साल से ऊपर हो गए। महात्मा गाँधी और जवाहर लाल ने तब केवल हिंदू-मुसलमानों को ही मनाया था और इस देश को समझाया था कि मुल्क की आजादी की लड़ाई में न कोई हिंदू है, न मुसलमान। हम सभी भारतीय हैं। परंतु आज यह देश अनेक जातियों में बंट गया है। भारतीयता कागज पर लिखने की चीज भर यह रह गई है। जाति और धर्म की संकीर्ण भावनाओं ने भारतीयता का कचूमर निकाल दिया है। राष्ट्रीय एकता का उद्घोष भाषणबाजी, पोस्टरबाजी, नाटक-नवटंकी और पुस्तकों में ही सुनाई पड़ता है। हम नेताओं ने अपनी मातृभूमि के लिए और कुछ भले न किया हो परंतु जाति, क्षेत्र, भाषा और छोटे-छोटे निहित स्वार्थों को जगाकर अपना काम बना लिया है। यह सारा कुछ कुर्सियों के लिए किया जाता है। मेरे साथ आपका रिश्ता जाति का भी है। आप यह नहीं भूले होंगे कि पचीस साल पहले आपके गाँव में मेरी चचेरी बहन ब्याही गई थी। कुछ भी हो जाय, हँसुआ अपनी तरफ ही खीचता है। फिर आप मेरे प्रति क्यों उदासीन हो रहे हैं ? आपकी आत्मा क्या स्वीकार कर लेगी कि आपकी जाति का एक मंत्री ड्रॉप हो जाय ?

सर, आने वाले दिनों की सच्चाई मुझे मालूम है। जैसे ही आप मेरा फेवर करेंगे, छोटी जाति के विधायक चुप नहीं बैठेंगे। उनमें खुसुर-पुसुर चलने लगेगी। आपको घोर जातिवादी मुख्यमंत्री करार दिया जाएगा लेकिन इससे क्या। आज कौन नहीं अपनी जाति-बिरादरी का पक्ष लेता है। और यह बात क्या झूठ है कि हम ठाकुर, ब्राह्मण, कायस्थ, बनिया, यादव, कुर्मी, दलित या पिछड़ा पहले हैं, भारतीय बाद में ? सभी को एक बड़े शामियाने के नीचे बैठा दीजिए। तो भी पूस-माधा की सर्दी से उनका बचाव नहीं होगा। हम बचेंगे अपनी-अपनी चादर से जो हमने अलग-अलग ओढ़ रखी है। यह चादर ही हमारी जाति है और शामियाना भारतीयता। मेरे मुख्यमंत्री जी, पहले आप घर का चिराग जलाइए, मस्जिद का चिराग बाद में जला लेंगे।

आज की भारतीय राजनीति बहुरूपिए है सर। जब जैसा चाहें पैंतरे बदलती रहिए। जानता को व्यस्त रहने के लिए मंदिर-मस्जिद जैसा कोई मुद्दा दे दीजिए। जितना आनंद और सुख का उपभोग हमने इन पचास-पचपन वर्षों में कर लिया, वैसा आनंद अब बड़ा कठिन है। पब्लिक समझदार होती जा रही है। वह आलोचना करने पर उतर आई है कि नेताओं को इतनी सरकारी सुविधाएँ, वेतन और पेंशन क्यों मिलती है। आपसे कुछ छिपा नहीं है। चुनाव आयोग ने ऐसा शिकंजा कसा है कि हर काम को चुनाव आचार संहिता के चश्मे से परखा जा रहा है। अपने परिश्रम और चतुराई से बटोरे धन का ब्योरा देना कितना अपमानजनक है। हमसे पूछा जाता है--यह डेढ़ करोड़ का बैंक बैलेंस कहाँ से आया। क्या सफाई दें, कैसे सफाई दें। जब इतनी पूछताछ होगी तब लीपापोती कुछ न कुछ करनी ही होगी। मोबाइल फोन और फोटो केमरों ने तो और नाक में दम कर रखा है।

पब्लिक का श्रद्धा-सम्मान नहीं चाहिए। मुझे केवल कुर्सी चाहिए। श्रद्धा लेकर क्या मैं चाटूँगा ? नेता को तो नकद नारायण चाहिए। मंत्री की कुर्सी बनी रहे तो स्वर्ग

भी धरती पर उतर आएगा। हमारे लिए वही भगवान है, राम है, रहीम है। मुझे लग रहा है कि इस जमुनादास के सुख के दिन इने-गिने हैं। बार-बार अपना दिल कठोर कर मन को समझाता हूँ, हे मन ! अपने चीफ मिनिस्टर पर भरोसा कर। लेकिन मन है कि भटक-भटक जाता है।

मैं जितना ही अपनी कुर्सी के बारे मं सोचता हूँ, उतनी ही मेरी दिमागी हालत बिगड़ती जाती है। कभी-कभी तो ऐसा हो जाता है कि सोचता कुछ हूँ और जुबान से फिसल पड़ता है कुछ और। सुनकर आप हँसेंगे। एक जगह हष्टयाम हो रहा था। भक्त लोग कीर्तन-भजन गाने में मगन थे। मेरे समर्थकों ने सुझाव दिया--सर, आप भी कुछ क्षण के लिए अष्टयाम में खड़े हो जाइए। भगवान सारी विघ्न-बाधा दूर कर देंगे। मैं शामिल होकर हरे रामा, हरे कृष्णा, रामा रामा हरे हरे बोलने लगा। पता नहीं कब मेरी जुबान से रामा रामा हरे हरे की जगह कुर्सी-कुर्सी हरे हरे निकलने लगा। एक भक्त ने चकित होकर कहा--आप क्या बोल रहे हें सर ? तभी एक चमचे ने मेरा सपोर्ट किया--टोक टाक मत करो। हमारे सर जो बोल रहे हैं बड़े मौके की बात बोल रहे हैं। आज तक कुर्सी ही इनके लिए राम है। मैं अपनी फिसली जुबान पर अफसोस महसूस करते हुए घर लौट आया।

आपको क्या समझाऊँ सर। बुढ़ापे में शरीर का कल-पुर्जा ढ़ीला हो जाता है। राजनीति का ही क्षेत्र एक ऐसा है जहाँ नेता लोगों के पास बुढ़ापा आने से डरता है। बड़ी-बड़ी बीमारियाँ लिए हम नेता विदेश चले जाते हैं और स्वस्थ होकर स्वदेश लौटते हैं। हम देश चलाते हैं न इसलिए हमारा स्वस्थ रहना बहुत जरूरी है। जिनका देश है उनमें कुछ मर-खप भी जाएं तो कोई फर्क नहीं पड़ता इसलिए जमुनादास की विनती पर ध्यान से विचार कीजिएगा श्रीमान्। दिस इज फार योर कांइड कंसिडरेशन एंड फेवेरेबल ऐक्शन। आज आप मुझे बचाएंगे तो कल मैं आपकी रक्षा करने खड़ा हो जाऊंगा। जाति धर्म भी निभाऊँगा। आपकी कुर्सी की एक चूल तक हिलने नहीं दूँगा। जमुनादास पानी का चंचल प्रवाह नहीं है, पर्वत के कठोर पत्थर हैं। अपने वचन से रत्ती भर भी नहीं डिगेंगे। इसलिए पहले मेरी कुर्सी की रक्षा कीजिए। ईश्वर आपको सुबुद्धि दें।

संपर्क : आर-7,
वाणी विहार, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-59

पेड़ की पुकार

✍ डॉ. ए. वी. साई प्रसाद

पेड़ हूँ मैं अजी सत जुग का
इतिहास हूँ मैं हाँ जी युग-युग का।
दिशा मैने काट अंग काठ गुहा को
लगाया उसने पार तरण तारण को
चिंता ग्रस्त जब हुआ श्रापित राधेय कर्ण
पीठ ठोंक कौंतेय का रितलामा मैंने मुखविवर्ण
मेरी शाखा से धनुष उसने बनाया
टंकार से गुरुजनों का होश उड़ाया
बुद्ध गया का बोधि वृक्ष हूँ मैं
शंकराचार्य का अजन दंड हूँ मैं
विवेकानंद और गाँधी की लाठी हूँ मैं
रवींद्र और रामन की कलम हूँ मैं
दिन ढलते गार अतीत के
दिल बदल गए गार जन के
गोली लगी जब जन मोहन को
हाय राम कह झेला मैंने दुख को
सुन जगत का मूक आक्रंदन
बन मैं सहर्ष चिता का चंदन
जलते जलते ज्वाला मुख से कहा जोर से
महात्मा को नहीं हिंसा की होलिका जलावो अब से
अरे नादानों तुमने तो
यह किया क्या
भाषा और प्रांत के नाम पर
जला रहे हो नादान प्रह्लाद को
अरे देश वासियों !
बंद करो इस मार पीट को
फिर से बोओ बीज सद्भाव को
मत देखो मुझे शंका से
लाओ बीज श्रीलंका से
नये राष्ट्र को फिर से बनाओ
राम कृष्ण शंकर विवेक को ढूँढ लाओ
इस आर्यावर्त को दुबारा स्वर्ग बनाओ।
ओम तत् सत्

संपर्क : अध्यक्ष, रा. वि. मं., कर्नाटक
118, शारदानगर 4 मेन, फेज 2, चौथा ब्लॉक, बी. एस. के. तीसरा स्टेज, बैंगलोर-85 फोन: 26421296

बिहार में भ्रष्टाचार और चापलूसी का राज कब तक ?

विमान विभाग में की जा रही अनियमितताओं और दलाली की जाँच होगी ?

✍ अखिलेश

बिहार सरकार में बहने वाले भ्रष्टाचार के गटर का ढक्कन पशुपालन, दवा, वर्दी, खाद, कोयला, कंबल, मस्टर रोल, पासपोर्ट, पोषाहार, लाल कार्ड, मेधा घोटाला आदि, आदि की तरह बिहार विमानन विभाग में भी खुलता है। प्रजातंत्र के नाम पर राजतंत्र की तरह बिहार सरकार के वर्तमान राजघराना के मात्र पाँच से दस व्यक्ति के अतिरिक्त, इस विभाग से किसी और का सीधा वास्ता नहीं रहने के कारण इस विभाग पर अमूमन किसी की नजर नहीं जाती। विमानों की खरीद और रख-रखाव से लेकर नियुक्तियों तक में जिस कदर अनियमितता बरती जाती रही है, उसका एक लंबा इतिहास है। विमानन विभाग मुख्यमंत्री ने स्वयं अपने जिम्मे रखा है और राजद सुप्रीमों के खसमखास कहे जानेवाले विभागीय सचिव अविनाश कुमार सिंहा कथित रूप से पिछले कई वर्षों से पूरे विमानन विभाग को एक निजी विमान कंपनी की तरह विभाग को चला रहे हैं। निजी विमान कंपनी में तो फायदा होता है, परंतु इस कंपनी का संचालक वो है जिसको इसका फायदा स्वयं को और घाटा बिहार की गरीब जनता के सर पर जाता है। मंत्री के नाम पर विमान की बुकिंग होती है, और राज्य के बहुचर्चित दोनों सदनों के मात्र दो विधायक घंटे पर बीस हजार के दर वाले बड़े दस सीट वाले विमान की सवारी करते हैं। पैसा भरता है, सूबे का गरीब किसान, यह है सूबे की पहचान।

प्रश्न उठता है, इस बिहार जैसे सूबे को चार करोड़ रुपये में अनावश्यक बेरोजगारी बढ़ाने के लिए और मात्र कमीशनखोरी के लिए खरीदे गये चार अमेरीकी प्रशिक्षण विमानों में से एक गया के एयर पोर्ट पर कुत्ते को बचाने में दुर्घटनाग्रस्त बता कर मामला खत्म करना और दूसरे प्रशिक्षण विमान का भागलपुर के एयरपोर्ट पर रात्रि के समय क्षतिग्रस्त करना। यह दुर्घटना तब हुई जब प्रशिक्षण विमान स्थानीय प्रशासन के सहयोग से जीप के हेड लाइट की रोशनी में उतारा जा रहा था जबकि भागलपुर एयरपार्ट पर रात्रि में विमान में एक महिला के भी होने की बात सामने आई है। प्रश्न यह है कि उस प्रशिक्षण विमान में किसी औरत के होने का क्या कारण है ? प्रश्न यह भी है कि क्या विमान को प्रशिक्षण के नाम पर अन्य निजी कार्यों में भी प्रयोग किया जाता रहा है ? और यह एक सच भी है कि इस विभाग का दुरुपयोग हो रहा है। क्या विभाग में बिहार की गरीब और बेरोजगार आम जनता के पैसे से खरीदे गये इन विमानों को वित्त विभाग के नियमानुसार सूबे के अतिरिक्त आय के लिए प्रयोग नहीं कर सकती ? जिससे की बिहार की जर्जर अर्थव्यवस्था को सहारा मिल सके, कम से कम करोड़ों रुपये के अनावश्यक खर्च तो विभाग स्वयं कर ही सकता था। वित्त विभाग के नियमों के अंदर टूरिज्म विभाग, स्वास्थ्य विभाग तथा अन्य सेवाओं के अंतर्गत क्यों नहीं किया जाता ? इसे सरकार अपने सामंती विचारों के लिए प्रयोग जायज है ? क्यों इन अनियमितताओं की जाँच आवश्यक है ?

15 मार्च 2000 को इस विभाग के अधीन चलने वाले बिहार उड्डयन संस्थान के प्रशिक्षु विमान 'स्वाति' की दुर्घटना और इसमें प्रशिक्षक पायलट शचिंद्र चौधरी एवं एक प्रशिक्षु पायलट दिनेश कुमार की मौत के बाद इस विभाग के कार्यकलापों के विषय में लोगों की जिज्ञासा जगी तो घपलों पर से रहस्य के पर्दे के उठने शुरू हो गये थे परंतु ऊँची पहुँच के कारण सब ठंडा, सी.बी.आई. जैसी केंद्रीय जाँच एजेंसियाँ तो अब मात्र एक केंद्र सरकार के रखैल की तरह का ही आम जनता में अपना इमेज बनाते जा रही हैं। इस नाकाबिल सचिव के चलते ही सरकार के लिए शर्म की बात हो गयी है कि एक जनसाधारण के दुर्घटना में मारे जाने पर सरकार कुछ रकम से सहयोग करती हैं। परंतु अपनी सेवा अवधि में इस विमान दुर्घटना में मारे जाने के बावजूद प्रशिक्षक की विधवा को कुछ भी लाभ सरकार के तरफ से नहीं दिया गया। वही गलत सही कर के प्रति माह लाखों रुपये का अवैध लाभ सचिव ने स्वयं कमाया है।

इस विभाग में सामान्य क्रियाकलापों में लगे भ्रष्टाचार के कीड़ों की पहचान के लिए बिहार उड्डयन प्रशिक्षण संस्थान की दुर्दशा का जिक्र जरूरी है, क्योंकि, दुर्दशा के मूल में यही हैं। सन् 1940 में विमान चालन प्रशिक्षण के लिए बिहार उड़ीसा सोसायटी अधिनियम 1860 के अंतर्गत बिहार फ्लाइंग क्लब लिमिटेड की स्थापना हुई, स्थापना के 34 वर्षों बाद 1974 में बिहार सरकार ने इस क्लब को अपने अधीन कर लिया और इसे परिवहन विभाग के साथ कर दिया गया था। सन् 1988 में बिहार फ्लाइंग क्लब को विमानन विभाग के अधीन कर दिया गया। 1990 में विमानन विभाग के लिए अलग से नागरिक विमानन विभाग भी बना दिया गया, जो उड्डयन प्रशिक्षण संस्थान को भी नियंत्रित करता है। इसका विभागीय का खर्च तो बढ़ता चला गया लेकिन रख-रखाव और देख रेख का स्तर गिरता चला गया। अब स्थिति यहां तक पहुँच गयी कि भारत में अनगिनत

कुशल पायलटों को पैदा करने वाले इस संस्थान के पास 'स्वाति' के नष्ट होने के बाद प्रशिक्षण योग्य एक भी विमान नही रहा। विमान की कमी का दिखावा के नाम पर संस्थान के प्रशिक्षुओं को दूसरे राज्यों और निजी संस्थानों में दो लाख रुपये के अनुदान के साथ प्रशिक्षण के लिए भेजा गया, और जनता के गाढ़े पसीने की कमाई बाहर भेज दी गयी। संस्थान के सचिव, प्रशिक्षक तथा अन्य अफसर बिना कम के जनता की गाढ़ी कमाई पर गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि इस विमान चालक प्रशिक्षण संस्थान का प्रशिक्षण शुल्क प्रति घंटा 1740 रुपये था, इस खर्च का 75 प्रतिशत बिहार सरकार वहन करती रही है, जबकि शेष 20 प्रतिशत बिहार सरकार अनुदान के रूप में देती है। बाकी खर्च प्रशिक्षुओं को स्वयं उठाना पड़ता है। वर्तमान में यह दर 3720 रुपए प्रति घंटा है।

विभाग के पास दो इंजन वाले विमानों के रहते हुए यहाँ के छात्र बाइस हजार रुपये प्रति घंटा के दर से देश के बाहर जाकर प्रशिक्षण ले रहे हैं। बिहार सरकार के वित्त विभाग के नियमों के अनुसार छात्रों को बिहार सरकार के विभाग से प्रशिक्षण दिया जा सकता है जिसका पूरा खर्च छात्र स्वयं वहन करेंगे। पूर्व में एक पूर्व मंत्री के बेटे को यह प्रशिक्षण सुविधा दी भी गई है, परंतु अन्य छात्रों को नहीं दिया जा रहा है। यह देशद्रोह और राज्य द्रोह के साथ साथ सूबे के छात्र और जनता के साथ सरासर बेईमानी नहीं तो और क्या है ?

विमानों की इस बनावटी कमी के पीछे विभाग के कथित काहिली और विभागीय सचिव की पैसा बनाओ कि नीति ही पूरी तरह से जिम्मेवार रही। संस्थान के पास प्रशिक्षण के लिए चार 'पुष्पक' विमान और एक 'स्वाति' विमान थे, लेकिन 'स्वाति' विमान तो 15 मार्च 1999 को ही दुर्घटनाग्रस्त होकर नष्ट हो गया, जोकि संस्था में व्याप्त अनियमितताओं का परिणाम था। जबकि प्रशिक्षण संस्थान के शेष पुष्पक विमानों को एक विशेष नियतिके अंतर्गत खराब करके ही रखा गया था, ताकि नये विमानों की खरीदारी निश्चित किया जा सके। विभाग में बेकार में पड़े अन्य एक इंजन के और अन्य दो विमानों की खरीदारी निश्चित किया जा सके। विभाग में बेकार में पड़े अन्य एक इंजन के और अन्य दो विमानों को उड्डयन संस्थान में लेकर आराम से प्रशिक्षण दिया जा सकता था। यहाँ बैठे निर्णय लेने वाले एकमात्र विभागीय सचिव का स्वयं स्वार्थ तो राज्य के दूसरे दूसरे निजी प्रशिक्षण संस्थानों से भी जुड़ा हुआ था। इसके कुछ उदाहरण भी मौजूद हैं, सचिव महोदय पहले भी अपने विभाग के संस्थान से ज्यादा महत्व दूसरे संस्थानों को देते रहे हैं। जमशेदपुर स्थित मजशेदपुर सहकारी उड्डयन प्रशिक्षण संस्थान लि. को अपने विभागीय संस्थान के एकमात्र मुख्य प्रशिक्षक एन. के. सिंह को लिएन पर भेजकर उस संस्थान को चलवाया और उसका विकास किया, इसका कारण इनसे काफी अंतरंगता का बताया जाता है। चूंकि अविनाश कुमार सिंहा स्थानीय न्यू पटना क्लब के कार्यकारी अध्यक्ष बनाये गये हैं,ि जसके सचिव अखिलेश सिह के कारण और एन. के. सिंह हैं, एन. के. सिंह क्लब के सचिव अखिलेश सिंह के रिश्तेदार सो हुआ योकि दोनों एक दूसरे को सहयोग के आधार पर लाभ तय करते रहे हैं। कुछ दिनों पूर्व जमशेदपुर का सहकारी प्रशिक्षण संस्थान पूरी तरह उस मुख्य उड़ान प्रशिक्षक की व्यक्तिगत संपत्ति बनी हुई थी, पत्नी प्रशासनिक अधिकारी, बेटा मुख्य प्रशिक्षक और उनके आज्ञाकारी छात्रगण उस सहकारी संस्थान के सदस्य, जीन पर इस संस्थान के कोष के दुरुपयोग के आरोप में गिरफ्तारियाँ भी हुई न्यायालय में ठगी का मामला अभी चल रहा है। बिहार में भी इन्होंने अपनी पुत्री अपेक्षा सिंह को सरकारी खर्चों पर पी. पी. एल. के अनुमति के बावजूद मात्र अठारह माह में ही सी. पी. एल. का प्रशिक्षण पूरा कर देने का कृति मान स्थापित कर दिया।

अभी वर्तमान में एक अनियमितता की जाँच चालू है, सरकार द्वारा प्रति घंटे के हिसाब से मुख्य प्रशिक्षक को भत्ता मिलता है, और इन्सट्रक्टर को 250 रुपये। संस्थान में किया गया यह कि ऐ. के. मोहन, व्यावसयिक चालन लाइसेंस रखने वाले छात्र से यह काम करा कर के पैसा बना लिया गया। छात्रों के शिकायत पर इसकी जाँच का जिम्मा रामेश्वर सिंह, सदस्य, बिहार विद्युत बोर्ड को दिया गया है।

हर प्रकार से बिहार के इस पूर्व गरिमामयी विमान प्रशिक्षण संस्थान को हर प्रकार से नकारा बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ा गया। जमीन पर ही यंत्र द्वारा सुरक्षित ढंग से उड़ान का प्रशिक्षण देने के लिए यहाँ करीब बीस लाख रुपये की लागत का एक विमान चालन सिमुलेटर भी पिछले चार सात वर्षो से बेकार पड़ा हुआ है। इस मशीन पर आज तक किसी भी प्रशिक्षु पायलट को प्रशिक्षण नहीं दिया जा सका है, क्योंकि, इसे आपरेट करने वाला ही कोई नहीं है। इस कीमती मशीन की खरीदारी के पीछे के राज की कोई पर्देदारी नहीं रह गयी है।

यहाँ ग्लाइडर उड़ान प्रशिक्षण की भी व्यवस्था थी। यह एक बिना इंजन का विमान होता है, जो बाहरी ऊर्जा के इस्तेमाल से उड़ता है। अब इसे रांची स्थानांतरिक कर दिया गया। विभाग में एक ग्लाइडर के पीछे तीन-तीन प्रशिक्षकों की नियुक्ति की गयी थी जाहिर है, कि दो प्रशिक्षक बिना काम के वेतन उठा रहे थे। तीसरे प्रशिक्षक भी जब आराम करना चाहते हैं तो विमान दुर्घटनाग्रस्त करा कर रख दिया जाता था। इस संस्थानप को रोमानिया निर्मित भारत का पहला पावर ग्लाइडर भी मिला था, लेकिन वह यहाँ आते ही दुर्घटनाग्रस्त हो

गया जिसकी मरम्मत आज तक नहीं करायी गयी है।

प्रशिक्षण संस्थान में छात्रों के नामांकन और प्रशिक्षण में धाधंली की बात आम है। पैरवी-प्रभाव के बल पर ही अधिकांशतः नामांकन होते रहे हैं। उड़ान के प्रशिक्षण के लिए एक इंस्ट्रक्टर और विभागीय सचिव द्वारा रिश्वत लेकर प्रशिक्षण कराने का आरोप भी सरकार के निगरानी विभाग द्वारा साबित किया जा चुका है लेकिन जिसके खिलाफ कार्रवाई होनी है फाइल उसी सचिव के अलमारी में बंद है। बिहार सरकार की अराजकता का यह भी एक नायाब नमूना है कि आरोपी व्यक्ति के पास ही कार्यवाही के लिए फाईल भेज दी जाती है, जो स्वयं अपने सेवा विस्तार के लिए लिखता है। तमाम अनियमितताओं के आरोपों के बावजूद इसके विभागीय सचिव अविनाशकुमार सिंहा विगत बारह वर्षों से लगातार सेवा विस्तार लेकर इस पद पर लगातार बने हुए हैं तो ये राबड़ी सरकार की कृपा दृष्टि से संभव है। एक बार स्वयं के अनुशंसा के बाद लिए पुनः सेवा विस्तार से सभी संशंकित है।

देश के इतिहास में बिहार सरकार में सचिव पद के लिए मैट्रिक पास का शैक्षणिक योग्यता रखनेवाले यह विभागीय सचिव राज्य के मुख्य सचिव से ज्यादा वेतन और सुविधाएं प्राप्त कर रहे हैं। पूर्व मुख्य सचिव वि. एस. दुबे ने इस संबंध में फाइल में यह लिखकर लौटाया था कि एक मैट्रिक पास व्यक्ति बिहार सरकार में सचिव पद नहीं ग्रहण कर सकता। इस विभाग के सर्वे सर्वा होने के कारण अपने ही द्वारा स्वयं सिर्फ अपने फायदे के लिए पॉलिसी बनाई और बिगाड़ी जाती है। इनपर सरकार की कृपा दृष्टि का स्तर इतना ऊँचा माना जाता है कि इस विभागीय सचिव के हर प्रस्ताव पर मुख्यमंत्री का आदेश मिल जाना शत-प्रतिशत तय रहा है।

बिहार सरकार, के पास सात विमान और पैंतीस पैंतीस करोड़ के दो हैलीकॉप्टर बेकार पड़े हुए थे। यह भी सत्य है कि पूरे भारत वर्ष के किसी भी राज्य में इतने विमान किसी भी राज्य के पास नहीं हैं। एक पूर्ण स्थापित फ्लाइंग क्लब को कबाड़े में तब्दील दिखाकर प्रशिक्षण संस्थान के नाम पर बेमाने चार विमानों को खरीद की गयी। इस खरीदारी के पहले सचिव महोदय का सपरिवार पूरे अमरीका और पूरे यूरोप की एक माह की तफरीह पर था। इनके विदेश दौरे से लौटने के तुरंत बाद सरकार ने साढ़े तीन करोड़ रुपये का विदेशी मुद्रा की राशि विमान निर्माता शेषना कंपनी को दिया गया। अब विभागीय सचिव के सपरिवार अमेरीका और यूरोप की विदेश यात्रा और वही से खरीदारी के लिए बेमानी सरकारी आदेश के बीच का संबंध तो निष्पक्ष जाँच करने वाले ही तय करेंगे, और नहीं तो बिहार की सोई हुई आम जनता यह समझे कि बोर्फोस दलाली और इन प्रशिक्षण वायुयान की खरीदारी और दलाली में क्या फर्क है।

विमानों की खरीदारी के लिए एकमात्र सचिव के द्वारा एक बनावटी कमी का दिखवा किया जाता रहा है। राजा को चापलूसों से फुर्सत ही नहीं है कि किसी विमान के पुराने जानकार को भी सलाह मशवरे के लिए रखकर कार्य करें। पैंतीस करोड़ के विमान की खरीदारी के लिए क्या किया जा रहा है वह यह है कि विमानों को उड़ान के लिए योग्यता प्रमाण पत्र लेना पड़ता है। प्रमाण पत्र बीस वर्ष से कम आयु के विमानों को वर्ष में एक बार तथा ज्यादा उम्र वालों को छः माह पर कराना होता है। टाटा के विमान तकनीक विभाग द्वारा जहाँ तीन दिन में उड़ान प्रमाण पत्र दे दिया जाता है, वही बिहार में विमान पुराने और बेकार हैं दिखाने और सरकार को बेवकूफ बनाने के लिए अपने विमानन विभाग के यांत्रिक विभाग होने के बावजूद भी तीन से चार माह लगा दिया जाता है। पुनः दो माह के बाद प्रमाण पत्र के लिए विमान लाइन में हैं इस प्रकार सरकार के आँख पर पट्टी बाँधकर विभागीय सचिव द्वारा दोनों हाथों से गरीब राज्य को लूटने का कार्य जारी है। ज्ञात हो कि विमान कभी भी पुराने नहीं हाते, क्योंकि कड़े नियमों के तहत इनके पार्ट पुर्जो को खास उड़ान अवधि या एक विशेष समय अवधि के अंतर्गत बदल देना अनिवार्य होता है। एयर इंडिया के एलायंस विमानों में ज्यादातर विमान बीस वर्ष से ज्यादा पुराने हैं, जिनपर व्यावसायिक उड़ाने हो रही हैं। यह एक सत्य है कि बिहार में जितने विमान हैं उतने पूरे भारत वर्ष के किसी भी राज्य के पास नहीं हैं, कई राज्यों के पास तो आजतक एक भी विमान नहीं है।

ज्ञात हो कि पूर्व वित्त मंत्री तथा वर्तमान में लालू के विरोधी, और अब के लालू विरोधी राज्य में विकास पसंद शंकर प्रसाद टेकरीवाल ने सारी जानकारी के बावजूद इन विमानों की खरीदारी के वित्तीय वर्ष में जहाँ चार करोड़ रुपये विमानन विभाग को अनावश्यक चार प्रशिक्षण विमानों कि अमेरीका से खरीदारी के लिए दिये (वही टूरिज्म के मूलभूत विकास के लिए मात्र ढ़ाई करोड़ की राशि राज्य के आमदनी के लिए नहीं दिया था)।

पटना उच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद मात्र पचास करोड़ रुपये निगम के कर्मचारियों के और उनके परिवार के लिए नहीं दिया गया परंतु एक चापलूस के इशरे पर करोड़ों का विमान खरीद का खेल जारी है। अब मंत्रीमंडल के सामने अड़तीस करोड़ रुपए की कीमत का बी. 200 बिच क्राफट किस्म के जेट विमान की खरीदारी का प्रस्ताव जाने वाला है, जिसे अपनी आत्मा को गिरवी रखकर मंत्री पद से चिपके रहनेवाले मंत्री आँख बंद कर पास कर देंगे।

ज्ञात हो कि बिहार विभाजन के बाद सुपर किंग एयर जेट विमान बी-200, बीच क्राफ्ट की कोई उपायोगिता ही नहीं है क्योंकि यह काफी तेज जेट विमान है, इसकी गति 550 किलोमीटर प्रति घंटा है। बिहार के बंटवारे के बाद बिहार और सिकुड़ चुका है। इस विमान को उतरने के लिए बिहार में मात्र चार एयरपोर्ट ही उपयुक्त हैं परंतु वह भी पूरी तरह ठीक-ठाक नहीं हैं। बिहार की गरीब जनता के खून पसीने की कमाई का अड़तीस करोड़ रुपये का भारी कमीशन सचिव महोदय के जेब में, संभव है, कि इस ठोस आदमनी का स्वाद इन्हें पूरा तो नहीं ही लेने दिया जायेगा।

इस सूबे में जहाँ बेराजगारी, गरीबी और भूख चरम पर है। राज्य में दास वर्षों से कोई रोजगार के अवसर ही नहीं पैदा कये गये, सारे निगम बंद पड़े हैं। जनता भूख से आत्महत्याये करने लगी है। नवयुवक बेरोजगारी से अपराध की ओर बढ़ रहे हैं। वहाँ पहले चार करोड़ रुपये का प्रशिक्षण विमान की खरीदारी जायज है ? परंतु सरकारी चाटुकारों द्वारा विमान खरीदे गये, और दो वर्षों के अंदर बरबाद भी कर दिया गया और पुनः अड़तीस करोड़ रुपये के जेट विमान की खरीदारी की तैयारी है।

देश में तीन हजार व्यावसायिक विमान चालन लाईसेंस रखने वाले पायलट हैं जिन्हें भविष्य में दूर-दूर तक इन्हें कम से कम भारत में रोजगार नसीब नहीं होने वाला है। क्या बिहार सरकार करोड़ों रुपये लगाकर बेरोजगारी बढ़ाने का कार्य कर रही है? जवाब अगर हाँ है, तो यह भी अटल सत्य है कि भविष्य बड़ा ही भयावह होगा, जिसे श्री लालू प्रसाद और उनकी सरकार को भी भुगतना होगा, आम जनता तो भुगत ही रही है।

संपादक,
'तरुण मित्र' राष्ट्रीय हिंदी दैनिक,
उज्जैन कॉम्प्लेक्स,
डाक बंगला रोड़,
पटना-1 (बिहार)

"स्वतंत्र भारत के तत्कालीन नेतृत्व की सबसे भयानक भूल"

✍ डॉ. जगपाल सिंह, संजीव मलिक व दिनेश पुन्डीर

प्रत्येक देश की पहचान उस देश की सभ्यता, संस्कृति व परंपराओं; देश की सभ्यता, संस्कृति व परंपराओं को जीवित रखने वाली व्यवस्थाओं तथा संस्थाओं की संरचनाओं तथा देश के मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता के स्तर के आधार पर की जाती हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले शासन, प्रशासन, उत्पादन, वितरण, राजस्व, शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, सुरक्षा आदि से संबंधित सभी भारतीय मूल की व्यवस्थायें व संस्थायें पूर्णतः जीवित थी तथा व्यक्ति व समाज के निर्माण व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी।

संपूर्ण भारतवासी स्थानीय समाज के रूप में विभाजित भी थे और संगठित भी। इसी आधार पर कहा जाता है--"स्वतंत्रता से पहले भारत देश तो गुलाम था, परंतु ग्रामीण भारत पूर्णतः स्वतंत्र था।"

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के तत्कालीन नेतृत्व ने शासन, प्रशासन, उत्पादन, वितरण, राजस्व, शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, सुरक्षा आदि से संबंधित विदेशी मूल की व्यवस्थाओं तथा संस्थाओं की संरचनाओं को अपनाया।

विदेशी मूल की व्यवस्थाओं तथा संस्थाओं की संरचनाओं के प्रसार को शासन का समर्थन व संरक्षण मिलने के कारण भारतीय सभ्यता, संस्कृति व परंपराओं को संरक्षण व समर्थन प्रदान करने वाली भारतीय मूल की सभी व्यवस्थायें लगभग निर्जीव व महत्वहीन हो गयी।

सामाजिक व मानवीय मूल्यों के संबंध में, विदेशी मूल की व्यवस्थाओं तथा संस्थाओं की संरचनाओं के द्वारा की जाने वाली मांग भारतीय सभ्यता, संस्कृति व परंपराओं के द्वारा की जाने वाली मांग से एकदम विपरीत है।

परिणामस्वरूप ग्रामीण भारत यह तय नहीं कर पा रहा है कि सामाजिक व मानवीय मूल्यों के संबंध में उसको विदेशी मूल की व्यवस्थाओं तथा संस्थाओं की संरचनाओं के द्वारा की जाने वाली मांग को पूरा करना चाहिए या भारतीय सभ्यता, संस्कृति व परंपराओं के द्वारा की जाने वाली मांग को पूरा करना चाहिए ? आज ग्रामीण भारत तथा भारतीयता पूर्णतः भ्रमित व गुमराह है।

इस प्रकार स्वतंत्र भारत के तत्कालीन नेतृत्व के द्वारा शासन, प्रशासन, उत्पादन, वितरण, राजस्व, शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, सुरक्षा आदि से संबंधित विदेशी मूल की व्यवस्थाओं तथा संस्थाओं की संरचनाओं को अपनाने की बहुत ही भयानक भूल के कारण आज केवल भारत तथा भारतवासियों को ही नहीं, बल्कि भारतीयता को भी खतरा पैदा हो गया है।

भारतीय लोकतांत्रिक संगठन,
494/12 बी, कृष्णा कॉम्पलैक्स,
सहारनपुर बस स्टैण्ड के सामने,
मुजफ्फरनगर-245001 (उ. प्र.)

सरकार सांसदों और विधायकों को भ्रष्ट न करे

डॉ० श्याम सुंदर घोष

पता नहीं किस कुसाइत में सरकार ने यह निर्णय लिया कि सांसदों और विधायकों को अपने-अपने क्षेत्र में विकास-कार्य के लिए एक बड़ी राशि दी जाय, जिसे वे, जिला-प्रशासन, के माध्यम से, विकास-कार्य के लिए खर्च करें। इसका अंजाम क्या होगा ? आज राजनीति में जो भ्रष्टाचार है वह सभी क्षेत्र के भ्रष्टाचारों से बढ़-चढ़ कर है। नौकरशाही भ्रष्ट है, सरकारी-तंत्र भ्रष्ट है, तो इसकी एक लंबी परंपरा और इतिहास है। ये भ्रष्टाचार करने के लिए ही बने हैं। पर सांसदों, विधायकों, मंत्रियों से तो यह आशा की जाती है कि देश के कर्णधार होने के कारण न तो भ्रष्टाचार को बढ़ावा देंगे और न खुद भ्रष्टाचार में लिप्त होंगे। पर आज ठीक उल्टा हो रहा है। भ्रष्टाचार में नेता अफसरों को और अफसर नेताओं को, इस प्रकार प्रेरित और प्रभावित कर रहे हैं, नित नये-नये गुर सिखा और आजमा रहे हैं कि लगता है दोनों में ही होड़ लगी है। इसमें कौन अधिक भ्रष्टाचार-विशारद है, कहना कठिन है।

सांसदों और विधायकों को एक ब्रह्मास्त्र मिला हुआ है--विशेषाधिकार हनन का। उसके सारे अफसर नेतओं से कप़ँपते रहते है, उनमें ढब्बू बन कर रहने को विवश है। विशेषाधिकार हनन का मामला चले, और वे सदन में तलब किये जाय, और वहाँ पूरे सदन के सामने जलील हों, यह कोई अफसर नहीं चाहता। बड़े से बड़े अफसर को उसकी औकात बताने के लिए, उसे घिघियाने, मिमियाने के लिए विशेषाधिकार हनन का रामबाण अचूक है। इसका राजनेता गण बिल्कुल एक होकर उपयोग करते हैं। इस मामले में सत्ता पक्ष और विपक्ष, जिस प्रकार एकजुट हो जाता है वह दर्शाता है कि वे इसे अस्तित्व और प्रतिष्ठा का प्रश्न मानते हैं। अफसर से आखिर विपक्षी सांसदों और विधायकों को भी तो निबटना पड़ता है। अफसर विपक्षी सांसदों और विधायकों को कुछ ज्यादा ही अंगूठा दिखाते हैं, सोचते हैं, ये विपक्ष के सांसद और विधायक हैं, कितना क्या कूद-फाँद करेंगे ? इसलिए विपक्षी सांसद और विधायक नौकरशाहों से और भी खार खाये रहते हैं। इसलिए विशेषाधिकार हनन के मामले में सत्ता पक्ष के सदस्यों से, अद्‌भुत रूप से, एक हो जाते हैं।

जिला प्रशासन सांसदों और विधायकों की अवहेलना कर ही नहीं सकता। हमारे देश के कर्णधारों ने ढाँचा ही ऐसा बनाया है कि थाना-कोर्ट-कचहरी सब उनकी मुट्ठी में रहे। सांसद और विधायक राजनेता होने के कारण उन्हें इतने अधिकार हैं कि कोई उनके सामने चूँ-चपड़ नहीं कर सकता। उनका यह डर और प्रभाव पहले भी था, पर सांसद और विधायक के नाम केंद्र और राज्य की एक मोटी राशि होने से उनका रूतवा और भी बढ़ गया है। अब वे इस स्थिति में हैं कि अफसरों को केवल डरा-धमका कर ही नहीं, पैसे खाने खिलाने के प्रलोभन देकर भी अपना प्रभाव बना सकते हैं।

सांसद और विधायक केंद्र और राज्य की राशि को अपनी खानदानी संपति समझते हैं। वे यह राशि विकास के नाम पर जिसको चाहे दिलवा सकते हैं, जिले के आला अफसर उसमें कोई अड़ंगा नहीं डाल सकते। सांसद और विधायक साफ कहते हैं--यह हमारा कोटा है, हम चाहे जैसे, जिस मद में, खर्च करें, चाहे जिस व्यक्ति द्वारा खर्च करें। यदि ऐसी ही बात है, तो सरकार ने इसे जिला प्रशासन द्वारा खर्च करने का प्रावधान क्यों रखा है ? यह दाँत दिखाने के लिए है, जनता को धोखा देने के लिए।

सांसद और विधायक कोश की राशि जिला-प्रशासन द्वारा खर्च हो, उसके मूल में एक गहरा आशय है। यदि यह राशि किसी सर्वदलीय विकास समिति या पंचायत द्वारा खर्च होती है, तो अमलातंत्र को पैसे खाने की वैसी छूट नहीं मिल सकती जैसी आज मिली हुई है। तब यह अमलामंत्र सांसदों और विधायकों की दैनन्दिन कार्यों और चुनाव आदि में क्यों मदद करेगा ? कहा जाता है कि बात चलती है तो बहुत दूर तलक जाती है, वैसे ही पैसे के बारे में कहा जा सकता है कि पैसा चलता है तो बहुत दूर तलक जाता है। सांसदों और विधायकों को, विकास के लिए दिया गया यह पैसा अनेक प्रकार के गुल खिलाता है। क्या सरकार इस बात से वाकिफ नहीं है ? यह पैसा केवल कमीशन खोरी में नहीं जाता, इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव चुनाव-तंत्र पर भी पड़ता है।

मैं यह मानता हूँ कि सभी सांसद और विधायक भ्रष्ट और बेईमान नहीं होते। उनमें कुछ ईमानदार भी हैं। वे खुद पैसे नहीं खाते। उन्हें पैसे खाने की जरूरत ही नहीं है सरकार को देश के और किसी तबके की, आर्थिक स्थिति को लेकर, कोई चिंता भले न हो, पर सांसदों और विधायकों को लेकर बड़ी चिंता रहती है। वह समय-असमय इनके वेतन भत्तादि और अन्य सुविधाएँ भी बढ़ाती रहती है। सांसद विधायक खुद मालिक हैं, जितना लें, वे जितना खाये, जितना लुटायें, उनको रोकनेवाला कौन है ? पर इन्हीं सुविधाओं के लिए कोई तबका

माँग करे, धरना-प्रदर्शन करे, हड़ताल-तालाबंदी की धमकी दे, तो सरकार 'युद्ध देहि' मुद्रा में आ जाती है। जो खाये-पीये-अधाये सांसद और विधायक खुद पैसा नहीं खाते, क्या वे इसकी निगरानी भी करते हैं कि विकास-कोश का पैसा कोई और न खाये, वह पूरा-का-पूरा, विकास कार्य में खर्च हो। शायद वे ऐसा नहीं करते, ऐसा करना आवश्यक नहीं समझते। वे खुद पैसा भले ही न खाये, पर दूसरों को, विशेषकर सरकारी अमला तंत्र को। पैसे खाने की छूट देने के लिए तैयार रहते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें एक-न-एक दिन इसी तंत्र से सहायता लेनी है। इसलिए उस तंत्र को खिला-पिलाकर संतुष्ट और अपने अनुकूल बनाये रखना चाहते हैं। एक तरफ अपनी ईमानदारी भी बरकरार और दूसरी ओर विकास कोश की राशि का चतुराई भरा उपयोग। है न कमाल का हुनर और शैली।

सांसदों और विधायकों को दी गई इस विकास राशि का एक और दुष्प्रभाव-भयंकर दुष्प्रभाव, वह देखने में आता है कि इस राशि को पाने और खाने के लिए उसके क्षेत्र में बेकारों, बेरोजगारों और बेईमानों की एक जमात बन जाती है और वे रात-दिन सांसदों और विधायकों के पीछे पागल और दीवाने बने घूमते रहते हैं। वे न केवल अपनी गैरत और ईमान को गिरवी रख कर इनकी कदम जोशी करते हैं, वरन् सांसदों और विधायकों को यह विश्वास दिलाते रहते हैं कि वे उनके हनुमान हैं। वे, केवल वे ही, समय पड़ने पर उनके संकटमोचन सिद्ध हो सकते हैं। सरकार ने सांसदों और विधायकों को यह विकास राशि देकर उन्हें लगभग गुड़ में लपेट कर रख दिया है, जिसके चारों और मक्खियाँ भिनभिनाती रहती हैं। इससे हर क्षेत्र में चोरों, कामचोरों और छिछोरों की एक जमात खड़ी हो गई है। सांसदों और विधायकों को दी गई विकास राशि चूँकि उनकी ही अनुशंसा पर, उनके ही लोगों को, खर्च करने को दी जाती है इसलिए सरकारी अमलातंत्र की क्या मजाल कि उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य की समीक्षा या परीक्षा करे। वे जानते हैं कि ये सांसद और विधायक के लगुवे-भगुवू और चहेते हैं। इन्हें थोड़ा काम करके, खाने-पकाने और उड़ाने के लिए ही यह राशि दी गई है। इस लिए जाँच अधिकारी कार्य-स्थल पर जाकर एक बार भी कार्य की प्रगति या गुणवत्ता की जाँच की जहमत और हिम्मत प्रदर्शन की बात नहीं सोच सकते। सब काम टेबुल पर ही होता है और कमीशन पा लेने के बाद उनके विपत्र आनन-फानन में पास हो जाते हैं और भुगतान हो जाता है। अभिकर्त्ताओं को कार्यदेश देने के पहले यह तक नहीं देखा जाता कि अभिकर्त्ता की सामाजिक पृष्ठभूमि क्या है ? कहीं यह असामाजिक तत्व तो नहीं है ? उसे ऐसे कार्य करने का कोई अनुभव है या नहीं ? इस मामले में उसका पिछला रिकार्ड कैसा रहा है ? कही उस पर कोई संगीन जुर्म तो आया नहीं है, उस सिलसिले में मुकदमा तो नहीं चल रहा है। यह सब हो भी, तो भी, वह लाखों-करोड़ों का काम केवल इसलिए पा सकता है कि सांसद और विधायक उसके लिए हरी झंडी लिए खड़े रहते हैं, उनहें हरी झंडी दिखाने की जरूरत भी नहीं पड़ती। बुद्धिमान के लिए इशारा काफी है। सरकारी अमला तंत्र सांसद और विधायक के साथ भी हरी झंडी देखते ही समझ जाते हैं कि उनका मतलब क्या है। फिर विकास की पटरी पर भ्रष्टाचार की द्रुतगामी ट्रेन पवन गति से भग चती है। वह पटरी से कब उतरेगी, कब भंयकर दुर्घटना होगी, कुछ कहा नहीं जा सकता।

संपर्क : गोड्टा,
झारखंड-814133

राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संवाहिका

विचार दृष्टि

अब नये तेवर व कलेवर में
विचारोत्तेजक एवं प्रभावोत्पादक आलेख
जाने-माने लेखकों की कलम से
शानदार कागज पर जानदार छपाई
आकर्षक साज-सज्जा में बोलती तस्वीरें
सामाजिक राजनीतिक यथार्थ की कहानियाँ व कविताएँ
सम-सामयिक मुद्दों पर निष्पक्ष एवं निर्भिक विचार व दृष्टि
शिक्षा, सेहत, महिलाओं पर विशेष सामग्री
कला, संस्कृति एवं साहित्य पर गहरी पड़ताल
दिखने में सुंदर और पढ़ने में बेहतर
सदस्यता ग्रहण कर आप अपनी प्रति सुरक्षित कराएँ और एक अच्छी मानसिक खुराक पायें।

प्रबंध संपादक, विचार दृष्टि

विचार दृष्टि

का

अगला अंक

राष्ट्रीय एकता विशेषांक

विद्वान रचनाकारों से आग्रह है कि वे इस विशेषांक के लिए राष्ट्रीयता पर आधारित रचनाएं आगामी 31 अगस्त तक निम्न पते पर भेजनें की कृपा करें।

सिद्धेश्वर
संपादक, 'विचार दृष्टि'
'दृष्टि', विचार विहार, यू-207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-110092
फोन : 22530642, 22059410
एवं
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1
फोन : 2228519

अंतरात्मा की आवाज

सिद्धेश्वर

जब भी राजनीतिज्ञों ने अंतरात्मा की आवाज पर कोई निर्णय लिया है उसने हमेशा भारतीय राजनीति को प्रभावित किया है। आपको याद होगा सन् 1969 में इंदिरा गाँधी ने अंतरात्मा की आवाज पर राष्ट्रपति पद के अपनी ही पार्टी के प्रत्याशी नीलम संजीव रेड्डी को हरवा दिया था जिससे देश की राजनीति पर एक गहरा असर पड़ा था। इंदिरा गाँधी के अतंरात्मा की यह आवाज कांग्रेस के विभाजन का कारण बनी और वह सशक्त नेता के रूप में उभरीं। फिर 1998 में उड़ीसा के मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए भी गिरधर गोमांगो ने अंतरात्मा की आवाज का सहारा लेकर केंद्र में वाजपेयी सरकार गिरा दी क्योंकि लोकसभा की सदस्यता से उन्होंने त्याग पत्र नहीं दिया था और जब वाजपेयी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव आया तो गोमांगो ने भी अपना मत देने लोकसभा आ धमके। लोकसभा में भाजपा के विरोध करने पर लोकसभाध्यक्ष ने उन्हें अपनी अंतरात्मा की आवाज के आधार पर निर्णय लेने का निर्देश दिया। उनकी अंतरात्मा की आवाज से वाजपेयी सरकार गिर गई। फिर मध्यावधि चुनाव में भारी जीत के बाद केंद्र में पुन: वाजपेयी के नेतृत्व में पहली गैर-कांग्रेसी सरकार बनी जिसने अपना कार्यकाल पूरा किया, हालांकि वह भी इस बार आठ माह पूर्व ही लोकसभा भंग कराकर चुनाव करा दिया, जिसका नतीजा आपके सामने आया।

सोनिया गाँधी ने 2004 चुनाव के पश्चात् कांग्रेस संसदीय दल की नेता चुने जाने के बाद भी अंतरात्मा की आवाज पर प्रधानमंत्री बनने से इनकार करते हुए डॉ. मनमोहन सिंह के सिर पर प्रधानमंत्री का ताज रख दिया। इसके पूर्व देवीलाल ने भी अपनी अंतरात्मा की आवाज पर प्रधानमंत्री चुने जाने के बाद भी वी. पी. सिंह को ताज पहनाया। देखना यह है कि सोनिया गाँधी ने अंतरात्मा की आवाज पर इस बार जो फैसला लिया है वह भारतीय राजनीति को किस हद तक प्रभावित करेगा, यह तो आगे आने वाला समय ही बताएगा, पर इतना अवश्य है कि सोनिया जी ने अंतरात्मा की पुकार पर जन भावनाओं का सम्मान करते हुए प्रधानमंत्री जैसे जबावदेह पद पर सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री तथा वित्तमंत्री के रूप में ख्याति प्राप्त एक अनुभवी एवं योग्य व्यक्ति डॉ. मनमोहन सिंह को बैठाया। यह कहना गलत नहीं होगा कि सोनिया जी की अंतरात्मा की आवाज ने पूरे देशवासियों को राहत पहुँचायी तथा प्रधानमंत्री पद ठुकराकर विदेशी मूल के मुद्दे की हवा निकाल दी। सोनिया जी ने, चाहे जिस कारण से हो, ऐसी चाल चल दी जिसके बारे में उनके विरोधी राजग नेता संभवत: स्वप्न में भी नहीं सोच रहे होंगे। सोनिया गाँधी के इस निर्णय को ऋषियों-मुनियों सरीखा त्याग कहना तो सही नहीं पर उनके इस कदम को मामूली भी नहीं कहा जा सकता।

जहां तक सोनिया जी के त्याग का सवाल है उनका यह त्याग राजनीतिक है और राजनीतिज्ञ कभी भी त्यागी नहीं होते, क्योंकि राजनीति तो सत्ता प्राप्ति का खेल है। इसलिए त्याग कभी राजनीतिज्ञ नहीं होते। मुझे ऐसा लगता है कि सोनिया जी को मदर टेरेसा या महात्मा गाँधी कहने वाले विद्वजन, जो उन्हें अंतरात्मा की आवाज पर प्रधानमंत्री के पद को ठुकराने की बात को त्याग कहकर महिमा मंडित कर रहे हैं वे यह क्यों नहीं सोचते कि राजनीति में सिद्धांत और त्याग भी राजनतिक औजार होते हैं जिसके जरिए बिना कोई पद की सारी सत्ता को अपनी मुट्ठी में रखा जाता है और अलग रहकर ही सत्ता का मजा लिया जाता है।

यह बात किसी के जेहन में नहीं बैठ पा रही है कि सोनिया जी ने प्रधानमंत्री के पद को यों ही ठुकरा दिया है।

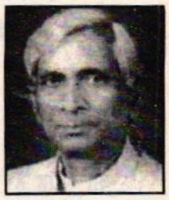

जरूर उनकी कोई मजबूरी और सीमाएं रही होगी। संभव है उन्होंने प्रधानमंत्री जैसे जबावदेह पद के लिए स्वयं को सक्षम नहीं पाया हो, क्योंकि प्रधानमंत्री पद का कार्यभार इतना दायित्वपूर्ण है कि उसे सहायकों के भरोसे नहीं चलाया जा सकता। अभी तक तो कांग्रेस अध्यक्ष की जिम्मेदारी अपने सहायकों के सहारे चलाती रहीं हैं पर प्रधानमंत्री का दायित्व संभालना इतना आसान नहीं। सोनिया गाँधी इस मामले में सराहनीय और आदर के योग्य हैं कि उन्होंने अपनी सीमाओं का आकलन सही समय में किया।

दूसरी बात यह जिसे वामपंथी बंधुओं में ज्योति बसु और सोमनाथ चटर्जी जैसे दिग्गजों ने स्वीकारा है कि सोनिया जी के बच्चे अपनी माँ की सुरक्षा को लेकर अधिक चिंतित थे, क्योंकि इंदिरा जी और राजीव जी आतंकियों के शिकार हो चुके हैं। जिस प्रकार सोनिया जी के प्रधानमंत्री बनने पर मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री उमा भारती ने मुख्यमंत्री का पद छोड़ने की बात की, भाजपा की तेज-तर्रार नेता सुषमा स्वराज और उनके पति स्वराज कौशल ने राज्य सभा की सदस्यता से त्याग पत्र देने की बात की तथा राजग द्वारा शपथ-समारोह के बहिष्कार की घोषणा की गयी थी, कहीं सोनिया जी उससे घबराकर तो नहीं यह कदम उठाने पर विवश हो गईं।

सोनिया जी के इस त्याग के संदर्भ में यदि देखा जाए तो माकपा के नेता ज्योति बसु सबसे बड़े त्यागी हैं जिनके केंद्रीय कमिटी ने 13 व 14 मई 1996 को भारत के प्रधानमंत्री पद का न्यौता ठुकरा दिया। त्याग की तारीफें भी काफी हुई, मगर 6 माह बाद ज्योति बसु ने इसे ऐतिहासिक भूल बताया। जिस वामपंथी दलों एवं कांग्रेस के शीर्षस्थ नेताओं ने एक दूसरे को 'दोगले और भ्रष्ट' कहा आज सिद्धांतहीन गठबंधन के जरिए केंद्रीय सरकार बनाकर वस्तुत: प्रजातांत्रिक मूल्यों का उपहास ही किया है।

सिद्धेश्वर : हाइकु काव्य-प्रणेता

'पतक्षर की सांझ', 'सुर नहीं सुरीले', तथा 'जागरण के स्वर': एक विहंगम दृष्टि

समीक्षक: डॉ. मधु धवन

है क्यों न लेती?
खिलते गुलाब से
सीख भी नारी

इंसान वही
जीवन की सुगंध
औरों को भी दे।

यह निर्विवाद हैं कि कवि अपने युग का द्रष्टा होता है। सिद्धेश्वर एक कुशल कवि एवं जौहरी हैं। 'सुर नहीं सुरीले' की सेनृ्रयू कविताओं का संग्रह है। हाइकु के दूसरे रूप सेनृ्रयू कविताओं का यह यह दूसरा संग्रह है। हाइकु जापानी भाषा का शब्द है। यह जापान की लोकप्रिय काव्य विधा है। जापान में प्राचीन कविता को ताँका कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है 'लघुगीत'।

ताँका- 5-7-5-7-7 के क्रम के वर्णक्रम में पाँच पंक्तियों की कविता है, जिसमें कुल 31 अक्षर होते हैं। कालान्तर में 5-7-5 के क्रम वाली इसकी प्रारम्भिक तीन पंक्तियाँ ताँका के बंधन से मुक्त हो गई और 'होक्यू' कहलाई । आगे चलकर 'होक्य'-'हाइकु' के नए नाम से जापानी ग्रंथ में प्रतिष्ठित हुई। 5-7-5 के वर्णक्रम में हाइकु तीन पंक्तियों की ऐसी कविता है, जिसमें सभी पंक्तियों में सामंजस्य होता है। प्रत्येक पंक्ति की अलग-अलग अपनी सार्थकता होती है। इसमें मात्राओं तथा अर्धवर्णों की गणना नहीं होती। हाइकु कविता में न केवल शब्दों का अनुशासन होता है, बल्कि कविता का अनिवार्य भाव भी समाहित होता है। लघुता और सूक्ष्मता हाइकु का विशिष्ट गुण है।

सिद्धेश्वर जी ने कठोर साधना कर हाइकु एवं सेनृ्रयू कविताओं के तीन संग्रह निकाले - 'पतझर की सांझ' (1998), 'सुर नहीं सुरीले' (2004) तथा 'जागरण के स्वर' (2004)। विभिन्न विषयों के अंतर्गत वर्गीकृत ये काव्य-संग्रह अपने आप में बेजोड़ हैं। इन तीनों संग्रहों को पढ़ने के उपरांत कवि का हृदय उनके कथ्यों के विषयों की विस्तृत परिधि का ज्ञान होता है।

'पतझर की सांझ', 'सुर नहीं सुरीले' तथा 'जागरण के स्वर' तीनों संग्रहों में एक जैसी रचनाएँ यानी मानवीय विवेक की रचनाएँ उपलब्ध हैं।

सिद्धेश्वर जी सिद्धहस्त मौलिक लेखक एवम् कवि हैं। कवि ने हाइकु और सेनृ्रयू विधा में कम शब्दों के माध्यम से असीम भाव प्रकट किये हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि कवि सिद्धेश्वर के इन तीनों संग्रहों का साहित्य जगत में स्वागत होगा।

संपर्क: के-3, अन्नानगर (ईष्ट)
चेन्नई-600 102
तामिलनायडू

शुभकामनाओं के साथ :

मे. न्यू पायल रेस्टूरेन्ट

मखनियां कुआं रोड, चरक छात्रावास के सामने,

ओंकार पैलेस, पटना-800004

उपलब्ध सुविधाएं :

- वातानुकूल एवं परिवार के लिए केबिन की व्यवस्था।
- विद्यार्थियों के लिए विशेष लंच पैकेट की व्यवस्था माहवार उचित मूल्य पर।
- शादी-विवाह एवं अन्य आयोजनों के लिए भोजन एवं अल्पहार की समुचित व्यवस्था।
- विद्यार्थियों के लिए विशेष सुविधा एवं उत्तम प्रबंध।

संपर्क करें

रामेश्वर प्रसाद

मोबा : 9835474988

शब्द-शास्त्र के वृहस्पति : आचार्य सत्यव्रत शर्मा "सृजन"

✍ डॉ. मेधाव्रत शर्मा

स्व. आचार्य सत्यव्रत शर्मा "सृजन" बिहार की विद्वत्परंपरा के परमश्रद्धा के साथ स्मरणीय कुछ विशिष्ट शलाका-पुरुषों में थे और थे "निराला-युग" के एक रससिद्ध कल्प कवि। गहन वैदुष्य ओर रससिद्ध कवित्व के अनन्य साधारण सामंजस्य का विरल निदर्शन था उनका निष्टप्त कांचनवत् तेजस्वी व्यक्तित्व। साहित्यिक, बौद्धिक एव आध्यात्मिक--तमाम अर्थों में जीवन उनके निकट तप:पूत साधना का पर्याय था।

वे प्रारंभ से ही अतिशय प्रखर मेधावी थे, विधा की साधना में उनकी निष्ठा अनन्य-अमोध थी, फलत: समधिक समुज्ज्वल शैक्षिक "कैरियर" के निर्माण में वे समर्थ हुए थे। एम. ए. हिंदी और संस्कृत--दोनों में ही वे पटना विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में उत्तीण हुए थे, एम. ए. संस्कृत में (बी. एल.) थे। शास्त्री और साहित्याचार्य की उपाधियां तो उन्होंने बहुत पहले ही धारण कर ली थी और सो भी स्पृहरणीय श्रेय के साथ।

उन्होंने अपना अजीब आर. के. कॉलेज, मधुबनी (बिहार) के हिंदी-संस्कृत-विभागाध्यक्ष के रूप में शुरू किया था। महज एक-दो बरस के बाद ही वहां से प्रस्थित होकर उन्होंने टी. एन. जे. कॉलेज, भागलपुर (बिहार) में संस्कृत विभागाध्यक्ष का पद सुशोभित किया था। लगभग दस वर्षों तक संस्कृत प्रोफेसर रहने के बाद 1950 ई. में बिहार सरकार के अनुवादक के रूप में सचिवालय पटना आ गए और अंततः राजभाषा-निदेशक के पद पर अरूढ़ रहते हुए 1970 में सेवा-निवृत हुए। निदेशक के रूप में राजभाषा (और राष्ट्रभाषा भी) के क्षेत्र में उनका सर्चस्वल कृतित्व इतना महार्ध है कि उस दृष्टि से उनके कार्य को सर्वथा अन्वर्थ रूप में "लैण्ड मार्क" ही कहा जा सकता है।

स्व. आचार्य "सृजन" शब्द शास्त्र के वृहस्पति थे। संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी--इन तीनों भाषाओं पर तो उनका अधिकार समान रूप से असाधारण था ही, मराठी और बंगला भाषाओं के भी वे अच्छे जानकार थे। बंगला-साहित्यकारों में शरत् उनके खास प्रिय थे। व्यक्तिगत ग्रंथागार जो वे अपने पीछे छोड़ गए हैं, न केवल विशाल है, बल्कि अतिशय मानक एवं विरल-अलभ्य ग्रंथों की आदर्श निधि है। बिहार सरकार के "राजकीय पारिभाषिक शब्दार्ण व (अंग्रेजी-हिंदी) के निर्माण में उनका आस्पद पृष्ठवंशवत् है। शब्द-तत्व के वे पारदृश्वा थे। उनका कृतित्व गहन है, विस्तृत नहीं है और उनका एक-एक शब्द "ये महती सूक्ष्मेक्षिका" से उद्भासित है। शब्द-शास्त्र उनके निकट गहन दार्शनिक निष्ठापूर्वक प्राय: उसी "स्पिरिट में प्रतिष्ठित था, जिस प्रकार वह शब्द-शास्त्र के महान् आचायर्स वाक्यपदीयकार भर्तृहरि के निकट।

शब्दशास्त्री के रूप में उनकी श्रेष्ठतम देन है उनकी अन्यतम व अतिंम कृति "महाभाष्य-मंथनी", जो पातंजल महाभाष्य पर अधावधि यथासंभव उपलब्ध प्रामाणिक सामग्री के तलस्पशी आलीड़न के फलस्वस्प निष्पादित एक सर्वथा अनन्वय वृहत् कार्य है। हिंदी भाषा के माधयमत्व के कारण समान रूप से यह हिंदी के क्षेत्र में भी भाषापरक अंतर्दृष्टि को अधिकाधिक गहराई से उजागर करनेवाली एक अपूर्व मानक कृति है। वे अनेक वर्षों से इस कार्य में भागीरथ अभिनिवेश के साथ साधनारत थे--"यथा दीपो निवातस्थे नेंगते सोपमा स्मृता"। किंतु, नियति को यह मंजूर न हुआ कि वे इसे अपने लक्ष्य के अनुरूप पूर्ण कर पाते और इसे प्रकाशित देख पाते। कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति माननीय डॉ. जयमंत मिश्र स्वयं ही "सृजन" जी के ग्रामीण निवास (मुस्तफापुर, खगोल) पर पधार कर महाभाष्य के कुछ आहिनकी की "मंथनी" पांडुलिपि विश्वविद्यालय के तत्वावधान में प्रकाशनार्थ ले गए थे और छपने के लिए वाराणसी के संबद्ध प्रेस में वह उपस्थापित भी है, किंतु डॉ. मिश्र के अकस्मात् अपदस्थ हो जाने के पश्चात् कार्यालय की लालफीताशाही के कारण इमदाद के अभाव में छपाई का काम फिलहाल ठप्प ही है। आचार्य "सृजन" जी महाप्रस्थान के पूर्व मुश्किल से उसके एक-दो फर्मे ही छपे देख सके थे--नियति के क्रूर परिहास का क्या जवाब ? जमाने की बलिहारी, विधानुराग और गुणग्रहिता विरलतर होती जा रही है। जब विश्वविद्यालय का ही यह हाल है, तो और क्या कहा जाए।

अत्यंत खेदजनक है कि बिहार-सरकार के जिस राजभाषा-विभाग को उन्होंने सोलह-सत्तरह वर्षों तक अपने वाक्-सिद्ध तेजस्वी व्यक्तित्व से अनुप्राणित रखा तथा राजभाषा-निदेशक के रूप में राष्ट्रभाषा हिंदी की संवर्धना में सतत तपोरत रहे, वह विभाग उनके निधनोपरांत उनकी दिवंगत आत्मा के सम्मान में सिर्फ एक शोक-संदेश

ही पारित करने की औपचारिकता-भर कर सका। आज तक कोई स्मारिका या संस्मरजांजलि प्रकाशित कराने की फिक्र भी किस को न हुई। हिंदी के तथाकथित नामी-गिरामी साहित्यकारों से तो कोई अपेक्षा ही व्यर्थ है। अपनी ही डफली बजाने में लोग बेशर्मी के साथ पागलपन की हद तक मसरूफ हैं, आत्मरतिग्रस्त हैं। उनके बनाए हुए लोगों की तोताचश्मी तो और भी दर्दनाक है डॉ. मेधाव्रत शर्मा उनपर संस्मरणंजलि-प्रकाशन की योजना बनाकर बैठे तो हैं, पर अर्थाभाव के कारण वह योजना खटाई में ही पड़ी है। क्या राजभाषा-विभाग इस महत्कार्य में उनकी मदद को आगे आएगा ?

महज बीस-बाईस वर्ष के वय:क्रम में ''सृजन'' जी का प्रथम काव्य-संग्रह ''मौलसिरी'' के नाम से 1933 ई. में प्रकाशित हुआ था, जब हिंदी-जगत् में छायावादी काव्यांदोलन अपने चरमोत्कर्ष पर था। कहना न होगा, ''सृजन'' जी का ''मौलसिरी'8 उकने छायावादी काव्य-व्यक्तित्व का ही प्रतिलक्षक है और यह तथ्य भी कम साभिप्राय नहीं कि उसका उपाद्घात छायावाद के महामणिस्तंभ ''निराला'' द्वारा लिखित है। तीन वृंतों पर समुल्लसित 106 कविता-कुसुमों की मधुर क्यारी है यह संग्रह। उनकी पंक्तियों में प्राण है--इस टिप्पणी के साथ ''मौलसिरी'8 की निम्नांकित पंक्तियों को ''निराला'' ने अपने उपोद्घात में बड़ी कशिश के साथ उद्धत किया है-

''बार-बार यों हाय ! हृदय की
ज्वाला उकसाया न करो,
निद्रित कोमल शिशु-उर को
छेड़ो मत, तड़पाया न करो।
भाग-भाग जाते बिजली-सा
अच्छा है, आया न करो।
हाथ जोड़ता हूं, जलते जी पर
शीतल छाया न करो।''

उत्तान मर्मोच्छ्वास की सजल-प्रांजल अभिव्यक्ति का सुंदर निदर्शन है यह उद्धरण। ''मौलसिरी'' में मुख्यत: छंदोबद्ध गीति-रचनाएं ही है, किंतु कुछ ऐसी रचनाएं भी हैं, जो स्वच्छंद छंद में निबद्ध हैं।

''जेबुन्निसा के मजार पर'' एक लंबी कविता है और इसमें ''जेबुन्निसा'' की मर्म-छवि को गहरी ऐतिहासिक पकड़ के साथ बख़ूबी प्रतिफलित करने की भाव-तन्मयता अद्भुत-अपूर्व रूप में प्रकट हुई है--

यही हाय! वह कवियत्री, वह मुगल-किशोरी।
उस मदांध बलदर्पी नृप की हर्म्य-दीधिका।
डूबी है किस घोर चिंतना में अविरत-सी?
सदियों से वह कौन ध्यान, कैसी प्रकल्पना?

उसी प्रकार ''ओ बिहार'' शीर्षक कविता भी एक अतिशय महत्वपूर्ण रचना है। जिसमें ''बिहार'' के ऐतिहासिक गौरव-बोध की सशक्त अभिव्यक्ति समधिक हृदयावर्जक बन पड़ी है। बानगी के तौर पर एक-दो छन्द देखें :

ओ बिहार !
करती थी तलवार जहाँ पर खन-खन।
शोणित-सिक्त सचिल-सिकता का कन-कन,
ग्रीक-सुता को मिला जहाँ जीवन-धन,
वहाँ शिथिल-दुर्बल कर, केवल हार !
ओ बिहार !!
बोधि-वृक्ष-तल रहा ज्ञान का द्वार,
प्रस्तर-प्रतिमाएं शत बौद्ध-बिहार,
नालंदा-कुल-भूमि, भूति-आगार,
वहाँ कला अनजान, मोह-विस्तार-
ओ बिहार !!

पूरी कविता ही बार-बार पठनीय है। कहना न होगा, ये कविताएं तब लिखी गई, जब भारत पराधीन था, लिहाजा ऐसी कविताओं में राष्ट्रीय उद्बोधन की ही गहन प्रेरणा अपरिहार्यत: अनुसंधेय है। ऐसी कविताएं निस्सन्देह हिन्दी काव्य-साहित्य के मणि-महालय में अनर्घा मणिरत्न के रूप में संजुष्ट होने योग्य है।

लगभग 1930 से 1950 तक की दो दशाब्दियों की कालावधि ''सृजन'' जी की काव्य-साधना के प्रमुख चरण के रूप में निंभ्रन्तित: निर्दिष्ट की जा सकती है। उस जमाने की तमाम अग्रगण्य पत्रिकाओं ''माधुरी'', ''सुधा'', ''चाँद'', ''उषा'', ''हिमालय'', ''पारिजात'', ''विशाल भारत'' आदि में ''सृजन'' जी छाए रहे। पत्र-पत्रिकाओं में तमाम बिखरी हुई उन रचनाओं को आज प्रकाशित कराने का उद्योग हो, तो पता नहीं, कितने संग्रह पुस्तकाकार निकल आएँ।

हिंदी-साहित्य के क्षेत्र में काम करनेवाली शोध-संपंन ऊर्जस्वी प्रतिभाओं का यह महान् दायित्व और पवित्र कर्त्तव्य है कि स्व. ''सृजन'' जी जैसे सरस्वती के वरद-पुत्र की उन तमाम उपलब्धियों को सम्यक् आलोक में लाकर हिंदी के असाधारण-शक्तिपूर्ण सर्जनात्मक संसार की एक अछूती शोध-भूमि को उद्घाटित करने के स्पृहरणीय श्रेय की भागी बनें।

अगस्त, 1948 के ''हिमालय'' में ''सुजन'' जी की एक बड़ी ही मर्मस्पर्शी कविता प्रकाशित हुई थी-''कादम्बिनी''। यह एक लंबी कविता है, सरस सवैया छंद की बारह कड़ियों में संयोजित, संपूर्ण कविता में आद्योपांत धान-संश्लिष्ट संवेगों की तीव्र एकतान धारा अद्भुत-अपूर्व शिल्प-सौष्ठव के साथ उजागर हुई है। आखिरी बंद का जायका लें-

''यह काया नई, जिसे ढूंढ़ती थी,
रे वही तुमसे हुई जा रही मैं।
सुधिहीन अगाध में डूब रही,
यह गान वही, जिसे गा रही मैं।।
पहिचान तो, कान्ह कि राधा हूँ मैं,
बड़े वेग से व्याकुल धा रही मैं।
बिछुड़ी थी जहाँ से विहागमरी,
लो, सुहागभरी वही आ रही मैं।।

एक सूक्ष्म-गहरी आध्यात्मिक प्राण-धारा से भी पूरी कविता प्रतिस्पदिंत है। ''पहिचान तो, कान्ह कि राधा हूँ मैं, बड़े वेग से व्याकुल धा रही मैं''-एक प्राणनिर्मूछनकारी भक्त्यात्मक आवेश कितना

मर्मभेदी हो आया है।

उसी प्रकार नवनवोन्मेष शालिनी प्रतिभा के धनी कवि-प्रवर ''सुजन'' जी की एक अत्यंत उल्लेखनीय कविता है– ''महाप्रस्थान'', जो राष्ट्रपति महात्मा गाँधी के निधन पर 1948 ई. में ही लिखी गई थी और ''पारिजात'' में प्रकाशित हुई थी। यह भी सत्तरह-अठारह छंदों में निब) एक लंबी कविता है। देखे, एक छंद–

''राम-राम'' कहता कर जोड़े
भू पर जो कि शरीर गिरा,
है शरीर ही वह सचमुच?
अथवा कोई अशरीर गिरा?
तीन गोलियाँ सत्व रजस् तम
पर विजयी सत् चित् आनंद।
गिरा शरीर, शरीरी निकला
त्रिगुण झाड़ निष्कल स्वच्छंद।।

काश, ऐसी कविताएँ राष्ट्रीय स्तर के किसी मानक संग्रह में प्रतिष्ठापित हुई होती। स्व. ''सुजन'' जी–जैसे एक श्रेष्ठ कल्प कवि की ऐसी रचनाएँ किसी पत्रिका के सर्फो में सिमट कर रह गई हो, तो इसे मैं निश्चित रूप से एक राष्ट्रीय दुर्भाग्य कहना चाहूँगा।

उसी प्रकार सितंबर, 1964 की ''नई धारा'' में एक बड़ी ही भाव-विस्फूर्जित मार्मिक लंबी कविता छपी थी–''पिया गगन में।'' कतिपय पंक्तियाँ देखें :–

''सेज बिछाए पिया गगन में,
मैं धरती पर सोई।
मुझे राह में नींद आ गई,
मैं मिट्टी में खोई।।
दिन है मेरा चरण दाहिना,
बायां रात सुहानी,
मेरे ही पद्चिह्न चाँद में,
जग की लीक पुरानी।
किंतु आज मैं चिहुंक उठी क्यों,
इस तरु-तले बिगोई।
सेज बिछाए पिया गगन में,
मैं मिट्टी में सोई।।''

स्पष्ट है कि प्रस्तुत कविता माधुर्य-भाव की सरणि में निर्भुनिया संत–''स्पिरिट'8 से संस्फुरित अद्वैतवादी जीवन-दर्शन की समधिक सशक्त व्यंजना है। इस कविता को पढ़कर बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् के तत्कालीन निदेशक विद्वद्वर स्व. डॉ. भुवनेश्वर नाथ मिश्र ''माधव'' इतने मंत्र-मुग्ध हुए थे कि उनसे रहा न गया और उन्होंने दूसरे ही दिन पत्र द्वारा ''सुजन'' जी को अपनी प्रतिक्रिया सूचित की थी। स्व. ''सुजन'' जी के प्रभविष्णु काव्य-व्यक्तित्व को हृदयंगम करने की दृष्टि से उक्त पत्र की कुछेक पंक्तियाँ गुनगुनाने लायक है–

''कई वर्षों के बाद ऐसी कविता पढ़ने को मिली और मैं ऐसा मानता हूँ कि ऐसी एक ही कविता किसी कवि को अमर बनाने के लिए काफी है। इस कविता को मैंने बार-बार पढ़ा और इतना आनंद अपाया कि मैं उसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। इतना ही कह सकता हूँ कि आप धन्य हैं और धन्य हैं आपकी लेखनी तथा हम पाठक भी कम धन्य नहीं।''

स्व. ''सुजन''जी की काव्य-साधना का चरम प्रसाद है–

''मुगलशतदल'' जो चौखम्भा औरियंटालिया, वाराणसी से 1970 में प्रकाशित हुआ। यह काव्य-ग्रंथ संस्कृत-हिंदी-द्वैभाषिक है और है ''श्रीराधाकृष्णयुगलीय रहोगीतिकाव्य''। जीवन के उत्तर चरण में ''सुजन'' जी न केवल भावात्मक अर्थ में बल्कि पूर्ण परिनिष्ठित साधनात्मक अर्थ में श्रीराधाकृष्णयुगल की प्रेमा-भक्ति में निष्णात हो चुके थे तथा वृंदावन की गलियों में भी यथा-अवसर खूब रमा करते थे। ''युगलशतदल'' की परम व्युत्पन्न प्रज्ञा-प्रगल्य ''धोतनिका'' में अंकित अधोलिखित शब्द 'पुजन' जी की अंतरंग सत्ता को उद्घाटित करने में कुंजी-वत् है–

''जीवन के उत्तरार्ध में मेरी पर्सनलिटी स्टिलर हो गई, मेरा व्यक्तित्व दो खराडों में बँट गया। बहिरंग तो कालेज का अध्यापन-कार्य छोड़कर बिहार सरकार के राजभाषा-निदेशक की आसंदी पर बैठा और अंतरंग शास्त्रों के आतोड़न में लग गया। फिर भक्ति की स्वर्णादी में अवगाहन करते-करते अपने को प्रेम वीर युमना के तट पर आया। तभी सुन पड़ी रस-मुरली की टेर।......ये गीत राधा-कृष्ण के प्रति उच्छ्वसित मन के रहस्यभरे निगूढ़ अश्रु है। किसी युगल-मंजरी के ऐकान्तिक विगाढ़ भाव को रूपायित करनेवाले प्रेमगीत।

''श्रीराधाकृष्ण-युगल के चरणों में समर्पित युगल कमल–संस्कृत हिंदी के जुड़वाँ गीत--'युगल शतदल।'

निस्संदेह 'युगल शतदल' 'प्रेमांजनच्धुरितभक्तिविलोचन' श्री 'सुजन' जी के रूप में एक अभिनव लीलाशुक का साक्षात्कार कराता है। संस्कृत तो नहीं, किंतु हिंदी का एक 'सवैया' यहाँ विदर्शनरूप देखें–

''मधुकुंज के द्वार की मंजरियो,
नव किंकरी जान संभारो मुझे।
अभिसार के पथ री धूल हूँ मैं
ललिते झुक नेक निहारो मुझे।।
इसकी सरसी बन जाऊँगी
बूंद मैं बावरी, और न टारो मुझे।
'युगली-युगली' कह के एक बार तो
राधिके ! हाय, पुकारो मुझे।।'

सरस्वती के अनन्य लाडले स्व. आचार्य पं. सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' तेरी कुछ विरल विभूतियों में हुए, जिनके सान्निध्य का सेवन निस्संदेह शास्त्रों के स्वाध्याय से भी बढ़कर, और बहुत बढ़कर होता है–

''येषां भरायवदातानि विधा योनिश्च कर्म च। ते सेव्यास्तैः समास्या शास्त्रेयोऽपि गरीमती''

सपर्क : प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
के. ओ. कॉलेज, गुमला,
जिला-गुमला (रा.वि.) ऐ. नि.

'सुर नहीं सुरीले' एक बेचैन कवि की रचना
सिद्धेश्वर की सेनर्यू काव्य कृति का लोकार्पण

विचार कार्यालय, पटना

'सुर नही सुरीले' एक बेचैन कवि की रचना है। सिद्धेश्वर की इस काव्य कृति के केंद्र में जहां मनुष्य की संवदेनाओं को अभिव्यक्ति दी गई है वहीं देश के

बुद्धिजीवियों को बीच कर्म के आधार पर न्याय निष्क्रियता की निंदा भी की गई है। धर्म पर लिखी गई कविताएं बड़ी ही साहसिक हैं। ये उद्‌गार हैं सुप्रसिद्ध गीतकार सत्यनारायण की जिसे पिछले 7 जून 2004 को पटना के सोन भवन सभागार में राष्ट्रीय विचार मंच की बिहार इकाई की ओर से आयोजित मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर के सद्यः प्रकाशित सेनर्‌यू काव्य-संग्रह 'सुर नहीं सुरीले' के लोकार्पण-समारोह में उन्होंने व्यक्त किये। मंच की बिहार शाखा के अध्यक्ष जिया लाल आर्य की अध्यक्षता में आयोजित इस भव्य साहित्यिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के पूर्व प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) विजेन्द्र नारायण सिंह ने कवि सिद्धेश्वर की इस काव्य कृति की सार्थकताओं को रेखांकित करते हुए कहा कि कवि ने अपनी रचना में मनुष्य के अंदर के विकारों को पहचान कर विता का रूप दिया है जिसमें सही शब्दों का सही प्रयोग है।

पुस्तक के लोकार्पणकर्ता उपदेश सिंह 'विदेह' ने इस कृति की कविताओं को 'सतसैया के दोहा' की संज्ञा देते हुए इसे तीन पंक्तियों के होते हुए भी अति गंभीर बताया। इस अवसर पर बिहार के राज्य निर्वाचन आयुक्त डी. पी. महेश्वरी ने कविताओं को सरल और सटीक बताते हुए कहा कि इस रचना को जो एक बार पढ़ना आरंभ करेगा उसे समाप्त न करने का ही उसका मन करेगा। तिलका मांझी भागलपुर विश्व विद्यालय के पूर्व हिंदी प्राध्यापक प्रो. (डॉ.) लखनलाल सिंह 'आरोही' ने इस रचना को समय, समाज तथा देश के प्रति संवेदनशील बताया। पटना विश्वविद्यालय के पूर्व राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. (डॉ) एल. एन. शर्मा ने इस कृति की कुछ कविताओं को उद्धृत करते हुए कहा कि ज्यादातर व्यक्ति अपने ही लोगों को सुगंध देते हैं, दूसरों को नहीं, किंतु कवि सिद्धेश्वर ने अपनी सुगंध औरों को देने की बात कहकर बड़ी बात कह दी है। देखें--इंसान वही/जीवन की सुगंध/औरों को भी दे। डॉ. शर्मा ने कवि को भीड़ का आदमी बताते हुए उसे बंद कोठरी में नहीं खोजने की बात कही है।

कवि एवं समीक्षक डॉ. शिव नारायण ने जहां इस रचना को गागर में सागर कहा वहीं प्रो. साधुशरण ने कवि के सामाजिक क्रम की चर्चा की।

गीति रचना के सुप्रसिद्ध समीक्षक एवं साहित्यकार नचिकेता ने जापान से आयात की गई इस हाइकु एवं सेनर्‌यू विधा की लघुता और सूक्ष्मता की चर्चा करते हुए कवि की संवेदनाओं की मार्मिकता को सुधी श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सिद्धेश्वर जी को आम आदमी के साथ-साथ उसकी विडंबनाओं, मजबूरियों तथा अभावों के साथ भी लगाव और हार्दिक सहानुभूति है।

इस अवसर पर जिला पार्षद डॉ. कुमार इन्द्रदेव ने लोकार्पित कृति को मगही में अनुवाद करने की आवश्यकता जताई। उल्लेख्य है कि कवि सिद्धेश्वर ने इस अनुरोध पर अपनी सहमति जताते हुए डॉ. इन्द्र देव ने इस संग्रह को मगही में अनुवाद करने का आश्वासन दे रखा है। सुप्रसिद्ध कथाकार मधुकर सिंह ने कवि सिद्धेश्वर के इस काव्य-पुस्तक को आत्म संघर्ष का परिणाम बताया। 'आज' के पूर्व संपादक चन्देश्वर विद्यार्थी, आचार्य संजय सरस्वती तथा डॉ. सच्चिदानन्द सिंह 'साथी' ने भी इस अवसर पर रचनाकार सिद्धेश्वर को अपनी शुभकामनाएं दीं।

समारोह का प्रारंभ कवि राजकुमार प्रेमी के मंगलाचरण से हुआ तथा अतिथियों का स्वागत किया साहित्यकार कमला प्रसाद ने। मंच के कोषाध्यक्ष रवीन्द्र प्रसाद यादव तथा संयुक्त सचिव शिव कुमार सिंह अतिथियों एवं सुधी श्रोताओं के आवभगत में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। मंच का सफल संचालन जहां प्रचार सचिव डॉ. शाहिद जमील ने किया वहीं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया उपाध्यक्ष डॉ. एस. एफ. रब ने।

प्रस्तुति : शिवकुमार सिंह, पटना

राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा राष्ट्रीयता पर आधारित वर्ष 2004 में दो पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना

रचनाओं के लिए विभिन्न राज्यों के सुप्रसिद्ध रचनाकार, विचारक एवं चिंतक सादर आमंत्रित

मान्यवर,

यह जानकर प्रसन्नता होगी कि राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संस्था राष्ट्रीय विचार मंच की दिल्ली एवं बिहार इकाई की पहल पर मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने विगत 19 मार्च की बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया है कि वर्ष 2004 में राष्ट्रीयता पर आधारित हिंदी तथा अंग्रेजी में दो ऐसी पुस्तकों का प्रकाशन किया जाए जिनमें न केवल राष्ट्रीयता का उद्घोष हो बल्कि उनके निबंधों में सांस्कृतिक नवजागरण, राष्ट्रीय एवं सामाजिक प्रगति और अखंड भारत निर्माण की दिशा में प्रेरणा के स्वर हों। कारण कि देश के प्रायः सभी क्षेत्रों में जो संकट के काले बादल मंडरा रहे हैं और जिसकी वजह से यह राष्ट्र अपेक्षित विकास से वंचित है उसके मद्देनजर मंच ने यह महसूस किया कि देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना का पिछले कई दशक से उत्तरोत्तर ह्रास होता चला जा रहा है। आखिर तभी तो कई ऐसे देश, जिसने हमसे बाद में आजादी हासिल की वह राष्ट्रीयता के बल पर आज प्रगति के उस मुकाम पर पहुँच चुका है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर पा रहे हैं। यह सच है कि राष्ट्रीयता के बिना राष्ट्र निर्माण संभव नहीं।

'विचार दृष्टि' के वैचारिक मंच ने कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर इन पुस्तकों के प्रकाशन का निर्णय लिया है। निर्णयानुसार इन दोनों पुस्तकों की अलग-अलग पृष्ठ संख्या 304 होगी जिसके लिए विभिन्न राज्यों के सुपरिचित एवं ख्याति प्राप्त रचनाकारों, चिंतकों एवं विचारकों से उनके शोधपूर्ण निबंध आमंत्रित किए जा रहे हैं। संभावित विषयों की सूची संलग्न है, चिन्हित विषयों पर निबंध लिखने की स्वीकृति विद्वान रचनाकारों से प्राप्त हो चुकी है। आप विद्वतजनों से मैं सादर अनुरोध करता हूँ, कि संलग्न सूची के विषयों में से किसी एक विषय पर अधिकतम 3000 और निम्नतम 2000 शब्दों में (डबल डिमाय के करीब 8 पृष्ठ) अपने संक्षिप्त परिचय एवं पासपोर्ट आकार की श्वेत-श्याम तथा रंगीन तस्वीर की एक-एक प्रति सहित शोधपूर्ण निबंध(संदर्भ के साथ) मेरे दिल्ली अथवा पटना के पते पर डाक, फैक्स अथवा ई-मेल पर आगामी 30 जुलाई 2004 तक भेजने की कृपा करें। अगर अपरिहार्य कारणों की वजह से कोई विद्वान रचनाकार उक्त तिथि तक अपनी रचना भेजने में समर्थ न हों तो उनकी रचना का 31 अगस्त तक भी स्वागत होगा। प्राप्त निबंधों का संपादन और कंप्यूटर पर शब्द-संयोजन अगस्त-सितंबर 04 में होगा तथा प्रकाशन अक्टूबर में। उल्लेख्य है कि इन पुस्तकों का लोकार्पण आगामी 31 अक्टूबर 2004 को मंच के द्वारा नई दिल्ली में आयोजित लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के 129वें जयंती-समारोह के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति अथवा उपराष्ट्रपति के हाथों संपन्न होगा।

निर्धारित विषयों के शब्दों में परिवर्तन के लिए रचनाकार स्वतंत्र हैं पर ध्यान रहे कि हर हाल में निबंध से राष्ट्रीयता, देश-प्रेम तथा देशभक्ति की भावना का उद्घोष हो। चयन किए गए विषय की सूचना मंच के दिल्ली स्थित राष्ट्रीय कार्यालय को 15 जुलाई 2004 तक अवश्य भेजने की कृपा करें। आशा ही नहीं हमें पूर्ण विश्वास है कि मंच के इस राष्ट्रीय अनुष्ठान में आप अपना अपेक्षित सहयोग प्रदान कर इसे कृतार्थ करेंगे।

शुभकामनाओं के साथ
सादर।

भवदीय,

(सिद्धेश्वर)
राष्ट्रीय महासचिव
सह
संपादक, 'विचार दृष्टि'

संलग्नक: हिंदी तथा अंग्रेजी के संभावित विषयों की सूची

प्रतिष्ठा में,
देश के सुप्रसिद्ध रचनाकारों के नाम

पटना का पता:
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001
दूरभाष: 0612-2228519

'दृष्टि', यू0 207, शकरपुर, विकास मार्ग
दिल्ली-110 092
दूरभाष: 011-22059410, 22530652
फैक्स: 011-22530652
E-mail: sidheshwarprasad@hotmail.com

राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा राष्ट्रीयता पर आधारित पुस्तक के वर्ष 2004 में प्रकाशन हेतु संभावित विषय

1. राष्ट्रीयता और नागरिकों का कर्तव्य-बोध
2. राष्ट्र के निर्माण में साहित्य की सार्थकता
3. राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रभाषा
4. राष्ट्रीय एकता में दक्षिण भारतीय भाषाओं का अवदान
5. राष्ट्रीय एकता में पूर्वोत्तर भाषाओं का योगदान
6. हिंदी काव्य में राष्ट्र चेतना के स्वर
7. राष्ट्र निर्माण और शिक्षा नीति
8. राष्ट्रीयता के बाधक व साधक तत्व-
9. सूखती संवेदना और मुरझाता राष्ट्र
10. राष्ट्रीय नवजागरण की भारतीय अवधारणा
11. राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव
12. राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता
13. गाँधीवाद और राष्ट्रीयता
14. धर्म और राष्ट्रीयता
15. मीडिया और राष्ट्रीयता
16. राष्ट्रीयता और दलित साहित्य
17. राष्ट्र की समकालीन चुनौतियाँ
18. मानवीय नैतिक मूल्य और राष्ट्रीयता
19. भारतीय प्राचीन ग्रंथों में राष्ट्रीयता
20. राष्ट्रीयता एकता में भारतीय संतों एवं सुफियों का योगदान
21. राष्ट्रीयता और बाल चेतना
22. राष्ट्र निर्माण में युवाशक्ति
23. राष्ट्रीयता और नारी
24. राष्ट्रीयता और जन संख्यिकीय परिवर्तन
25. राष्ट्रीय गीत: वंदे मातरम्,जन गन मन तथा सारे जहाँ से अच्छा......
26. राष्ट्रीयता के प्रतीक
27. राष्ट्रवाद और अंतरराष्ट्रीयता
28. राष्ट्रवाद: अवधारणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन
29. लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण और राष्ट्रीय चिंतन
30. भारतीय संगीत और देशभक्ति
31. पंचायती राज और सत्ता का विकेंद्रीकरण
32. भारत के जनप्रतिनिधि और राष्ट्रीयता
33. लोकतंत्र और राष्ट्रीय चेतना
34. राष्ट्रीयता और भारतीय संविधान
35. आतंकवाद: राष्ट्र के समक्ष चुनौतियाँ
36. उर्दू साहित्य और राष्ट्र चेतना
37. लोक साहित्य में राष्ट्रीयता
38. राष्ट्रीयता के विकास में भारतीय नेताओं की भूमिका
39. राष्ट्र प्रेम के अमर गायक सुब्रह्मण्य भारती
40. राष्ट्रीयता और सरदार पटेल
41. राष्ट्रीयता और संत कवि महर्षि तिरुवल्लुवर
42. भारतीय संस्कृति में राष्ट्रीयता की परिकल्पनाएँ
43. कबीर की समन्वयवादी संकल्पनाओं में राष्ट्रीय चेतना
44. भारतीय राजनीति और लोकतांत्रिक परंपराएँ
45. भूमंडलीकरण और राष्ट्रीयता
46. राष्ट्र-चेतना और भारतीय संसद
47. राष्ट्रीय एकता और अहिंसा
48. खेल और राष्ट्रीय भावना
49. राष्ट्रीयता का वैचारिक ढाँचा
50. राष्ट्रीय अखण्डता रिपोर्ट और सरकार की अनुवर्ती कार्रवाईयाँ
51. राष्ट्रीयता के लिए न्यायपालिका की मजबूती
52. राष्ट्रीयता और भारतीय पर्व-त्योहार
53. राष्ट्रीयता और भारत का सुधारवादी आंदोलन
54. राष्ट्रीयता और किसान
55. सामाजिक परिवर्तन-बोध और राष्ट्रीयता
56. राष्ट्रीय एकता में समाज सेवा संगठनों की भूमिका

Possible topics for a book to be published by Rashtriya Vichar Manch in the year 2004.

1. Nationalism : Conceptual Parameter
2. Nationalism and Composite Culture in India
3. Nationalism and Communal harmony in India
4. Nationalism and Reform movement in India
5. The role of media in Nationalism.
6. Cultural ethos of Indian nationalism.
7. National Integration Reports & the Followup actions of the Govt.
8. Development of Human Resourses : Ways & means.
9. Obstacles and Promoting Factures of Integration in India.
10. Where have we erred in the past?
11. Strengthening of judiciary for one Nation.
12. Multi-Party system weakens India that is Bharat.
13. Regionlism and Federating Units - Not one concept
14. Middle Class not properly roped in the main Stream.
15. Growing Population- a menace to nationalism
16. Nationalism through Sports & Games.
17. Globlisation and Nationalism.
18. The Indian Songs & Patriotism.
19. The Indian Festivals & Nationalism.
20. Nationalism & the Indian Languages.
21. Secularism & nationalism
22. South Indian languages & nationalism.
23. Nationalism & education policy.
24. Nationalism through Inidan literature.
25. Freedom does not mean total licence.
26. Nationalism & the Youth.
27. Women and Nationalism
28. Nationalism & the child.
29. Democratic values & Nationalism
30. Religion & Nationalism
31. Citizen's values & Nationalism
32. National awareness in Hindi poems
33. Patriotism in Indian classical music.
34. Nationalism and demography
35. National awareness and Indian Parliament
36. Nationalism and non-violence
37. Indian politics and democrtic tolerance.
38. Role of Sardar Patel in National Integration
39. Nationalism and Indian politicians
40. Gandhism and Nationalism
41. Indian farmers & Nationalism
42. Nationalism through Social change.
43. De-centralisation of power through Panchayati Raj
44. People's Representatives & Nationalism
45. Nationalism and the saint Mahariishi Tiruvalluvar
46. Nationalism and Social harmony
47. Nationalism in ancient epics
48. Nationalism and Internationalism
49. Role of social service organisations in national unity.

वेणु विहार सहकारी गृह निर्माण समिति लि.

उत्तरी पटेल नगर, पटना–23 (बिहार)

दूरभाष : 2288598

आवासीय भूखण्ड

1. उत्तरी पटेल नगर : 100 आवास आवंटित
2. पूर्वी रामकृष्णा नगर : 125 आवासीय भूखण्ड (वाईवास में) आवंटित एवं भूखण्ड उपलब्ध हैं
3. पटना गया रेलवे लाइन में कुरथौल मोड़ के पश्चिम : 50 भूखण्ड आवटित

सस्ती भूखण्ड के लिए प्रयासरत

– मदर टेरेसा पथ दक्षिणी छोर करीब $2^1/_2$ KM दक्षिण बाई पास के

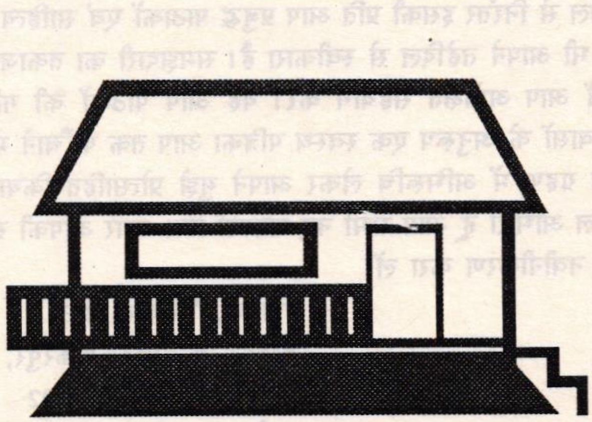

सचिव

नवल किशोर प्र. साह

शुभकामनाओं सहित :

श्री राम आयरन

लपफार्ज सीमेंट और छड़

के थोक एवं खुदरा विक्रेता

मीठापुर, खगौल रोड,

पटना–800001 (बिहार)

मोबाईल : 3337365

प्रोपराइटर : नरेश कुमार सिंह

कृपया घ्यान दें

पत्रिकाएँ और पुस्तकें खरीदकर पढ़ने में जितना मजा आता है उतना मुफ्त में पाकर नहीं। इसलिए जब आप 'विचार दृष्टि' पत्रिका नमूना प्रति की माँग करें तो यह लिखना न भूलें कि आप इसकी सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं। पता नहीं क्यों पत्रिकाओं का सदस्य बन ना अपना कर्तव्य नहीं, लोग उसे मुफ्त में झपटना अपना अधिकार समझते हैं।'

दो वर्षों तक 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' और बाद में भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक द्वारा 'विचार दृष्टि' शीर्षक अनुमोदित एवं निर्बाधित होने पर पिछले पाँच साल से निरंतर इसकी प्रति आप प्रबुद्ध पाठाकों एवं साहित्य सेवियों के हाथों जा रही है और जिसके तेवर व कलेवर को भी आपने तहेदिल से स्वीकारा है। समझदारी का तकाजा है कि इसकी सदस्यता ग्रहण कर इसके नियमित प्रकाशन में आप अपेक्षित सहयोग करें। यह आप पाठकों की गरिमा के अनुरूप होगा और मैं भी आपकी आकांक्षाओं एवं विश्वासों के अनुरूप एक स्वस्थ पत्रिका आप तक पहुँचाने में समर्थ हो सकूँगा। पिछले दो–तीन महीनों में इसकी सदस्यता ग्रहण में अभिरूचि लेकर आपने मुझे प्रोत्साहित किया है यह आपकी सदाशयता एवं उदारता का द्योतक है। मैं तहेदिल आभारी हूँ आप सभी नए सदस्यों का। अगर आपकी सदस्यता समाप्त हो चुकी है तो एक सौ रुपए भेजकर उसका नवीनीकरण करा लें।

राज्य कार्यालय
'बसेरा', पुरन्दरपुर
पटना–1 (बिहार)
फोन: 2228519

संपादक, 'विचार दृष्टि'
'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली–92
फोन: 011–22530652
011–22059410

वर्ष 2004 का सिडनी शांति पुरस्कार अरुंधती को

सुप्रसिद्ध लेखिका अरुंधती राय को मानवाधिकार के क्षेत्र में उनके साहसिक अभियान के लिए वर्ष 2004 के

सिडनी शांति पुरस्कार से सम्मानित किये जाने की घोषणा सिडनी पीस फाउंडेशन के अध्यक्ष एलेन केमारन द्वारा की गयी। श्रीमती राय को यह सम्मान आगामी 4 नवंबर को सिडनी में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया जाएगा। इसके पूर्व यह पुरस्कार नोबेल पुरस्कार विजेता आर्क बिशप डेसमंड टूटू और बांग्ला देश के मुहम्मद युनूस को दिया जा चुका है।

डॉ. बालशौरि रेड्डी काशी विद्यापीठ द्वारा डी. लिट् से सम्मानित

हिंदी एवं तेलुगु साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर भारतीय भाषा परिषद कोलकाता के पूर्व निदेशक तथा 'चंदा मामा' के पूर्व संपादक डॉ. बालशौरि रेड्डी को महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणासी द्वारा विगत 19 जून 2004 को वाराणासी में आयोजित दीक्षांत समारोह में डी. लिट् डिग्री से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय विचार मंच के देशभर में फैले सदस्यों को इस आशय का समाचार जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उल्लेख्य है कि डॉ. रेड्डी मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के उपाध्यक्ष तथा तमिलनाडु शाखा, चेन्नई के संरक्षक हैं। मंच तथा 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई।

एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी को दिल्ली सरकार की ओर से लाइफ एचीवमेंट पुरस्कार से नवाजा गया। यह पुरस्कार उनकी नातिन सीता रवि ने मुख्यमंत्री शीला दीक्षित से ग्रहण किया। छाया : विचार दृष्टि

किरण बेदी संयुक्त राष्ट्र पदक से सम्मानित

संयुक्त राष्ट्र की पुलिस सलाहकार भारत की सर्वोच्च महिला पुलिस अधिकारी किरण बेदी

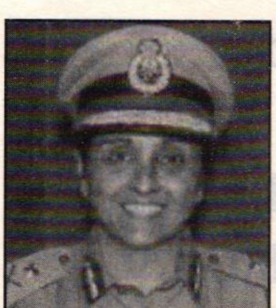

को उनकी उल्लेखनीय सेवा के लिए संयुक्त राष्ट्र पदक से सम्मानित किया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति अभियान के सहायक महासचिव हेदी अनाबी ने एक वृहद आयोजन में पिछले 30 मई को संयुक्त राष्ट्र में तैनात अन्य 22 पुलिस एवं सैन्य अधिकारियों के साथ उन्हें पदक प्रदान कर सम्मानित किया।

With best compliments from:-

M/S Sri Ram Nursing Home

Facilities available :-

1. ICU
2. Medicine
3. Cardiology
4. Gastro cardiology
5. Neurology
6. Padiatrics
7. Endoscopy
8. Laparoscopy
9. Gmsw Surgery
10. Padiatric Surgery
11. Neuro Surgery
12. G. I. Surgery
13. Orthopadic Surgery
14. Nephrology
15. Urology
16. Anaesethesiology
17. Pathology X' Rays
18. Ambulance
19. All Services

Dr. Lal Babu Singh

NC-1-C, Lohia Nagar,
West of Rajendra Nagar Overbridge,
Kankarbagh, Patna-20 (Bihar)
Phone:- 2345344.

गहरे सामाजिक सरोकारोंवाले अंतर्मुखी एवं निहायत संवेदनशील और मानवीय डॉ. मोहन सिंह का महाप्रयाण

सिद्धेश्वर

"दुनिया की मर्दुमशुमारी गलत हो रही है। यथार्थ में दुनिया में दो चार ही गिने-चुने जीव रहते हैं। उन्हीं की गिनती दुनिया भी गिनती है और उन्हीं का मत दुनिया का मत।"

ये पंक्तियां राष्ट्र चेतना के सुप्रसिद्ध रचनाकार माखनलाल चतुर्वेदी लिखित एक संस्मरण में आई है। इस बात को स्वीकार करने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि समाज के इने-गिने व्यक्तियों में डॉ. मोहन सिंह का नाम निश्चित रूप से आता है। कहा जाता है कि जब व्यक्ति और काल का संयोग होता है, तो एक क्रांति का जन्म होता है--ठीक वैसे ही जैसे करोड़ों तारों के अस्त होने के बाद सुबह होती है और महान व्यक्तियों तथा महान क्षणों के संयोग से महान क्रांति पैदा होती है। यानी ऐसी सुबह होती है, जो दोपहर जैसी लगती है जिसमें सूर्य अपने पूरे जोर के साथ चमकता है। डॉ. मोहन सिंह ऐसे ही महान व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने पूरे जीवन के इतिहास में दुलर्भ क्षणों का सर्जन किया।

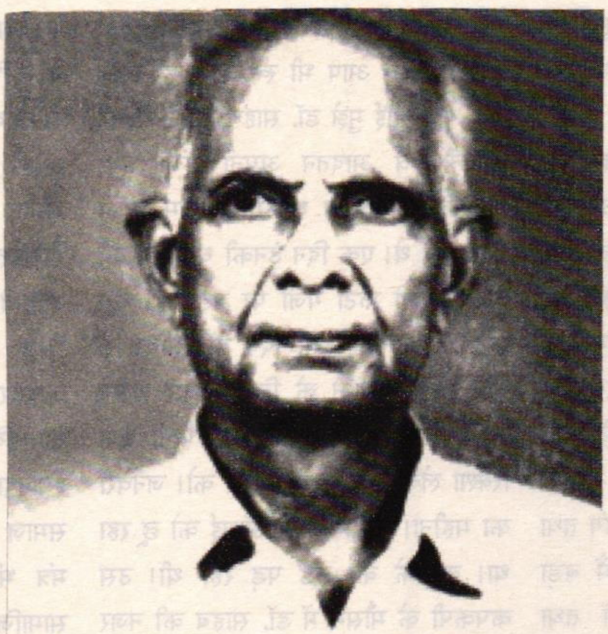

"सजातो येन जातेन याति वंश-समुन्नतिम्
परिवर्तिनि संसारे मत: को वा न जायते।"

अर्थात इस परिवर्तनशील संसार में मरे हुए की तरह कौन नहीं पैदा होता है लेकिन जन्म उसी का सार्थक है जो जाति (समाज) या वंश की समुन्नति के लिए जीता है। डॉ. मोहन सिंह भी एक ऐसे व्यक्ति हुए जिन्होंने समाज के लिए जिया, उसके निर्माण में रुचि लिया और समाज के सपनों को संवारा। कल्पना को कर्म समझकर अपनी योजना को युक्ति से पूरा किया। अपनी नम्रता, प्रेमपूर्वक व्यवहार और सहनशीलता से समाज को स्वस्थ-सबल बनाने का जीवन पर्यंत प्रयास वे करते रहे।

डॉ. साहब के जीवन का लेखा-जोखा जब हम करते हैं तो बही-खाते के 'डेविट' तथा 'क्रेडिट' दोनों कॉलमों में से केवल 'क्रेडिट' कॉलम ही भर पाते हैं। 'डेविट' कॉलम को केवल शून्य का ही सहारा लेना पड़ता है। मसलन डेविट तथा क्रेडिट दोनों अलग-अलग खानों में अंकित क्रमश: दर्द और उल्लास में से उल्लास के सामने दर्द कहीं नजर ही नहीं आता। ऐसा था उनका जीवन और उनके जीवन की उपलब्धियां। डॉ. साहब के जीवन में मुख्य रूप से हमने तीन बातों को पाया--सुरुचि, संस्कृति और शालीनता। सुरुचि इसलिए कि वे कभी किसी को उबने न देते थे चाहे जितनी देर वह उनके समीप बैठा रहे। संस्कृति इसलिए कि आतिथ्य सत्कार में कहीं कोई कमी नहीं। उनकी झोली में मौसम के अनुसार आम, अमरूद, केले, अंगूर, सेव, नारंगी तो मिलते ही थे, यहां तक कि मीठे-मीठे बेर भी। जब कभी भी कोई उनसे मिलने गया इन फलों से उसका स्वागत हुआ। शालीनता की तो मानो डॉ. साहब प्रतिमूर्ति ही थे। अपने हाथों से सेव-अमरूद काटकर आपकी ओर बढ़ाना तो जैसे उनकी आदत बन चुकी थी। आपको यह कभी भान नहीं होता कि आप इतने बड़े तथा आत्मीयता से भरे व्यक्तित्व के समीप बैठे हैं। अल्पाहार के बाद लौंग या ईलायंची से आपका स्वागत आपको मिथिला संस्कृति की याद अवश्य हो आती। आपकी वापसी पर आपके अभिवादन के प्रत्युत्तर से आप कदाचित वंचित नहीं हुए होंगे। बात व्यवहार में

उनकी कुशलता तथा बातचीत के बीच उनकी वाक् पटुता के कायल हैं हम। इतने धनी व्यक्तित्व में शालीनता तो इतनी कूट-कूट कर भरी हो, ऐसा उदाहरण विरले ही कहीं और मिलता है। ऐसे हस्ताक्षर को मैं बार-बार यदि अपने में आत्मसात कर पाऊँ तो श्रेय उन्हें ही जाएगा और उस दिन अपने को मैं धन्य समझूंगा।

जहाँ तक डॉ. साहब से मेरे परिचय का प्रश्न है मुझे अच्छी तरह याद है कि उनके साथ मेरी मुलाकात सन् 1974 में पटना में मुसल्लहपुर स्थित सरदार पटेल छात्रावास के किसी कार्यक्रम में हुई थी। डॉ. साहब उन दिनों उस छात्रावास न्यास के अध्यक्ष थे।

सन् 1973 के दिसंबर में जब मेरा तबादला रांची स्थित महालेखाकार कार्यालय से पटना के महालेखाकार कार्यालय में हुआ तो अपनी मानसिकता के अनुरूप यह स्वाभाविक हो गया कि पटना के सामाजिक तथा सांस्कृतिक रंग-ढंग में मैं रस-बस जाऊँ। इसी क्रम में डॉ. साहब से जिस समय से मेरा परिचय हुआ, उनके बात-विचार, उनके काम करने के ढंग तथा उनकी सामाजिक मानसिकता से मैं बड़ा प्रभावित हुआ। उनकी कार्यशैली तथा सामाजिक कार्यों में उनकी गहरी रुचि का मेरे ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। अनेक प्रकार की उनकी व्यस्तता के चलते मैं उनसे उन दिनों अक्सर तो नहीं मिल पाता था, किंतु जितनी बार उनसे मिला उनकी अमिट छाप मेरे हृदय पर पड़ी जिसने मेरी जिंदगी की धार को भी बदल दिया। सच मानिए ऐसे उदार, कर्मठ एवं निष्ठावान सामाजिक हस्ती का सान्निध्य पाकर मैं गौरवान्वित हुआ। मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि डॉ. साहब ने पहली मुलाकात से लेकर आजीवन जिस आत्मीयता और आनंद से पुलकित होकर मुझपर अपना स्नेह दर्शाया, उसे चाहकर भी मैं भूला नहीं पाऊँगा। उस समय से लेकर उनके जीवन काल तक की न जाने कितनी स्मृतियां आज भी ज्यों-की-त्यों मन की आंखों के आगे झलक जाती हैं और हृदय एक अकथनीय भावना से अभिभूत हो उठता है। स्थानाभाव की वजह से उन सभी स्मृतियों का यहां समावेश कर पाना तो मुश्किल है, पर बानगी के रूप में उनमें से कुछ को आप पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना मैं इसलिए लाजिमी समझता हूँ ताकि डॉ. साहब की उदारता, सहृदयता और आत्मीयता से आप भी रू-ब-रू हो सकें।

याद आई मुझे डॉ. साहब की गंजी की कहानी। वे आदतन अपनी गंजी तथा अंडरवियर प्रतिदिन धोकर बाथरूम में ही पसार देते थे। एक दिन उनकी धर्मपत्नी की नजर उनकी फटी गंजी पर पड़ गई। बस क्या था, उन्होंने उसी दिन डॉ. साहब से नयी गंजी खरीदने के लिए बाजार चलने का अनुरोध किया। दोनों पति-पत्नी एक रिक्शा लेकर चल पड़े बाजार को। जनवरी का महीना। जाड़ा अपनी ऊँचाई को छू रहा था। कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। उस कपकपी के मौसम में डॉ. साहब की नजर रिक्शा चालक के पीठ पर पड़ी। उसके शरीर पर चादर तो दूर, गंजी जालीदार न होने पर भी वह जालीदार लग रही थी। फटी गंजी, जिसका एक छोर दूसरे तथा दूसरे का तीसरे छोर से बंधा था, रिक्शा चालक के शरीर में लटक रही थी जिसे देख डॉ. साहब को कपकपी होने लगी और अपनी धर्मपत्नी का ध्यान उन्होंने आकृष्ट करते हुए उनका ख्याल पूछा।

गंजी की दुकान जाकर दो गंजियां खरीदी गई। एक पहले रिक्शे वाले को पहनायी गयी और दूसरी डॉ. साहब के लिए घर लाई गई। रिक्शा वाला गंजी पाकर निहाल हुआ और एक गरीब आदमी के लिए डॉ. साहब का ख्याल आज एक नमूना बनकर कहानी बन गई।

डॉ. मोहन सिंह जी विनम्रता की मूर्ति थे। बड़े ओहदे तथा अधिक पैसे वालों में जो अहं रहता है वैसा मैंने न तब देखा और न उनके जीवन के अंतिम क्षणों में। बिना किसी संकोच के किसी के यहां चला जाना तथा उसके दुःख-दर्द में साथ देना तो जैसे उनके रोजमर्रा की आदत बन गयी थी। सभ्यता एवं संस्कृति के प्रतीक डॉ. साहब ने विभिन्न सामाजिक संगठनों के माध्यम से आदमी को आदमी से जोड़ने में अपनी अहम भूमिका निभाई। निश्चित रूप से सरदार पटेल छात्रावास के अध्यक्ष की हैसियत से उनके द्वारा किए गए प्रयास आदमी को आदमी से जोड़ने में सहायक सिद्ध हुए हैं। छात्रावास के निर्माण में अनवरत लगे रहना डॉ. साहब के आत्मविश्वास और अपने उद्देश्यों के प्रति ईमानदारी का जहां परिचायक था वहीं समाज के प्रभावी आंदोलन का एक मूल मंत्र भी। ऐसा आंदोलन जो कि हमारी सामाजिक संभावनाओं की सीमा रेखा बदल देगा, क्योंकि उनके कदमों पर चलने का हमने संकल्प जो ले रखा है तथा हाथ न खींचने की कसमें जो खाई हैं।

समाज के प्रति उनका दर्द क्या कुछ नहीं करा देता। तभी तो 80-85 साल की उम्र में भी कुछ-न-कुछ कर गुजरने की तमन्ना लिए बैठे रहे, कल की पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य की कामना संजोए। इस उम्र में भी छात्रावास के कार्यों में इतनी सतर्कता, कर्मठता तथा बेचैनी के कारण क्या हैं ? यह प्रश्न पूछने पर डॉ. साहब ने

कहा था–''सामाजिक कार्यों को मूर्तरूप में परिणत करने का बस एक शौक है, एक लालसा है दिल में।'' यह पूछने पर कि आपकी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य आपके साथ कैसा व्यवहार करते हैं, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा था--''वे सब-के-सब मेरी मदद करने को तत्पर रहते हैं। परिश्रम करना प्रत्येक मनुष्य का पहला कर्तव्य है। इसी के द्वारा सभी कर्मों को मान्यता दी जाती है।

मानव अपने जीवन के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो भी कर्म करता है उसमें उसका 'परिश्रम' ही उस कर्म को गति प्रदान करता है और उसे लक्ष्य तक पहुंचाता है। जो मानव सार्वभौमिक भाव से कर्म करता है वही चिरकाल तक प्रसिद्धि स्थापित करता है। डॉ. साहब के कार्य भी इसी वर्ग में आते हैं। सार्वभौमिक भाव से अपने कर्म में तल्लीन यही उनकी विशेषता रही, जिसके लिए आने वाले दिनों में वे स्मरण किए जाएंगे।

कितना अच्छा होता यदि उनकी यादगार को ताजा रखने के लिए एक 'स्मृति ग्रंथ' का प्रकाशन किया जाता जिसमें उनके व्यक्तित्व-कृतित्व से संबंधित सारे आयामों को संजोया जाता। डॉ. साहब के एकलौते सुपुत्र डॉ. सत्येन्द्र नारायण सिंह तथा पुत्रवधू डॉ. रेखा सिंह सहित उनके शुभेच्छुओं का यह सामाजिक दायित्व बनता है कि 'स्मृति ग्रंथ' के प्रकाशन हेतु कदम बढ़ाएं। हमारी कलम और हमारा अपेक्षित सहयोग उनके साथ रहेगा, यह विश्वास तो मैं अपनी ओर से दे ही सकता हूँ। यदि इस आशय का प्रस्ताव पारित हो तो मेरा दावा है कि डॉ. मोहन सिंह जी की पहली पुण्य तिथि 15 मई 2005 को प्रकाशित 'स्मृति ग्रंथ' का लोकार्पण संभव है। जरूरत केवल इस बात की है कि इस ओर जल्द से जल्द कदम बढ़ाया जाए।

पटना मेडिकल कॉलेज के पैथोलौजी विभाग अध्यक्ष एवं प्रोफेसर पद से सेवानिवृत डॉ. मोहन सिंह जी ने पटना के खजांची रोड में 'जांच घर' नाम से एक पैथोलौजिकल क्लिनिक की स्थापना की जिसने काफी ख्याति अर्जित की और पैथोलौजकल टेस्ट में पूरे बिहार में अपनी एक अलग पहचान बनाई। एक डॉक्टर से सहानुभूति, दक्षता, होशियारी और समझदारी की उम्मीद की जाती है। डॉक्टर बन जाने से बेहतर कोई समाज सेवा, कोई उपकार, कोई सुनहरा अवसर और कोई मानवीय जिम्मेदारी नहीं होती। इलाज करने के लिए डॉक्टर का जिस तरह कुछ तकनीकी दक्षता की जरूरत होती है उसी तरह वैज्ञानिक ज्ञान और मानवीय संवेदना की भी। डॉ. मोहन सिंह ने अपनी इस दक्षता को पूरी मानवीयता, साहस और ईमानदारी से निभाने का सतत् प्रयास किया और यही उनके व्यक्तित्व और चरित्र की महत्वपूर्ण विशेषता रही, जो उनके साथियों तथा दूसरों के लिए मिसाल बन गया है। एक डॉक्टर को इससे अधिक और क्या चाहिए ?

एक मरीज सिर्फ वही नहीं, जो वह दिखता है कि उसके अंग-भंग है या अंदरूनी हिस्से खराब हैं, बल्कि वह एक मानव है जिसमें उम्मीदें हैं, संवेदनाएं हैं, उसमें डर है, भावना है, विश्वास है। एक मानव विज्ञानी की तरह डॉक्टर के लिए भी कोई मानव घृणित नहीं। सच्चा डॉक्टर मरीज के लिए ईमानदार भी होता है और बेईमान भी, सहृदय भी होता है और कठोर भी, देवता भी होता है और शैतान भी, क्योंकि वह मरीजों की सेवा करता है। मरीजों की अपेक्षाओं के अनुरूप डॉ. मोहन सिंह ने पूरी निष्ठा और लगन से अपने दायित्व का निर्वाह किया है, यह कहने में मुझे कोई संकोच नहीं।

डॉ. मोहन सिंह जी में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूटकर भरी थी। स्वतंत्रता यानी शोषण से मुक्ति स्वातंत्रोत्तर भारत की राष्ट्रीय भावना का मूल आधार रहा जिसके डॉ. साहब पोषक रहे। स्वतंत्रता संग्राम में आपने एक अहम भूमिका अदा की। उनका स्पष्ट मत था कि हमारी नई पीढ़ी को राष्ट्रीय एकता के अपकारण घटकों, यथा विखंडनकारी और पृथकतावादी प्रवृतियों की बारीक पहचार रखनी होगी तभी वे इन देशद्रोही शक्तियों की नई चुनौतियों का सामना कर सकेंगी। राष्ट्र की एकता की मजूबती के लिए सभी देशवासियों का सम्मान और उनमें भाईचारे का विकास हो, डॉ. साहब की यही धरणा थी।

पुनः श्री माखनलाल चतुर्वेदी जी ने एक संस्मरण के अंत में जो एक वाक्य लिखा है, उसी से इस संस्मरण का अंत करने की इच्छा होती है--''मैं जानता हूं, मैं कहकर भी कुछ कह न पाया और कहने को बहुत कुछ बाकी रह गया।''

सादगी और सात्विकता के प्रतीक, एकनिष्ठभाव से अपनी आस्थाओं के प्रति समर्पित, निर्भीक और यथार्थवादी समाज के एक सच्चे हितैषी, गहरे सामाजिक सरोकारों वाले अंतर्मुखी एवं निहायत संवदेनशील और मानवीय डॉ. मोहन सिंह जी को 'विचार दृष्टि' एवं राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

संपर्क : संपादक, 'विचार दृष्टि'
'दृष्टि', विचार विहार, यू. 207,
शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

जन नेता नयनार का निधन

विचार कार्यालय तिरुवनंतपुरम्

स्वतंत्रता सेनानी, समर्पित क्रांतिकारी एवं तीन बार मुख्यमंत्री रहे मार्क्सवादी काम्यूनिस्ट पार्टी के नेता ई. के. नयनार का निधन पिछले 10 मई को हो गया। 85 वर्षीय स्व. नयनार सन् 1939 में काम्यूनिस्ट पार्टी में शामिल हुए तथा 1964 से माकपा की केंद्रीय कमेटी तथा 1992 से पोलित ब्यूरो के सदस्य थे।

वह 1974 से छह बार केरल विधानसभा के सदस्य तथा सबसे लंबे समय 11 साल तक केरल के मुख्यमंत्री रहे।

क्रांतिकारी परिवार में जन्में श्री नयनार उत्तरी मालावार में साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन के दौरान पहली बार सन् 1940 में जेल गए और कयूर एवं मोराझा किसान संघर्ष में भागीदारी के दौरान उन्हें भूमिगत होना पड़ा। क्रांतिकारी जीवन में उन्हें कुल चार साल जेलों में और 11 साल भूमिगत रहना पड़ा।

श्री नयनार के निधन से वामपंथी आंदोलन ने एक क्रांतिकारी जन नेता खो दिया। वे अपने पीछे हजारों शुभेच्छुओं सहित पत्नी शारदा तथा दो पुत्र एवं दो पुत्रियाँ छोड़ गए। 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से स्व. नयनार को भावभीनी श्रद्धांजलि।

–डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर

डॉ.मोहन सिंह का महाप्रयाण

स्वतंत्रता-संग्राम के योद्धा, कुशल चिकित्सक, निष्ठावान समाज सेवी तथा पटना मेडिकल कॉलेज के पूर्व पैथोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. मोहन सिंह का निधन पिछले 15 मई को पाटलीपुत्र के जगत नारायण रोड स्थित उनके निवास पर हो गया। उनके निधन से संपूर्ण चिकित्सा जगत के साथ-साथ बिहार के संपूर्ण समाज के सदस्य मर्माहत हैं।

प्रस्तुति : डॉ. हेमंत पटेल, पटना

राष्ट्रीय कार्यालय

राष्ट्रीय विचार मंच

दूरभाष: 011-22530652
011-22059410

'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

एक आवश्यक सूचना

राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के प्रतीक लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के आदर्शों एवं विचारों में आस्था एवं निष्ठा रखनेवाले को सूचित किया जाता है कि राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संस्था **राष्ट्रीय विचार मंच** एवं उसके मुख-पत्र **'विचार दृष्टि'** की ओर से नई दिल्ली में आगामी 31 अक्टूबर 2004 को आयोजित सरदार पटेल के 129वें जयंती-समारोह के उपलक्ष्य में उनके विचारों को जन-जन तक पहुँचाने तथा देश के लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने हेतु सरदार पटेल की गुजरात स्थित जन्मभूमि खेड़ा से एक मोटर साइकिल रैली का आयोजन किया जा रहा हैं जिसमें 31 मोटर साइकिल पर सवार मंच के 62 समर्पित कार्यकर्ता श्री प्राणेन्द्र कुमार सिंह के नेतृत्व में खेड़ा से 27 अक्टूबर 2004 को प्रारंभ कर उदयपुर, अहमदाबाद से होते हुए 31 अक्टूबर को नई दिल्ली पहुँचेगे। इस रैली के साथ-साथ एक जीप गाड़ी पर पत्रकार, छायाकार तथा मंच के कुछ पदाधिकारी भी रहेंगे।

राष्ट्रीयता के इस अनुष्ठान को सफल बनाने का दायित्व यों तो सभी देशप्रेमियों का है, फिर भी राष्ट्रीय विचार मंच की गुजरात तथा राजस्थान इकाईयों को अपनी अहम भूमिका निभानी है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विस्तार से चर्चा मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की आगामी 25 जून, 2004 को 4बजे अपराह्न नई दिल्ली के राजघाट स्थित राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय की बैठक में होगी।

प्राणेन्द्र कुमार सिंह,	डॉ. मेदनी राय	सिद्धेश्वर
संयोजक	महासचिव,	राष्ट्रीय महासचिव
मोटर साइकिल रैली	राष्ट्रीय विचार मंच नई दिल्ली	राष्ट्रीय विचार मंच
फोन: 9868079518	मो. 9810684770	फोन: 22059410, 011: 22530652

साभार-स्वीकार

पुस्तकें :

1. सफलता का सूत्र स्व प्रबंधन (हिंदी) -मुनिश्री प्रशांत कुमार, नई दिल्ली
2. सपनों का संसार-कहानी संग्रह कहानीकार-मुनिश्री प्रशांतकुमार,नई दिल्ली
3. वृद्ध विधवा और परित्यक्ता
4. पुनर्लग्न-उपन्यास लेखक : कृष्णानंद, पटना
5. अपने पराये : नाट्य संग्रह नाटककार : सतीश प्र. सिंहा, पटना
6. उपासना से ईश्वर-प्राप्ति लेखक : दिलीपकुमार सिंह, पटना
7. अमर शहीद राम गोविंद की कहानी-लोगों की जुबानी लेखक : रामकृष्ण मेहता, पटना
8. हिंदी-वृहत-काव्य लेखक : डॉ. गणेशदत्त सारस्वत
9. रोज़ एक विता : रोज एक पाठक कवि : विष्णुप्रिया, चेन्नै-600041
10. मैं उगते सूरज का साथी : काव्य संग्रह कवि : डॉ. देवेंद्र आर्य, गाजियाबाद-201011
11. Golden Jubilee Spiecial Number Governance and development.-Vol. L.1 Editor : U. C. Agrawall, IPA, New Delhi
12. श्रीरामागमन-ऐतिहासिक काव्य रचयिता : श्री रसिल लाल महतो, भागलपुर
13. एक टुकड़ा जिंदगी-हाइकु कवि : प्रदीप श्रीवास्तव,रायबरेली
14. तमिल साहित्य : एक झांकी लेखक : डॉ. एम. शेषन्, चेन्नई
15. तमिलनाडु में जैन/बौद्ध धर्म एवं तमिल साहित्य की श्रीवृद्धि में योगदान लेखक : डॉ. एम. शेषन्, चेन्नई
16. अंतर्नाद-मुक्तक काव्य संग्रह
17. भारतीय साहित्य की झलक-समीक्षा लेखक: डॉ. इंदरराज बैद, चेन्नई
18. डॉ. प्रभु नारायण विद्यार्थी: दृष्टि एवं सृष्टि लेखक: रमेश नीलकमल, जमालपुर
19. किंशुक कथा- कहानी संग्रह कथाकार: कृतनारायण प्यारा, पुर्णिया
20. Silver Lines- Poems in English writer: Sailja Mithra, Hydrabad
21. देखा सो कहा-काव्य संग्रह कवि: सुखदेव सिंह कश्यप, इंदौर
22. साम्राज्यवाद बेनक़ाब- लेखक: सोहन शर्मा, मुंबई

पत्रिकाएँ

1. उलूवी : ज्योति विशेषांक
संपादक : रविशंकर रवि
प्रकाशन : बाई लेन-1, राजगढ़ रोड, गुवाहाटी-781003
2. सारण-वाणी
संपादक : शालिग्राम शास्त्री, समता कुटी, जलालपुर, सारण-841412
3. बाल साहित्य समीक्षा, अप्रैल 2004
संपादक : डॉ. राष्ट्रबंधु नगर, कानपुर
4. अलका मागधी : अप्रैल, मई 2004
सपादक : अभिमन्यु प्र. मौर्य, पटना
5. प्रहरी : दिसबर-मार्च, 2004
संपादक : सूर्यबली चौधरी
प्रकाशन : राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) पटना-1, बिहार
6. तरुणोदय : जुलाई-सितंबर, 2004
संपादक : कैलाश बिहारी चौधरी
प्रकाशन : ग्राम+पत्रा-खगहा, मीरगंज(पूर्णिया)
7. पटेल चेतना : फरवरी-अप्रैल, 2004
संपादक : अरुणकुमार 'शिक्षक'
प्रकाशन : शंकर बुक पैलेश, पुष्कर मार्केट, जहानाबाद-804408
8. भाषा-भारती संवाद : जनवरी-मार्च, 2004
प्र. संपादक : नृपेंद्रनाथ गुप्त, पटना
9. शब्द : मई 2004
संपादक : आर. सी. यादव, लखनऊ
10. पेड़ पौधा समाचार : अंक-16
11. सेहत समाचार : अंक 2
12. श्रोता समाचार : अंक-13
संपादक : अरुणकुमार अग्रवाल, इलाहाबाद
13. मानस-चंदन : जनवरी-मार्च, 2004
प्र. संपादक : डॉ. गणेशदत्त सारस्वत
प्रकाशन : सिविल लाइंस, सीतापुर-261001
14. विवरण पत्रिका : अप्रैल, 2004
संपादक : धोण्डीराव जाधव
हिंदी प्रचार सभा, नामपल्ली स्टेशन रोड़, हैदराबाद-1
15. सेवा चेतना : विश्व गुरु भारत विशेषांक,
संपादक : डॉ. श्याम बिहारी गोस्वामी,
प्रकाशक : भाऊराव देवरास सेवा न्यास, सरस्वती कुँज, निरासान नगर,लखनऊ-226020
16. मित्र संगम पत्रिका : मई, 2004
संपादक : प्रेम वोहरा, प्रकाशन : दिल्ली-110002
17. हम सब साथ-साथ : मार्च, 2004
संपादक : शशि श्रीवास्तव दिल्ली-81
18. अहिसक समाज रचना : अप्रैल, 2004
संपादक : रामचंद्र गाँधी
19. युग साहित्य मानस
प्र. संपादक : सी. जयशंकर बाबू 18/795/एफ/8-ए, तिलकनगर, गुंतकल-515801, आ. प्र.
20. कालांतर : अप्रैल, 2004
सपादक : पुष्पेष पंत, दिल्ली
21. अणुव्रत : मई-जून 2004
संपादक : डॉ. महेंद्र कर्णावट, दिल्ली
22. साहित्य परिक्रमा : मार्च 2004
अतिथि संपादक : डॉ. उदय प्रताप सिंह,
प्रबंध संपादक : जीत सिंह 'जीत'नई दिल्ली-52
23. नागरी संगम-अंक : 101
प्र. संपादक : डॉ. परमानंद पांचाल, नई दिल्ली-2
24. हिंदी प्रचार वाणी-अंक: 12 अप्रैल, 2004
प्र संपादिका : सुश्री बी. एस. शांताबाई,बैंगलोर-18
25. भोजपुरी विश्व-अक्टूबर से मार्च, 2004
प्र. संपादक : डॉ. अनिलकुमार पांडेय, पटना-2
25. राष्ट्रभाषा-अंक: 5
प्र. संपादक : प्रा. अनंतराम त्रिपाठी,वर्धा-442003,
26. अंबेडकर मिशन पत्रिका मई, 2004
संपादक : बुद्धशरण हंस, पटना
27. केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका- अप्रैल-जून, 2004
संपादक : डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर, तिरुवनंतपुरम
28. विवरण पत्रिका-मई, 2004
संपादक : घोण्डी एवं जाधव, हैदराबाद
29.तैलिक बन्धु-मार्च, 2004
संपादक : श्री कृष्ण शाह, पटना
30. गोलकोण्डा दर्पण-जून 04
संपादक: गोविंद अक्षय, हैदराबाद
31. देव भारती-अप्रैल-जून 04
संपादक: डॉ. देवप्रकाश खन्ना, भोपाल
32. भाषा भारती संवाद: अप्रैल-जून 04
संपादक: नृपेन्द्रनाथ गुप्त, पटना
33. रैन बसेरा- मई 04
प्र. संपादक: डॉ. जयसिंह व्यथित, अहमदाबाद
34. केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध -पत्रिका-अप्रैल-जून 04
संपादक: डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर, तिरूवनंतपुरम

सिद्धेश्वर
संपादक, 'विचार दृष्टि'

त्रिमूर्ति ज्वैलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)

दूरभाष : 65765

फैक्स : 65123

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस (रूपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज,

पटना-800004

दूरभाष : 2662837

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चांदी के तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश एवं राजीव

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल प्रा.लि.

Patna Bone & Spine Hospital Pvt. Ltd.

LOCOMOTION · THE ESSENCE OF LIFE

A Centre Dedicated to Advanced Care of Bone & Spine Surgery Only

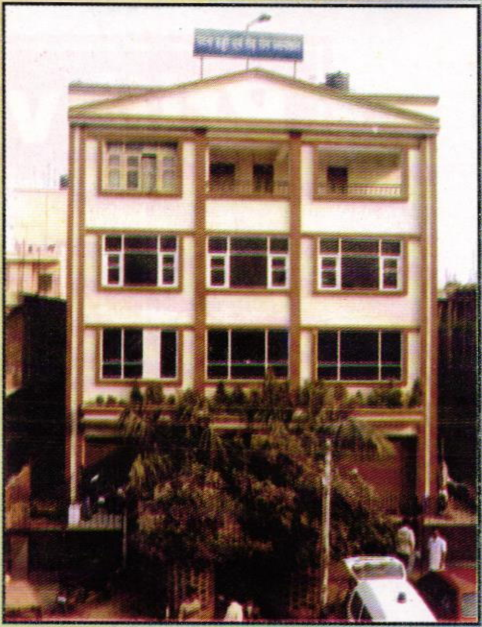

1. टूटी हड्डियों को कम्प्यूट्रीकृत एक्सरे (IIT) के द्वारा बैठाने की सुविधा।
2. हाथ/पाँव की सभी हड्डियों के टूट बिना प्लास्टर, बिना ज्यादा चीर-फाड़ के क्लोज्ड इन्टर लौकिंग नेल (Close Interlocking Nail) द्वारा इलाज, ताकि मरीज तुरन्त चल सके।
3. छोटे छिद्र द्वारा (Arthroscopic) घुटने के अन्दर की खराबियों का इलाज।
4. जन्मजात, पोलियो, चोट के बाद टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों का इलिजारोब (Ilizarov) तकनीक द्वारा इलाज।
5. रीढ़ (गर्दन समेत) की हड्डियों एवं नस का ऑपरेशन, छोटे छिद्र (Microdiscectomy) द्वारा डिस्क प्रोलैप्स का ऑपरेशन।
6. रीढ़ की चोट की सम्पूर्ण एवं विशिष्ट चिकित्सा।
7. पूर्ण जोड़ प्रत्यावर्तन (Total Joint Replacement)।
8. वास्कुलर, न्यूरो, प्लास्टिक, फेसियोमैक्जिलरी, माइक्रो सर्जरी के विशेषज्ञों द्वारा एक दल के रूप में बहुअंगीय (Polytrauma) कठिन चोटों का इलाज।
9. हृदय, न्यूरो, छाती के औषधि विशेषज्ञों की देख-रेख।

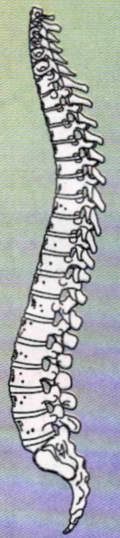

Dr. Vishvendra Kumar Sinha
M.B.B.S. (Pat.), D. orth. (Pat.) M.S. (orth.), FICS (USA) Ph.D. (orth.)

H-3, Doctors Colony, Kankarbagh, PATNA-800 020 Ph. : 2361180

एच.-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800 020. फोन : 2361180

RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

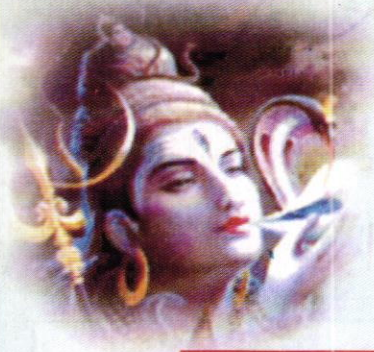

Prithviraj Jewellery

Specialist :Bangal Set, Chain & Jewellery

All Kinds of Export Manufacturing of Gold Ornaments.

Deals in Export Jewellery.

25/3870, Regharpura, Karol Bagh, New Delhi-110005
Phone : 011-25825745, 011-25713774
Mobile No. : 9811138535

Prop. : { *Raj Kumar Samanta*
Sambhu Nath Samanta

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। संपादक-सिद्धेश्वर